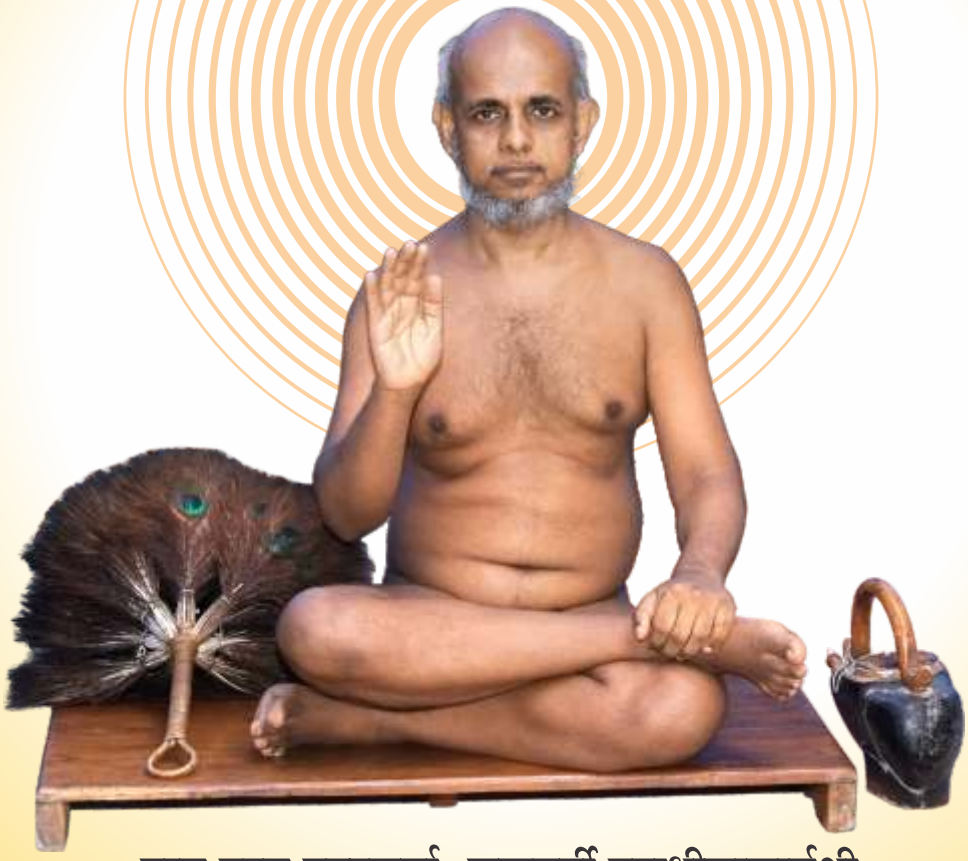

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद जिनसहस्रनाम विधान (बृहत्)

कृतिकार :
परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्तिस्थान
विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,
जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

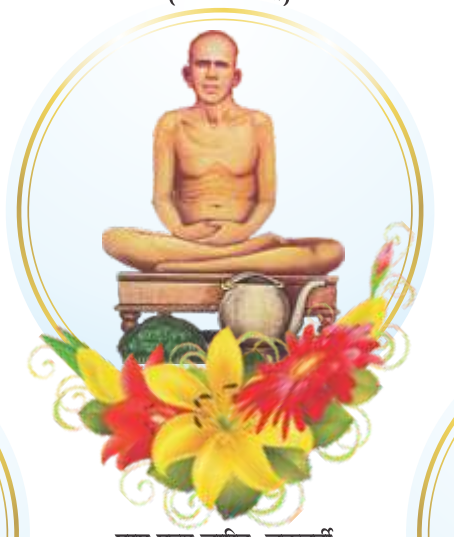

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

!!श्री वीतरागाय नमः!!

वृहद जिनसहस्रनाम विधान

:: रचयिता ::

प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति	:	**विशद वृहद जिनसहस्रनाम विधान**
कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	चतुर्थ-2019 प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज ऐलक श्री विदक्षसागर जी
सहयोगी	:	आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी महाराज क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी 9829076085, ब्र. आस्था दीदी ब्र. सपना दीदी 9829127533
कंपोजिग	:	ब्र. आरती दीदी 8700876822
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, 9413336017 2. श्री राजेशकुमार जैन अलवर 9414016566 3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879 4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन, दिल्ली मो. 09818115971, 09136248971 5. श्री. दि. जैन मंदिर रोहिणी सै-3 मो. 9810570747 6. श्री तीस चौबीसी जिनालय बड़ागाँव बागपत (उ.प्र.)
मूल्य	:	51/- रु. मात्र

:: अर्थ सौजन्य ::

मुद्रक : **पारस प्रकाशन,** दिल्ली. मो.: **9811374961, 9811363613**

ईमेल : **pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com**

अर्चन के सुमन

संसार दु:खों का समूह है। दु:खों से बचने के लिए प्राणी हमेशा प्रयत्नशील रहता है। यह प्रयत्न कभी अनुकूल तो कभी प्रतिकूल होते हैं। अनुकूल अर्थात् सम्यक् प्रयत्न ही दु:ख दूर करने में समर्थ होते हैं। दु:खों का अंतरंगकारण हमारी राग-द्वेष रूप परिणति है एवं बाह्य कारण कर्मोदय है। कर्मोदय के अनुसार अनुकूल-प्रतिकूल निमित्त मिलते रहते हैं और जीव दु:ख का वेदन करता रहता है इसलिए कवि ने लिखा है-

संसार में सुख सर्वदा काहूँ को न दीखो।
कोई तन दुखी, कोई मन दुखी, कोई धन दुखी दीखे॥

ऐसी स्थिति में लोगों को जिनधर्म से जुड़कर देव-शास्त्र-गुरु की पूजा, आराधना ही सर्वोपरि है। पुण्य संचय हो और इंसान सुखी और समृद्ध हो एवं सम्यक्त्व को प्राप्त कर परम्परा से रत्नत्रय का आराधन कर मोक्ष प्राप्त कर सके। इस हेतु चिंतन के बिखरे पुष्पों को समेटकर चित्त को चैतन्यता की ओर ले जाने के लिए ज्ञानवारिधि गुरुवर श्री विशदसागर जी महाराज ने 'विशद वृहद जिनसहस्रनाम महामण्डल विधान' के माध्यम से शब्द पुंजों को सरल भाषा में संचित किया है। क्योंकि कहते है कि-

प्रभु भक्ति से नूर खिलता है।
गमे दिल को सरूर मिलता है॥
जो आता है सच्चे मन से गुरु द्वार पर।
उसे कुछ न कुछ जरूर मिलता है॥

आचार्य श्री की तपस्तेज सम्पन्न एवं प्रसन्न मुखमुद्रा प्राय: सभी का मन मोह लेती है। आचार्य श्री के कण्ठ में साक्षात् सरस्वती का निवास है। इसे भगवान का वरदान कहें या पूर्व पुण्योदय समझ में नहीं आता। आचार्य श्री को पाकर सारी जैन समाज गौरवान्वित है। आचार्य श्री के द्वारा अब तक 185 विधानों की रचना की जा चुकी है। आचार्य श्री का गुणगान करना तो कदाचित् संभव ही नहीं है। गुरुवर के चरणों में अंतिम यही भावना है कि-

जिनका दर्शन भवि जीवों में, सत् श्रद्धान जगाता है।
उपदेशामृत जिनका जग में, सद्धर्म की राह दिखाता है॥
उन विशद सिन्धु के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम चले आपके कदमों पर, यह विशद भावना भाते हैं॥

-ब्र. आरती दीदी (संघस्थ आ. विशदसागर जी महाराज)

जिनसहस्रनाम विधान व्रत विधि

शास्त्रों में अनेक प्रकार के व्रत करने का विधान है। ''मराठी व्रत कथा संग्रह'' में सहस्रनाम व्रत करने की विधि बतलाई गई है। इस व्रत में श्री जिनेन्द्रदेव के एक हजार आठ नामों के एक हजार आठ व्रत करने को कहा है। व्रत की उत्तम विधि उपवास है, मध्यम विधि में नीरस पेय आदि लेना चाहिए और जघन्यतर विधि में एकाशन करके भी व्रत किया जाता है। इस व्रत को ''रानी चेलना'' ने श्री गौतमस्वामी से ग्रहण करके किया था ऐसा ''मराठी व्रत कथा संग्रह'' में कहा है।

व्रत के दिन जिनप्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करके श्री आदिनाथ! भगवान की एवं सहस्रनाम की पूजन करना चाहिये। पुनः प्रत्येक व्रत में क्रम से एक-एक मंत्र की पूजा व जाप्य भी कर सकते हैं। जैसे प्रथम व्रत में भगवान के सहस्रनामों में प्रथम नाम ''श्रीमान्'' है, उसकी पूजन और जाप्य इस प्रकार हैं

ॐ ह्रीं श्रीमन् जिनेंद्र। अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीमन् जिनेंद्र। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीमन् जिनेंद्र। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।
ॐ ह्रीं श्रीमते जन्मजरामत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य- जल गंधाक्षत पुष्प सुफल शुभ, दीप धूप फल लिए महान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते यहाँ विशद गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्रीमते अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य....

शांतये शांतिधारा दिव्य पुष्पांजलिः।

इस प्रकार पूजन करके इसी मंत्र का जाप्य करें।

जाप्य ॐ ह्रीं श्रीमते नमः।

समुच्चय जाप्य ॐ ह्रीं गोमुखयक्षचक्रेश्वरीयक्षी सहिताय अष्टोत्तर सहस्रनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय नमः।

द्वितीय व्रत में ॐ ह्रीं स्वयंभूजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्! इत्यादि प्रकार से आह्वानन करके

"ॐ ह्रीं स्वयंभुवे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं" इत्यादि बोलकर अष्ट द्रव्य से पूजन करके "ॐ ह्रीं स्वयंभुवे नमः" मंत्र की जाप्य करें। इसी प्रकार प्रत्येक मंत्र की पूजा में नामवाची शब्द में "जिनेन्द्र" शब्द लगाकर संबोधन विभक्ति से आह्वानन करके चतुर्थी विभक्ति लगाकर पूजन करना चाहिए जैसा कि मंत्रों में चतुर्थी विभक्ति ही है।

इस व्रत के उद्यापन में "बृहत् सहस्रनाम मंडल विधान" करके 1008 कमल पुष्पों को चढ़ाकर 1008 कलशों से जिनप्रतिमा का महा अभिषेक करना चाहिए। अपनी शक्ति के अनुसार जिनप्रतिमा, जिनमंदिर आदि का निर्माण कराकार पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आदि कराना चाहिए। यथाशक्ति मंदिर में उपकरणदान, चतुर्विध संघ को चतुर्विध दान आदि देकर धर्मप्रभावना पूर्वक उद्यापन करके व्रत पूर्ण करना चाहिए।

लघु सहस्रनाम व्रत विधि

महाराष्ट्र, राजस्थान आदि प्रांतों में व साधु संघों में सहस्रनाम व्रत में ग्यारह उपवास करने की भी परंपरा है। इसमें भी उपवास के दिन सहस्रनाम पूजा करके 1008 मंत्रों को पढ़कर समुच्चय जाप्य करना चाहिए। सहस्रनाम स्तोत्र पढ़कर एक-एक अध्याय के अंत में अर्घ्य चढ़ाने की भी परंपरा है। इस प्रकार विधिवत् पूजन करके समुच्चय जाप्य ऊपर दी गई है।

ग्यारह व्रतों में नीचे लिखी अलग-अलग जाप्य भी कर सकते हैं

1. ॐ ह्री श्रीमदादिशतानामधारकाय श्री जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं दिव्यभाषापत्यादिशतनामधारकाय श्री जिनेन्द्राय नमः।

3. ॐ ह्रीं स्थविष्ठादिशतनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं महाशोकध्वजदिशतनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री वृक्षलक्षणादिशतनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं वृहद्वृहस्पत्यादिशतनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं त्रिकलदर्श्यादिशतनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं दिग्वासादिअष्टोत्तरशतनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्रीमदादि-अष्टोत्तरसहस्रनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।

इस व्रत को भी पूर्ण होने पर ''सहस्रनाम मंडल विधान'' करके यथाशक्ति उद्यापन करना चाहिए।

इस सहस्रनाम व्रत के प्रभाव से भव्य जीव नाना सुखों को भोगकर अंत में एक हजार आठ लक्षण व नाम के धारक ऐसे जिनेंद्रदेव के पद को प्राप्त करने में समर्थ हो सकते हैं। जो इस व्रत को नहीं कर सकते वे भी यदि सहस्रनाम मंत्रों को पढ़ेंगे और पूजा करेंगे तो नियम से धन-धान्य व सुख-शांति को प्राप्त करेंगे एवं अपनी स्मरण शक्ति व सम्यग्ज्ञान को वृद्धिगंत करते हुए जीवन में चारित्र को ग्रहण कर महान् बनेंगे और परंपरा से मोक्ष प्राप्त करने के अधिकारी हो जावेंगे।

प.पू. आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज अब तक 180 पूजन विधानों की रचना कर चुके उन्हीं में से एक यह सहस्रनाम विधान भी है। अधिकाधिक संख्या में सहस्रनाम पाठ व विधान कर जीवन

गुरु गरिमा को बढ़ाना चाहिए, चरणों में शीश झुकाना चाहिए।
दुनिया में कोई हमें कुछ भी कहे, गुरु महिमा विशद गाना चाहिए॥

को सौभाग्यशाली बनाएँ। गुरुदेव के चरणों में त्रिभक्ति पूर्वक नमन!

संकलन-मुनि विशाल सागर

सहस्रनाम विधान समुच्चय पूजन

स्थापना

सहस आठ गुण पाने वाले, होते हैं अर्हत् भगवान।
सहसनाम सार्थक पाते हैं, पावन गाए महति महान॥
श्री जिनेन्द्र के चरण कमल में, करते भाव सहित गुणगान।
विशद हृदय के आसन पर हम, करते हैं जिनका आह्वान॥

दोहा- आप हमारे नाथ! हो, आप हमारे देव!।
चरण कमल में आपके, वन्दन विनत सदैव॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्रनामसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्रनामसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्रनामसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(पूजन अष्टक)

प्रासुक जल हम यहाँ चढ़ाएँगे, जन्मादिक सब रोग नशाऐंगे।
सहस्रनाम की महिमा गाएँगे, पूजन करके हम हर्षाएँगे॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सुरभित चन्दन यहाँ चढ़ाऐंगे, भवाताप अपना विनशाऐंगे।
सहस्रनाम की महिमा गाएँगे, पूजन करके हम हर्षाएँगे॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय संसार ताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत यहाँ चढ़ाते हैं, अक्षय पद के भाव बनाते हैं।
सहस्रनाम की महिमा गाएँगे, पूजन करके हम हर्षाएँगे॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ाने लाए हैं, काम रोग पाने हम आए हैं।

सहस्रनाम की महिमा गाएँगे, पूजन करके हम हर्षाएँगे॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस यहाँ नैवेद्य चढ़ाऐंगे, क्षुध रोग से मुक्ती पाऐंगे।
सहस्रनाम की महिमा गाएँगे, पूजन करके हम हर्षाएँगे॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय क्षुध रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का पावन दीप जलाते हैं, मोह महातम यहाँ नशाते हैं।
सहस्रनाम की महिमा गाएँगे, पूजन करके हम हर्षाएँगे॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में शुभ धूप जलाना है, अपने सारे कर्म नशाना है।
सहस्रनाम की महिमा गाएँगे, पूजन करके हम हर्षाएँगे॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस सुफल हम यहाँ चढ़ाऐंगे, मोक्ष महाफल हम भी पाऐंगे।
सहस्रनाम की महिमा गाएँगे, पूजन करके हम हर्षाएँगे॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य विशद हम यहाँ बना लाए, पद अनर्घ्य पाने को हम आए।
सहस्रनाम की महिमा गाएँगे, पूजन करके हम हर्षाएँगे॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भाते बारह भावना, जागे मन वैराग्य।
शांती धरा जो करें, जागेगा शुभ भाग्य॥

।।शान्तये-शान्तिधरा।।

दोहा- पुष्पांजलिं करते यहाँ, पाने शिव सोपान।

विशद भाव से आज हम, करते हैं गुणगान।।

।।दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

जयमाला

दोहा- सहसनाम जिनराज के, गाये मंगलकार।
जयमाला गाते विशद, नत हो बारम्बार।।

(ज्ञानोदय छन्द)

तीन लोक के स्वामी जिनवर, केवल ज्ञान के धारी हैं।
कर्म घातिया के नाशी जिन, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।
पूर्व भवों के पुण्योदय से, पावन नर भव पाते हैं।
उत्तम कुल वय देह सु संगति, धर्म भावना भाते हैं।।1।।

देव शास्त्र गुरु के दर्शन भी, पुण्य योग से मिलते हैं।
सम्यक् दर्शन ज्ञान आचरण, तप के उपवन खिलते हैं।।
केवल ज्ञान के धारी हों या, तीर्थंकर का समवशरण।
तीर्थंकर प्रकृति पाते हैं, भव्य जीव करके दर्शन।।2।।

सोलह कारण भव्य भावना, भव्य जीव जो भाते हैं।
पावन तीर्थंकर प्रकृति शुभ, बन्ध तभी कर पाते हैं।।
नरक गती का बन्ध ना हो तो, स्वर्गों में प्राणी जावें।
तीर्थंकर प्रकृति के फल से, भव्य जीव भव सुख पावें।।3।।

गर्भ कल्याणक में सुर आके, दिव्य रत्न बर्साते हैं।
जन्म कल्याण के अवशर पर, मेरु पे न्हवन कराते हैं।।
दीक्षा ज्ञान कल्याण मनाकर, पूजा पाठ रचाते हैं।
सहसनाम के द्वारा प्रभु पद, जय जयकार लगाते हैं।।4।।

एक हजार आठ शुभ प्रभु के, सार्थक नाम बताए हैं।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, निज सौभाग्य जगाए हैं।।
मंत्र कहा प्रत्येक नाम शुभ, उनका करते हैं जो जाप।
'विशद' भाव से ध्यानें वाले, के कट जाते सारे पाप।।5।।

दोहा- सहसनाम जिनदेव के, गाये अपरम्पार।

उनको ध्याए भाव से, पाए सौख्य अपार।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानोदय छंद)

सहस्रनाम का यह विधान जो, भव्य जीव करवाते हैं।
भक्ती के फल से वे मानव, अक्षय निधि शुभ पाते हैं।।
अनुक्रम से संयम धारण कर, 'विशद' ज्ञान प्रगटाते हैं।
यह संसार असार छोड़कर, मोक्ष महामहल को जाते हैं।।

।।इत्यादि आशीर्वादः।। पुष्पांजलि क्षिपेत्

प्रथम शतक पूजन

स्थापना

दोहा- श्री मत् आदिक त्रिजगत्, परमेश्वर शत नाम।
की पूजा करने यहाँ, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(तर्ज-माता तू दया करकेऽऽऽऽऽऽ)

जिसको अपना माना, उसने संताप दिया।
यह समझ नहीं आया, फिर भी क्यों राग किया।।
जिन नामों को ध्यायें, अपना संताप हरें।
शिव पदवी पाने को, जिनवर का जाप करें।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव में हे स्वामी!, हमने संताप सहा।
अब सहा नही जाए, प्रभु मैटो द्वेष महा।।

जिन नामों को ध्यायें, अपना संताप हरें।
शिव पदवी पाने को, जिनवर का जाप करें।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्य: संसार ताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन धन परिजन जो हैं, सब नश्वर है माया।
जिस तन में रहते हैं, वह क्षण भंगुर काया।।
जिन नामों को ध्यायें, अपना संताप हरें।
शिव पदवी पाने को, जिनवर का जाप करें।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्य: अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह काम लुटेरा है, शास्वत गुण लूट रहा।
हम मौन खड़े निर्बल, ना हमसे छूट रहा।।।।
जिन नामों को ध्यायें, अपना संताप हरें।
शिव पदवी पाने को, जिनवर का जाप करें।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्य: कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इस क्षुधा रोग से हम, सदियों से सताए हैं।
व्यंजन की औषधि खा, ना तृप्ती पाए हैं।।
जिन नामों को ध्यायें, अपना संताप हरें।
शिव पदवी पाने को, जिनवर का जाप करें।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री मदादिशतनाममंत्रेभ्य: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पर में खोए हैं, पर की महिमा गाई।
इस मोहबली ने प्रभु, निज की सुधि विसराई।।
जिन नामों को ध्यायें, अपना संताप हरें।
शिव पदवी पाने को, जिनवर का जाप करें।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्य: मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की आंधी से, चेतन ग्रह विखर गया।
तव दर्शन करके प्रभु, मम चेतन निखर गया।।
जिन नामों को ध्यायें, अपना संताप हरें।
शिव पदवी पाने को, जिनवर का जाप करें।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्य: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पाप बीज बोए, शिव फल कैसे पाएँ।
तव अर्चा करके हम, प्रभु सिद्धालय जाएँ।।
जिन नामों को ध्यायें, अपना संताप हरें।
शिव पदवी पाने को, जिनवर का जाप करें।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्य: मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु कर्मों ने मिलकर, जग में भरमाया है।
अब शिव पद पाने को, यह अर्घ्य चढ़ाया है।।
जिन नामों को ध्यायें, अपना संताप हरें।
शिव पदवी पाने को, जिनवर का जाप करें।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्य: अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पूर्व पुण्य से हे प्रभो!, पाए आपके दर्श।
शांती धारा दे रहे, जागे मम उर हर्ष।।
।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा- पूजा करते आपकी, होके भाव विभोर।
यही भावना है विशद, बढ़ें मोक्ष की ओर।।
।।पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा- सहस्रनाम के हम यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।

विशद यही भावना है, पाएँ सुपद अनर्घ्य॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सखी छन्द

प्रभु जी 'श्री मान' कहाए, जो उभय लक्ष्मी पाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'स्वयंभू' गाए, जो केवल ज्ञान जगाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं स्वयंभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'वृषभ' धर्म के धारी, हैं जग जन के उपकारी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सम्भव' समभाव जगाते, इस जग में पूजे जाते।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं शंभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'शम्भू' आनन्दकारी, हैं जग में मंगलकारी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं शंभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'आत्म भू' स्वामी, जिन तीर्थंकर जगनामी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं आत्मभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'स्वयंप्रभ' जानो, हैं स्वयं बुद्ध यह मानो।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'प्रभव' कहे जगनामी, जो हैं मुक्ती पथगामी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं प्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'भोक्ता' कहलाए, जो अनन्त चतुष्टय प ा ए ।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं भोक्त्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'विश्व भू' गाए, त्रेलोक्य दर्शि कहलाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥10॥

ॐ ह्रीं विश्वभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'अपुनर्भव' कहलाए, भव भ्रमण पूर्ण विनशाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥11॥

ॐ ह्रीं अपुनर्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वात्म' हैं प्रभू निराले, जो शुद्ध चेतना वाले।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥12॥

ॐ ह्रीं विश्वात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'विश्व लोकेश' कहाए, जो विश्व पूज्यता पाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥13॥

ॐ ह्रीं विश्वलोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'विश्वतश्चक्षु' गाए, प्रभु सर्व दर्शि कहलाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥14॥

ॐ ह्रीं विश्वतश्चक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अक्षर' प्रभु नाम के धारी, इस जग के करुणाकारी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥15॥

ॐ ह्रीं अक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कहे 'विश्व विद' भाई, जिनकी फैली प्रभुताई।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥16॥

ॐ ह्रीं विश्वविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्व विद्येश' कहलाए, जिन विश्व विद्या शुभ पाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।17।।

ॐ ह्रीं विश्वविद्येशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्व योनि' कहाए स्वामी, प्रभु जी त्रिभुवन पतिनामी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।18।।

ॐ ह्रीं विश्वयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नश्वर देह नशाए, फिर आप 'अनश्वर' गाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।19।।

ॐ ह्रीं अनश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्व दृश्वा' हे शिवगामी!, हम करते चरण नमामी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।20।।

ॐ ह्रीं विश्वदृश्वने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'विभू' कहे मनहारी, जन-जन के करुणाकारी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।21।।

ॐ ह्रीं विभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाते हैं प्रभु 'धाता', इस जग के भाग्य विधाता।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।22।।

ॐ ह्रीं धत्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वेश' नाम प्रभु पाए, त्रिभुवन के ज्ञाता गाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।23।।

ॐ ह्रीं विश्वेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्व लोचन' आप कहाए, त्रयलोक दर्शिता पाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।24।।

ॐ ह्रीं विश्वलोचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्व व्यापी' गुणधारी, इस जग के करुणाकारी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।25।।

ॐ ह्रीं विश्वव्यापिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विधु' कहे आप शिवगामी!, ज्ञाता दृष्टा जगनामी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।26।।

ॐ ह्रीं विध्वे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेधा' जिनराज निराले, जग मंगल करने वाले।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।27।।

ॐ ह्रीं वेध्से नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शास्वत' शुभ नाम बताया, शास्वत पद प्रभु ने पाया।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।28।।

ॐ ह्रीं शाश्वताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्तोमुख' आप कहाए, प्रभु विशद ज्ञान प्रकटाए।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।29।।

ॐ ह्रीं विश्वतोमुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वकर्मा' हे जिन स्वामी!, तव करते चरण नमामी।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।30।।

ॐ ह्रीं विश्वकर्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जग ज्येष्ठ' आप कहलाए, इस जग का वैभव पाए।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।31।।

ॐ ह्रीं जगज्जेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विश्व मूर्ति'! जगनामी, तुम बने मोक्ष पथ गामी।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।32।।

ॐ ह्रीं विश्वमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ नाम 'जिनेश्वर' पाए, जित् इन्द्रिय आप कहाए।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।33।।

ॐ ह्रीं जिनेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्व दृग' दर्शन के धारी, जन-जन के करुणाकारी।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।34।।

ॐ ह्रीं विश्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विश्व भूतेश'! निराले, तम जग का हरने वाले।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥35॥

ॐ ह्रीं विश्वभूतेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विश्व ज्योति'! शिवकारी, तुम हो महिमा के धारी।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥36॥

ॐ ह्रीं विश्वज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम 'अनीश्वर' पाए, शुभ केवल ज्ञान जगाए।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥37॥

ॐ ह्रीं अनीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जिन' नाम आपका गाया, तुमने शिव पद को पाया।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥38॥

ॐ ह्रीं जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जिष्णू' कर्मारी जेता, तुम हो प्रभु कर्म विजेता।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥39॥

ॐ ह्रीं जिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमेयात्म' आप कहलाए, हम अर्चा करने आए।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥40॥

ॐ ह्रीं अमेयात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वरीश' नाम के धारी, तुम से जग माया हारी।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥41॥

ॐ ह्रीं विश्वरीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगती पति' आप कहाए, प्रभु जगत पूज्यता पाए।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥42॥

ॐ ह्रीं जगत्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'अनन्त जित्' स्वामी, हम करते चरण नमामी।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥43॥

ॐ ह्रीं अनंतजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचिन्तयात्म' कहे जगनामी, प्रभु बने मोक्ष के स्वामी।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥44॥

ॐ ह्रीं अचिन्त्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'भव्य बन्धु'! शिवदायी, तुम पाए जग प्रभुताई।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥45॥

ॐ ह्रीं भव्यबंध्वे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'अबन्धन' भाई, तुम कर्म की शक्ति नसाई।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥46॥

ॐ ह्रीं अबंध्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज हैं 'पुरुष युगादी', तुम नाशे मिथ्या वादी।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥47॥

ॐ ह्रीं युगादिपुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'आदिब्रह्म' कहलाए, निज ब्रह्म का ज्ञान कराए।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥48॥

ॐ ह्रीं आदि ब्रह्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'पञ्च ब्रह्ममय' गाए, पञ्चम गति धाम बनाए।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥49॥

ॐ ह्रीं पंचब्रह्ममयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शिव'! शिवपदवी धारी, प्रभु हुए आप अविकारी।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥50॥

ॐ ह्रीं शिवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुखमा छन्द)

नाम आपका 'पर' शुभकारी, आप रहे करुणा के धारी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥51॥

ॐ ह्रीं पराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परतर' प्रभू आप कहलाते, जग जीवों से पूजे जाते।
महिमा गाई जग से न्यारी!, सर्व जगत में मंगलकारी।।52।।

ॐ ह्रीं परतराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूक्ष्म' आप कहलाए स्वामी, बने आप मुक्ती पथ गामी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।53।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमेष्ठी' शुभ आप कहाए, श्रेष्ठ परम पदवी को पाए।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।54।।

ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'सनातन' हे शिवकारी!, हे शाश्वत पदवी के धारी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।55।।

ॐ ह्रीं सनातनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयं ज्योति' कहलाने वाले, रहे लोक में आप निराले।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।56।।

ॐ ह्रीं स्वयंज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम आपका 'अज' भी आता, उत्पत्ती ना प्राणी पाता।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।57।।

ॐ ह्रीं अजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'अजन्मा' आप कहाते, जन्म कभी ना फिर से पाते।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।58।।

ॐ ह्रीं अजन्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्म योनि' कहलाए स्वामी, चरणों करते विशद नमामी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।59।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'अयोनिज' हे शिवकारी!, तुम हो जग में शिव पद धारी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।60।।

ॐ ह्रीं अयोनिजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम आपका है 'मोहारी', बने मोक्ष के तुम अधिकारी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।61।।

ॐ ह्रीं मोहारिविजयिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह मल्ल 'जेता' कहलाए, शरणागत बन मोही आए।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।62।।

ॐ ह्रीं जेत्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु हैं 'धर्म चक्र' के धारी, महिमा जिनकी जग से न्यारी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।63।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'दया ध्वज' श्री जिन स्वामी, जिनकी महिमा जग से नामी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।64।।

ॐ ह्रीं दयाध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशान्तारी' तुमको सब कहते, चरण शरण में प्राणी रहते।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।65।।

ॐ ह्रीं प्रशांतारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनन्तात्मा' आतम ज्ञानी, तव वाणी जग की कल्याणी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।66।।

ॐ ह्रीं अनन्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगी' आप योग के धारी, पाए जग में प्रभुता भारी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।67।।

ॐ ह्रीं योगिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगीस्वरार्चित' आप कहाए, तव महिमा योगीश्वर गाए।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।68।।

ॐ ह्रीं योगीश्वरार्चिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'ब्रह्मविद' तुम कहलाए, ब्रह्म स्वरूपी आतम ध्याये।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।69।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्म तत्त्वज्ञ' नाम के धारी, जगती पति हे करुणाकारी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।70।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मतत्त्वज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मोद्याविद' ब्रह्म जगाए, ब्रह्म लोक में धाम बनाए।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।71।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मोद्याविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'यतीश्वर' हो जगनामी, बने आप मुक्ती पथगामी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।72।।

ॐ ह्रीं यतीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी आप 'शुद्ध' कहलाते, दोष आपको छू ना पाते।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।73।।

ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बुद्ध' कहे बोधी के दाता, जग जीवों के भाग्य विधाता।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।74।।

ॐ ह्रीं बुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रबुद्धात्मा' आप कहाए, तव पूजा करने हम आए।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।75।।

ॐ ह्रीं प्रबुद्धात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सिद्धार्थ'! नाम के धारी, तव महिमा है विस्मकारी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।76।।

ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्ध शासन' हे नाथ! निराले, निज पर शासन करने वाले
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।77।।

ॐ ह्रीं सिद्धशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्ध' कहाते हो तुम स्वामी, चरणों करते सभी नमामी।

महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।78।।

ॐ ह्रीं सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्धान्त विद' हे शिवपुरवासी!, तुम हो अष्ट कर्म के नाशी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।79।।

ॐ ह्रीं सिद्धांतविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ध्येय' आपने श्रेष्ठ बनाया, शीघ्र आपने उसको पाया।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।80।।

ॐ ह्रीं ध्येयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

'सिद्धसाध्य' कर लिए हैं सारे, कोई शेष न रहे तुम्हारे।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।81।।

ॐ ह्रीं सिद्धसाध्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'जगद्धित' तमु कहलाए, जग का हित करने को आए।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।82।।

ॐ ह्रीं जगद्धिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'सहिष्णु' आप कहाए, उत्तम क्षमा धर्म को पाए।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।83।।

ॐ ह्रीं सहिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अच्युत' हो तुम च्युत न होते, निज स्वभाव को कभी न खोते।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।84।।

ॐ ह्रीं अच्युताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'अनन्त' कहलाए स्वामी, गुण अनन्त पाए प्रभु नामी।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।85।।

ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रभविष्णू' की प्रभा निराली, तुम सम न कोइ शक्तीशाली।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।86।।

ॐ ह्रीं प्रभविष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'भवोदभव' आप कहाए, अन्तिम भव प्रभु जी तुम प ा ए ।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।87।।

ॐ ह्रीं भवोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'प्रभुष्णू' कहते भाई, तुमने सारी विद्या पाई।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।88।।

ॐ ह्रीं प्रभूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अजर' तुम्हें न जरा सताए, कोई रोग पास न आए।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।89।।

ॐ ह्रीं अजराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अजर्य' शुभ नाम को पाए, तुमरे गुण इस जग ने गाए।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।90।।

ॐ ह्रीं अजर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भ्राजिष्णू' सब तुमको कहते, तव भक्ति में ही रत रहते।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।91।।

ॐ ह्रीं भ्राजिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धीश्वर' हो प्रभु केवल ज्ञानी, वीतरागता के विज्ञानी।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।92।।

ॐ ह्रीं धीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अव्यय' व्यय न होंय तुम्हारे, गुण तुमने जो पाए सारे।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।93।।

ॐ ह्रीं अव्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विभावसु' तुम हो भय हारी, महिमा रही जगत् से न्यारी
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।94।।

ॐ ह्रीं विभावसवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'असंभूष्णू' प्रभु तुम कहलाए, जन्म-जरा से मुक्ती पाए।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।95।।

ॐ ह्रीं असम्भूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयंभूष्णू' नाम तुम्हारा, स्वयं सिद्ध हो जग को तारा।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।96।।

ॐ ह्रीं स्वयंभूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमको नाथ! 'पुरातन' कहते, तुम प्राचीन सदा ही रहते।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।97।।

ॐ ह्रीं पुरातनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमात्मा' अतिशय के धारी, भक्त बनी यह दुनियाँ सारी।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।98।।

ॐ ह्रीं परमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परम् ज्योति' ज्योतिर्मय ज्ञानी, सर्व दृष्टि तुमने पहिचानी।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।99।।

ॐ ह्रीं परंज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक की प्रभुता पाए, 'त्रिजगत्परमेश्वर' कहलाए।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।100।।

ॐ ह्रीं त्रिजगत्परमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूणार्घ्य

श्रीमान् आदिक नाम के धारी, कहलाते हैं जिन तीर्थेश।
भव्य जीव पाते हैं जिनसे, मोक्ष प्रदायक शुभ उपदेश।।
सौ नामों के द्वारा श्री जिन, का यह किया विशद गुणगान।
अन्तिम यही भावना भाते, पाएँ हम भी पद निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनामावलिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- सहस्रनाम का जाप कर, कटे कर्म का जाल।

श्री मदादि शत नाम की, गाते हैं जयमाल॥

चौपाई

जयवन्तों तीर्थेश निराले, भव दुख को प्रभु हरने वाले।
पहले सद् श्रद्धान जगाते, पंच महाव्रत फिर अपनाते॥1।
होते पंच समिति के धारी, मुनि होते इन्द्रिय जयकारी।
षट् आवश्यक पालन करते, शेष सप्त गुण भी आचरते॥2॥
होते मुनि रत्नत्रय धारी, विषयाशा त्यागी अनगारी।
निज आतम का ध्यान लगाते, अतिशय कर्म निर्जरा पाते॥3॥
कर्म घातिया आप नशाते, पावन केवल ज्ञान जगाते।
छियालिस मूल गुणों के धारी, अर्हत् होते जग उपकारी॥4॥
दिव्य देशना आप सुनाते, सारे जग में पूजे जाते।
शुक्ल ध्यान कर कर्म नशाते, मोक्ष महल में धाम बनाते॥5॥
भव्य जीव जो अर्चा करते, उनके संकट क्षण में हरते।
नाथ! आप हो जग हितकारी, भविजन के पावन सुखकारी॥6॥

दोहा- अर्चा करते आपकी, विशद भाव के साथ।
मोक्ष मार्ग में बढ़ सकें, झुका रहे पद माथ॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(ज्ञानोदय छंद)

सहस्रनाम का यह विधान, जो भव्य जीव करवाते हैं।
भक्ती के फल से वे मानव, अक्षय निधि शुभ पाते हैं॥
अनुक्रम से संयम धारण कर, 'विशद' ज्ञान प्रगटाते हैं।
यह संसार असार छोड़कर, मोक्ष महामहल को जाते हैं॥

॥इत्यादि आशीर्वादः॥ पुष्पांजलि क्षिपेत्

द्वितिय शतक पूजन

स्थापना

दिव्य भाषापति आदि, सौ का करने गुणगान।

विशद हृदय में आज हम, करते हैं आह्वान।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रसमूह!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रसमूह!अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

तर्ज-सोलहकारण पूजन.....

श्रद्धा से जल चरण चढ़ाय, त्रय धारा देकर हर्षाय।
श्री जिन नाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम॥
जिनवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन नाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सांसारिक सुख प्राणी पाय, जिन भक्ती शिव सुख दिलवाय।
श्री जिन नाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम॥
जिनवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन नाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम॥2।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः संसार ताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत श्री जिन चरण चढ़ाय, वह अक्षय पदवी को पाय।
श्री जिन नाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम॥
जिनवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन नाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम॥3॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विषय वासना है दुखदाय, काम नशाने पुष्प चढ़ाय।

श्री जिन नाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।
जिनवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन नाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्य: कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के सारे भोजन खाय , फिर भी तृप्त नहीं हो पाय।
श्री जिन नाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।
जिनवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन नाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्य: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी शुभ दीप जलाय, मिथ्यातम को पूर्ण नशाय।
श्री जिन नाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।
जिनवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन नाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्य: मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध धूप जिन चरण चढ़ाय, अष्ट कर्म प्राणी विनशाय।
श्री जिन नाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।
जिनवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन नाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्य: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ा रहे फल मुक्ति प्रदाय, कर्म फलों की शक्ति नशाय।
श्री जिन नाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।
जिनवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन नाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्य: मोक्षफल प्राप्तये

फलं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की नौका पाय, पद अनर्घ्य प्राणी प्रगटाय।
श्री जिन नाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।
जिनवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन नाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्य: अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- दर्पण सम प्रभु ज्ञान में, झलके लोकालोक।
शांती धारा दे रहे, मिटे रोग या शोक।।
।।शान्तये शांति धारा।।

दोहा- गुणानन्त पर्याय को, जाने श्री भगवान।
पुष्पांजलि करते, चरण पाने शिव सोपान।।
।।पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा- हम द्वितिय शतनाम के, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
विशद भावना है यहीं, पायें सुपद अनर्घ्य।
।। द्वितिय कोष्ठोपरि ।।पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

पद्धरि छन्द

है 'दिव्य भाषापति' श्रेष्ठ नाम, तव चरणों करता जग प्रणाम।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तव चरण झुकाते विशद शीश।।101।।

ॐ ह्रीं दिव्यभाषापतये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय 'दिव्य' नाम धारी जिनेश, तव पद झुकाते सुर नर विशेष।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश।।102।।

ॐ ह्रीं दिव्याय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'पूतवाक्' जग में महान, शिव पद के धारी हो प्रधान।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश।।103।।

ॐ ह्रीं पूतवाचे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पूत शासन'! तुम जगत वंद्य, ना रहा आपके कोई द्वन्द।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥104॥
ॐ ह्रीं पूतशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूतात्म' आपका श्रेष्ठ नाम, तव चरणों करते हम प्रणाम।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥105॥
ॐ ह्रीं पूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'परम ज्योति' जग में प्रधान, हम पूज रहे तव चरण आन।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद
श ा ी श ा । । 1 0 6 । ।
ॐ ह्रीं परमज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो नाथ! आप 'धर्माध्यक्ष', शत् ज्ञान प्रदायी आप दक्ष।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥107॥
ॐ ह्रीं धर्माध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'दमीश्वर' कहे आप, ना रहे आपके कोई पाप।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥108॥
ॐ ह्रीं दमीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्री पति' हो जग के आप ईश, तव चरण झुकाएँ जीव शीश।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥109॥
ॐ ह्रीं श्रीपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भगवान' कहाते आप नाथ!, हम विनती करते जोड़ हाथ।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥110॥
ॐ ह्रीं भगवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अर्हत्' तुमको सब कहें संत, तव गुण का हे प्रभु! नहीं अंत।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥111॥
ॐ ह्रीं अर्हते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मम् अर्ज सुनों हे 'अरज'! आप, मम कट जाएँ सब लगे पाप।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥112॥

ॐ ह्रीं अरजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विरज'! आप हो कर्म हीन, तव गुण में हम भी रहें लीन।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥113॥
ॐ ह्रीं विरजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुचि' हे शुचिता! तुम लिए धार, हो गये प्रभू तुम निर्विकार।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥114॥
ॐ ह्रीं शुचये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'तीर्थकृत' हो महान, तव करें हृदय में विशद ध्यान।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥115॥
ॐ ह्रीं तीर्थकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'केवल'! तुम हो जगत पूज, तुम सम ना कोई और दूज।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥116॥
ॐ ह्रीं केवलिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ईशान' आप हो निराकार, तुम रहते जग में निराधार।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥117॥
ॐ ह्रीं ईशानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूजार्ह' आप हो जग महान, हम करें आपका गुणोगान।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥118॥
ॐ ह्रीं पूजार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्नातक' तुम हो जग ऋशीष, तव चरण झुकाते विशद शीश।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥119॥
ॐ ह्रीं स्नातकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अमल'! आप भय से विहीन, तुम रहते हो निज ज्ञान लीन।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥120॥
ॐ ह्रीं अमलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'अनन्त दीप्त' की अलग शान, जो पूज्य रहे जग में महान।

तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥121॥
ॐ ह्रीं अनंतदीप्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानात्म' आप हो ज्ञान वान, हे नाथ! हमें दो ज्ञान दान।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥122॥
ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'स्वयं बुद्ध'! पावन ऋशीष, तव चरण झुकाएँ भक्त शीश।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥123॥
ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रजापति' जग में प्रधान, तुम हो इस जग में गुण निधान।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥124॥
ॐ ह्रीं प्रजापतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए हे प्रभु! आप 'मुक्त', तुम गुणानन्त से रहे युक्त।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥125॥
ॐ ह्रीं मुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है नाम आपका प्रभू 'शक्त', हम बनें आपके प्रभू भक्त।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥126॥
ॐ ह्रीं शक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए प्रभु जी 'निराबाध', तुमको करते सब प्रभू याद।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥127॥
ॐ ह्रीं निराबाधय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्कल' है प्रभु का श्रेष्ठ नाम, सब करते है तव पद प्रणाम।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥128॥
ॐ ह्रीं निष्कलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भुवनेश्वर' हे पावन ऋशीष!, तव चरण झुकाएँ भक्त शीश।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥129॥
ॐ ह्रीं भुवनेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कहे 'निरंजन' कर्महीन, हो गये कर्म सारे विलीन।

तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥130॥
ॐ ह्रीं निरंजनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'जगज्ज्योति'! जिनवर महान, हम भक्ती करते शरण आन।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥131॥
ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''निरुत्तोक्ति'' हो प्रभु निराकार, चरणों में वन्दन बार-बार।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥132॥
ॐ ह्रीं निरुक्तोक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कहे 'निरामय' रोग हीन, निज गुण में प्रभु हो गये लीन।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥133॥
ॐ ह्रीं निरामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचल स्थिति' कहलाए महीश, तव पद में झुकते जगत ईश।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥134॥
ॐ ह्रीं अचलस्थितये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अक्षोभ्य' आपका श्रेष्ठ नाम, शिवपुर में पाया श्रेष्ठ धाम।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥135॥
ॐ ह्रीं अक्षोभ्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कूटस्थ' कहाए तुम ऋशीष, हम झुका रहे तव चरण शीश।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥136॥
ॐ ह्रीं कूटस्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थाणू' शुभ स्थान पाय, तुम विशद ज्ञान लीन्हे जगाय।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥137॥
ॐ ह्रीं स्थाणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अक्षय' क्षय से रहित आप, तव करते हैं सब नाम जाप।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥138॥
ॐ ह्रीं अक्षयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'अग्रणी' सर्व अग्र, तीनों लोकों में हो समग्र।

तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥139॥
ॐ ह्रीं अग्रण्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कहे 'ग्रामिणी' जग प्रधान, तीनों लोकों में हो महान।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥140॥
ॐ ह्रीं ग्रामण्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द सार)

बने 'नेता' प्रभु जी अविकार, दिखाया जग को मुक्ती द्वार।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥141॥
ॐ ह्रीं श्री नेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणेता' हो आगम के नाथ!, झुका तव चरणों मेरा माथ।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥142॥
ॐ ह्रीं श्री प्रणेत्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए 'न्यायाशास्त्रवित्' आप, करें हम नाम मंत्र का जाप।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥143॥
ॐ ह्रीं श्री न्यायशास्त्राविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू का नाम 'शास्ता' जान, दिए जग को उपदेश महान।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥144॥
ॐ ह्रीं श्री शास्त्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए 'धर्मपती' भगवान, प्रभु हैं श्रेष्ठ धर्म की खान।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥145॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिए जो 'धर्म' का शुभ उपदेश, नाम पाए प्रभु धर्म विशेष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥146॥
ॐ ह्रीं श्री धर्म्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'धर्मात्मा' हो तुम एक, विधर्मी प्राणी कई अनेक।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥147॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे हैं 'धर्मतीर्थकृत' देव!, किए जो धर्म प्रवर्तन एव।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥148॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाते हैं 'वृषध्वज' जिनराज, लगाए प्रभू धर्म का ताज।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥149॥
ॐ ह्रीं श्री वृषध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू कहलाते हैं 'वृषाधीश', धर्म के धारी श्रेष्ठ ऋशीष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥150॥
ॐ ह्रीं श्री वृषाधीश नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन्हें 'वृषकेतू' कहते लोग, धर्म ध्वज का पाते संयोग।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥151॥
ॐ ह्रीं श्री वृषकेतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वृषायुध' कहलाते जिन आप, नाश करते हो सारे पाप।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥152॥
ॐ ह्रीं श्री वृषायुधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू ने 'वृष' पाया शुभ नाम, धर्म के धारी तुम्हें प्रणाम।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥153॥
ॐ ह्रीं श्री वृषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! तुम 'वृषपति' श्रेष्ठ महान, धर्मधारी तुम रहे प्रधान।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥154॥
ॐ ह्रीं श्री वृषपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'भर्त्ता' हो जग के नाथ!, भव्य जीवों का देते साथ।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥155॥
ॐ ह्रीं श्री भर्त्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए हैं 'वृषभांक' जिनेश, बैल है जिनका चिह्न विशेष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥156॥
ॐ ह्रीं श्री वृषभांकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाये 'वृषभोद्भव' जिनदेव, प्रवर्तन करते आप सदैव।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥157॥

ॐ ह्रीं श्री वृषोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हिरण्यनाभि' कहलाते हो नाथ!, रत्न वृष्टी हो गर्भ के साथ।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥158॥

ॐ ह्रीं श्री हिरण्यनाभये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए हैं 'भूतात्म' जिनेश, आत्म का कीन्हे ध्यान विशेष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥159॥

ॐ ह्रीं श्री भूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर हैं 'भूभृत' अविकार, करें सारे जग का उद्धार।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥160॥

ॐ ह्रीं श्री भूभृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

प्रभु 'भूत भावन' कहलाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥161॥

ॐ ह्रीं भूतभावनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रभव' मोक्ष के दाता, जग जन के भाग्य विधाता।
जन-जन के करूणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥162॥

ॐ ह्रीं प्रभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विभव' मोक्ष के धारी, इस जग में मंगलकारी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥163॥

ॐ ह्रीं विभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भास्वान' प्रभू जगनामी, तव चरणों मम प्रणमामी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥164॥

ॐ ह्रीं भास्वते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'भव' संज्ञा को पाए, भव सारे प्रभू नसाए।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥165॥

ॐ ह्रीं भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'भाव' ज्ञान स्वरूपी, तुम हो चेतन चिद्रूपी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥166॥

ॐ ह्रीं भावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'भवान्तक' गाए, भव से प्रभु मुक्ती पाए।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥167॥

ॐ ह्रीं भवान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'हिरण्य गर्भ' कहलाए, ये जीवन सफल बनाए।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥168॥

ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्री गर्भ' नाम के धारी, तुम हो पावन त्रिपुरारी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥169॥

ॐ ह्रीं श्रीगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'प्रभूत विभव' कहलाए, त्रिभुवन का वैभव पाए।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥170॥

ॐ ह्रीं प्रभूतविभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अभव'! मोक्ष पथ गामी, तुम हो त्रिभुवन के स्वामी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥171॥

ॐ ह्रीं अभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम 'स्वयं प्रभु' पाए, अतएव स्वयं भू गाए।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥172॥

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रभूतात्म'! अविकारी, तुम हो अतिशय के धारी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥173॥

ॐ ह्रीं प्रभूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'भूत नाथ!'! जगनामी, हे मुक्ती पथ के गामी।

जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥174॥

ॐ ह्रीं भूतनाथ!ाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'जगत प्रभू'! सुखरासी, प्रभु सिद्ध शिला के वासी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥175॥

ॐ ह्रीं जगत्प्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वादि' आप कहलाए, सब लोकालोक दिखाए।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥176॥

ॐ ह्रीं सर्वादये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'सर्वदृक्' स्वामी, तुम सिद्ध श्री के स्वामी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥177॥

ॐ ह्रीं सर्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सार्व'! सर्व के ज्ञाता, जग को सन्मार्ग प्रदाता।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥178॥

ॐ ह्रीं सार्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वज्ञ' आपकी वाणी, है जग जन की कल्याणी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥179॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सर्व दर्शन' कहलाए, त्रय लोक आप दर्शाए।
जन-जन के करूणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥180॥

ॐ ह्रीं सर्वदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वात्म' जगत हितकारी, सब झलके सृष्टी सारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥181॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सर्वलोकेश' कहाए, सबका हित करने आए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥182॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व लोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सर्वविद्' गाये, क्षण में सब कुछ दर्शाए।

तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥183॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सर्वलोकजित' स्वामी!, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥184॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वलोकजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुगति' आपने पाई, जो सिद्ध सुगति कहलाई।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥185॥

ॐ ह्रीं श्री सुगतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सुश्रुत' प्रभु कहलाए, सुश्रुत की गंग बहाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥186॥

ॐ ह्रीं श्री सुश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुश्रुत्' हो सुनने वाले, ज्ञानी जग के रखवाले।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥187॥

ॐ ह्रीं श्री सुश्रुते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु हैं 'सुवाक्' के धारी, हैं वचन श्रेष्ठ गुणकारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥188॥

ॐ ह्रीं श्री सुवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जगत गुरु हे 'सूरि'!, तुम विद्या पाए पूरी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥189॥

ॐ ह्रीं श्री सूरये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बहुश्रुत' सब श्रुत के ज्ञाता, प्रभु तीन लोक विख्याता।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥190॥

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्रुत' त्रिभुवन के ज्ञानी, आगम है तव श्रुत वाणी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥191॥

ॐ ह्रीं श्री विश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वतः पाद' जिन गाये, प्रभु लोक पूज्यता पाए।

तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।192।।

ॐ ह्रीं श्री विश्वत पादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वशीर्ष' कहलाए, शिवपुर में धाम बनाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।193।।

ॐ ह्रीं श्री विश्वशीर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'शुचिश्रवा' हो स्वामी, हो ज्ञानी अन्तर्यामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।194।।

ॐ ह्रीं श्री शुचिश्रवसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'सहस्रशीर्ष' शुभ गाये, प्रभु सुख अनन्त उपजाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।195।।

ॐ ह्रीं श्री सहस्त्राशीर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेत्राज्ञ' तुम्हें कहते हैं, प्रभु सर्व क्षेत्र रहते हैं।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।196।।

ॐ ह्रीं श्री क्षेत्राज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सहस्राक्ष' कहलाए, जो सब पदार्थ दर्शाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।197।।

ॐ ह्रीं श्री सहस्राक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'सहस्रपात' जिन स्वामी, हो वीर बली जग नामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।198।।

ॐ ह्रीं श्री सहस्रपदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'भूतभव्यभवद्भर्त्ता', त्रैकालिक सुख के कर्त्ता।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।199।।

ॐ ह्रीं श्री भूतभव्यभवद्भर्त्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विश्वविद्यामहेश्वर', तुम हो इस जग के ईश्वर।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।200।।

ॐ ह्रीं श्री विश्वविद्यामहेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

नाथ! दिव्य भाषा पति आदिक, सौ नामों से पूज्य
जिनेश।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करते, सुर नरेन्द्र नर आदि विशेष।।
सौ नामों के द्वारा श्री जिन, का यह किया विशद गुणगान।
अन्तिम यही भावना भाते, पाएँ हम भी पद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं दिव्यभाषापत्यादिशतनामेभ्यः नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- जिनकी अर्चा कर सभी, कट जाते हैं पाप।
दिव्यादिक शत नाम का, करें स्मरण जाप।।

(ज्ञानोदय छन्द)

मंगलमय जिनराज हमारे, जिनकी भक्ती मंगल है।
मंगल नाथ! स्वयंभू गाए, हारी सर्व अमंगल है।।
मंगलमय है कीर्ति आपकी, नाम आपका मंगल है।
मंगलमय विश्वेश आप हैं, धाम आपका मंगल है।।1।।
मंगलमय स्वभाव है जिनका, दर्शन जिन का मंगल है।
जिनकी अर्चा मंगलमय है, चर्चा जिनकी मंगल है।।
मंगलमय स्वरूप आपका, ज्ञान आपका मंगल है।
मंगलमय छियालिस गुण पावन, ध्यान आपका मंगल है।।2।।
अनन्त चतुष्टय मंगल गाए, प्रातिहार्य भी मंगल है।
मंगलमय पूजा है जिनकी, सुख अव्यय भी मंगल है।।
मंगलमय आचार आपका, दिव्य देशना मंगल है।
समोश्रृति मंगलमय गाए, पावन अतिशय मंगल है।।3।।
जिन अर्चा औषधि है अनुपम, मंगलमय शुभ है जीवन।
मंगलमय गुण रहे आपके, दर्श विशद संजीवन है।।
असंख्यात आतम प्रदेश पर, नाम आपका अंकित है।
तन मन धन जीवन यह मेरा, चरण आपके अर्पित है।।4।।

दोहा- जिन अर्चा करके 'विशद', होवे पूरी आस।

शिवपथ का राही बने, पावे मुक्ती वास॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानोदय छंद)

सहस्रनाम का यह विधान, जो भव्य जीव करवाते हैं।
भक्ती के फल से वे मानव, अक्षय निधि शुभ पाते हैं॥
अनुक्रम से संयम धारण कर, 'विशद' ज्ञान प्रगटाते हैं।
यह संसार असार छोड़कर, मोक्ष महामहल को जाते हैं॥

॥इत्यादि आशीर्वाद:॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्

तृतिय शतक पूजन

स्थापना

दोहा- स्थविष्ठादिक नाम शत् , जिन के रहे महान।
जिनका करते निज हृदय, में हम भी आह्वान॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री स्थविष्ठादिशतनाममंत्रसमूह!अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री स्थविष्ठादिशतनाममंत्रसमूह!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री स्थविष्ठादिशतनाममंत्रसमूह!अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(पाइता-छन्द)

निर्मल यह नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।
हम जिनवर के गुण गाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्य: जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन शुभ यहाँ चढ़ाएँ, भव का सन्ताप नशाएँ।
हम जिनवर के गुण गाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्य: संसार ताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत से पूज रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
हम जिनवर के गुण गाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्य: अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
हम जिनवर के गुण गाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्य: कामबाणविध्वंसनाय

पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लाए, हम क्षुधा नशाने आए।
हम जिनवर के गुण गाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में दीप जलाएँ, हम मोह से मुक्ती पाएँ।
हम जिनवर के गुण गाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्य: महामोहान्ध्कारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह सुरभित धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
हम जिनवर के गुण गाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्य: अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सरस चढ़ाते भाई, जो गाए मोक्ष प्रदायी।
हम जिनवर के गुण गाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्य: महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ।
हम जिनवर के गुण गाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्य:अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- श्री जिन की महिमा अगम , कोई ना पावे पार।
शांती धारा दे रहे, जिनपद बारम्बार।।

।। शान्तये शांतिधारा।।

दोहा- कर्म बन्ध को तोड़कर, नाश करें भव ताप।
पुष्पांजलिं करके प्रभो! , करें नाम का जाप।।

।।पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

सोरठा- चढ़ा रहे हैं अर्घ्य, हम तृतिय शत नाम के।
पाए सुपद अनर्घ्य, पूजा कर जिन राज की।।

।। इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

चाल छन्द

प्रभु 'स्थविष्ठ' जगनामी, बन गये मोक्ष पथ गामी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।201।।

ॐ ह्रीं श्री स्थविष्ठाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ नाम 'स्थविर' जानो, सिद्धों में स्थिर मानो।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।202।।

ॐ ह्रीं स्थविराय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'ज्येष्ठ' सभी के दाता, तुम बने सभी के त्राता।
हे नाम मंत्र के धारी!, त्रेलोक्य पती अनगारी।।203।।

ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'प्रष्ठ' कहाते स्वामी, यह जग है तव अनुगामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रेलोक्य पती अनगारी।।204।।

ॐ ह्रीं श्री प्रेष्ठाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'वरिष्ठधी' नामी, हे प्रखर बुद्धि के स्वामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रेलोक्य पती अनगारी।।206।।

ॐ ह्रीं श्री वरिष्ठधिये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थेष्ठ' आपको कहते, क्योंकि स्थिर हो रहते।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रेलोक्य पती अनगारी।।207।।

ॐ ह्रीं श्री स्थेष्ठाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'गरिष्ठ' हे ज्ञानी!, प्रभु वीतराग विज्ञानी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रेलोक्य पती अनगारी।।208।।

ॐ ह्रीं श्री गरिष्ठाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बंहिष्ठ' नाम प्रभु पाये, तव रूप अनेकों गाए।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रेलोक्य पती अनगारी॥209॥
ॐ ह्रीं श्री बंहिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'श्रेष्ठ' गुणों के धारी, तव दुनियाँ बनी पुजारी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रेलोक्य पती अनगारी॥210॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव नाम 'अणिष्ठ' बखाना, यह सर्व चराचर जाना।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रेलोक्य पती अनगारी॥211॥
ॐ ह्रीं श्री अणिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको 'गरिष्ठगी' कहते, निज गौरव में जो रहते।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रेलोक्य पती अनगारी॥212॥
ॐ ह्रीं श्री गरिष्ठगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'विश्वभृष' स्वामी, भव नाश किए जग नामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रेलोक्य पति अनगारी॥213॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वभषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'विश्वसृज' स्वामी, कई सृजन किए जग नामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रेलोक्य पती अनगारी॥214॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वसृजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वेश' के पद में आते, सुर नर मुनि शीश झुकाते।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रेलोक्य पती अनगारी॥215॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वेशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'विश्वभुक्' गाये, जग के रक्षक कहलाए।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रेलोक्य पति अनगारी॥216॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वभुजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'विश्वनायक' कहलाए, नीति का ज्ञान कराए।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रेलोक्य पती अनगारी॥217॥
ॐ ह्रीं श्री 'विश्वनायकाय' नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो प्रभु जग 'विश्वाशी', हे मोक्षपुरी के वासी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रेलोक्य पती अनगारी॥218॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वासिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'विश्वरूपात्मा'!, कहलाते हो परमात्मा।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रेलोक्य पती अनगारी॥219॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वरूपात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो आप 'विश्वजित्' स्वामी, भव विजयी अन्तर्यामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रेलोक्य पती अनगारी॥220॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विजितान्तक' आप कहाए, प्रभु पूजा को हम आए।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी॥221॥
ॐ ह्रीं विजितांतकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विभव' आप सुखराशी, प्रभु सिद्ध शिला के वासी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी॥222॥
ॐ ह्रीं विभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विभय' कहे भयनाशी, निज आतम ज्ञान प्रकाशी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी॥223॥
ॐ ह्रीं विभयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वीर' विजय को पाए, तुम सारे कर्म नशाए।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी॥224॥
ॐ ह्रीं वीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है नाम 'विशोक' तुम्हारा, इस जग को दिया सहारा।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी॥225॥
ॐ ह्रीं विशोकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विजर' विजय के दाता, जन-जन के भाग्य विधाता।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी॥226॥
ॐ ह्रीं विजराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अजरण' तुम जीर्ण ना होते, इस जग की जड़ता खोते।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।227।।

ॐ ह्रीं अजरणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए 'विराग' तुम स्वामी, फिर बने मोक्ष पथ गामी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।228।।

ॐ ह्रीं विरागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विरत'! आप गुणधारी, जन-जन के करुणाकारी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।229।।

ॐ ह्रीं विरताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'असंग' अविकारी, इस जग के राग निवारी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।230।।

ॐ ह्रीं असंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी 'विविक्त' कहलाए, ना जग से राग लगाए।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।231।।

ॐ ह्रीं विविक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वीत मत्सर'! जग जेता, कहलाए कर्म विजेता।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।232।।

ॐ ह्रीं वीतमत्सराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विनेयजनता बन्धु'! जी, तुम रहे ज्ञान सिन्धू जी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।233।।

ॐ ह्रीं विनेयजनताबंध्वे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विलीनाशेष कल्मश' जी, प्रगटाए श्रेष्ठ सुयश जी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।234।।

ॐ ह्रीं विलीनाशेषकल्मषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वियोग'! नाम के धारी, तुम हो जग में अविकारी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।235।।

ॐ ह्रीं वियोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम नाथ! 'योग विद'! गाए, निज में उपयोग लगाए।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।236।।

ॐ ह्रीं योगविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विद्वान' आप सद्ज्ञानी, तुम हो जग के कल्याणी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।237।।

ॐ ह्रीं विदुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए आप 'विधाता', तुमसे सब पाए साता।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।238।।

ॐ ह्रीं विधत्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सुविधि'! आप जगनामी, तुम बने मोक्ष पथगामी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।239।।

ॐ ह्रीं सुविध्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सुधी' ज्ञान के धारी, सद्ज्ञानी हो शिवकारी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।240।।

ॐ ह्रीं सुध्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन क्षांतिभाक् कहलाए, तुम क्षमा धर्म को पाए।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।241।।

ॐ ह्रीं क्षांतिभाजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पृथ्वी मूर्ति'! गुणधारी, जन-जन के करुणाकारी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।242।।

ॐ ह्रीं पृथिवीमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शांतिभाक्'! शिवगामी, तुम सिद्ध शिला के स्वामी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।243।।

ॐ ह्रीं शांतिभाजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सलिलात्मक' आप कहाए, गुण शीतल शुभ प्रगटाए।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।244।।

ॐ ह्रीं सलिलात्मकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वायु मूर्ति'! सद्ज्ञानी, तुम जन-जन के कल्याणी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।245।।

ॐ ह्रीं वायुमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'असंगात्म' कहलाए, प्रभु रहित संग से गाए।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।246।।

ॐ ह्रीं असंगात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वह्नि मूर्ति' शिवगामी, तुम सिद्ध शिला के स्वामी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।247।।

ॐ ह्रीं वह्निमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को 'अधर्मधृक्' जानो, जो कर्म जलाए मानो।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।248।।

ॐ ह्रीं अधर्मधृक् नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'सुयज्वा' स्वामी, जिनवर मुक्ती पथ गामी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।249।।

ॐ ह्रीं सुयज्वने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'यजमानात्मा' जिन गाए, जो मोक्ष मार्ग दर्शाए।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।250।।

ॐ ह्रीं यजमानात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द)

'सुत्त्वा' आप कहाते हो, निजानन्द रस पाते हो।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।251।।

ॐ ह्रीं श्री सुत्वने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूत्रामपूजित' आप कहे, शत इन्द्रों से पूज्य रहे।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।252।।

ॐ ह्रीं श्री सूत्रामपूजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ऋत्विक्' आप कहाए हो, जगत् पूज्यता पाए हो।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।253।।

ॐ ह्रीं श्री ऋत्विके नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'यज्ञपति' तव नाम अहा, सारे जग में पूज्य रहा।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।254।।

ॐ ह्रीं श्री यज्ञपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'याज्य' आपको कहते हैं, भक्त शरण में रहते हैं।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।255।।

ॐ ह्रीं श्री याज्याये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाते 'यज्ञांग' प्रभो!, हो पूजा के हेतु विभो!।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।256।।

ॐ ह्रीं श्री यज्ञांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमृत' तुम कहलाते हो, सौख्य अनन्त दिलाते हो।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।257।।

ॐ ह्रीं श्री अमृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हवी' नाम को पाये हो, सारे अशुभ जलाए हो।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।258।।

ॐ ह्रीं श्री हविषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व्योममूर्ति' तव नाम अहा, कर्म लेप न लेश रहा।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।259।।

ॐ ह्रीं श्री व्योममूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमूर्तात्मा' हो स्वामी, ज्ञानी हो अन्तर्यामी।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।260।।

ॐ ह्रीं श्री अमूर्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निर्लेप' कहे जग में, आगे बढ़े मोक्ष मग में।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते है।।261।।

ॐ ह्रीं श्री निर्लेपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्मल' तुम कहलाते हो, तुम ही कर्म नशाते हो।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।262।।

ॐ ह्रीं श्री निर्मलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचल' तुम्हें कहते प्राणी, पाए तुम मुक्ती रानी।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।263।।

ॐ ह्रीं श्री अचलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सोममूर्ति' तुम हो स्वामी, हो प्रशान्त जग में नामी।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।264।।

ॐ ह्रीं श्री सोममूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सुसौम्यात्मा' गाये, सौम्य सुछवि अतिशय पाये।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।265।।

ॐ ह्रीं श्री सुसौम्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूर्यमूर्ति' हे प्रभो! तुम्हीं, महा तेज मय रहे तुम्हीं।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।266।।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रभ' तुम कहलाते हो, तुम प्रभाव दिखलाते हो।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।267।।

ॐ ह्रीं श्री महाप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ 'मंत्रविद्' हो स्वामी, ज्ञानी हो अन्तर्यामी।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।268।।

ॐ ह्रीं श्री मंत्रविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'मंत्रकृत' हो आले, सभी मंत्र रचने वाले।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।269।।

ॐ ह्रीं श्री मंत्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम मंत्री कहलाए, सभी यंत्र तुमने पाये।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।270।।

ॐ ह्रीं श्री मंत्रिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

कहलाते हो तुम प्रभु, 'मंत्रमूर्ति' भगवान।

सप्ताक्षरी हो मूर्तिमय, करूँ विशद गुणगान।।271।।

ॐ ह्रीं मंत्रमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुपम पाया आपने, प्रभू 'अनन्तग' नाम।
तीन योग से तव चरण, मैं भी करूँ प्रणाम।।272।।

ॐ ह्रीं अनंतगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म बन्ध से हीन हो, हे 'स्वतंत्र' जिनराज।
तंत्र देह को मानकर, स्व में करते राज।।273।।

ॐ ह्रीं स्वतंत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र-तंत्र कर्त्ता कहे, प्रभो! 'तंत्रकृत' आप।
मुक्ति पाने के लिए, करूँ आपका जाप।।274।।

ॐ ह्रीं तंत्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्त किए हो कर्म का, 'स्वान्त' तुम्हीं हो नाथ!।
तव गुण पाने के लिए, चरण झुकाएँ माथ।।275।।

ॐ ह्रीं स्वन्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाया है जिनदेव ने, 'कृतान्तान्त' शुभ नाम।
किए कर्म का अन्त तुम, पद में करें प्रणाम।।276।।

ॐ ह्रीं कृतान्तान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगम के कर्त्ता तुम्हीं, हो 'कृतान्तकृत' देव।
शिव सुख पाने के लिए, बन्दूँ तुम्हें सदैव।।277।।

ॐ ह्रीं कृतान्तकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय के धनी, 'कृती' पुण्यफल रूप।
शिवपुर वासी बन गये, पाये निज स्वरूप।।278।।

ॐ ह्रीं कृतिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सफल करो पुरुषार्थ सब, तुम 'कृतार्थ' भगवान।
पुरुषार्थ सिद्धी के लिए, करें विशद गुणगान।।279।।

ॐ ह्रीं कृतार्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र करें सत्कार तव, हो जिनेन्द्र 'सत्कृत्य'।

बने आपके चरण में, सुर नर चक्री भृत्य॥280॥

ॐ ह्रीं सत्कृत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म कार्य सब कर चुके, हुए आप 'कृतकृत्य'।
जान स्वयं को ध्याए हो, सारा लोक अनित्य॥281॥

ॐ ह्रीं कृतकृत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा करते इन्द्र भी, तुम 'कृतक्रतू' जिनेश।
प्राणी जो अर्चा करें, पायें सुफल विशेष॥282॥

ॐ ह्रीं कृतक्रतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सादी आप अनन्त हो, प्रभू आप हो 'नित्य'।
तव पद से जो दूर हैं, प्राणी रहे अनित्य॥283॥

ॐ ह्रीं नित्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यू को जीते प्रभो!, 'मृत्युञ्जय' शुभ नाम।
तव पद पाने के लिए, शत् शत् बार प्रणाम॥284॥

ॐ ह्रीं मृत्युंजयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मरण रहित हो जिन प्रभो!, आप 'अमृत्यु' नाथ!।
हम भी तुम जैसे बनें, दीजे हमको साथ॥285॥

ॐ ह्रीं अमृत्यवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाते त्रय लोक में, 'अमृतात्मा' आप।
तुम सम बनने के लिए, करें आपका जाप॥286॥

ॐ ह्रीं अमृतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाया जिनवर आपने, 'अमृतोद्भव' नाम।
पाना हम भी चाहते, अमृत हे शिव धाम!॥287॥

ॐ ह्रीं अमृतोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म आप कहलाए हो, 'ब्रह्मनिष्ठ' हे देव!।
ब्रह्मादि नर नाथ! सब, वन्दन करें सदैव॥288॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञानी बन गये, 'परंब्रह्म' उत्कृष्ट।
ध्याते हैं, अतएव सब, रहे सभी को इष्ट॥289॥

ॐ ह्रीं परंब्रह्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम ज्ञानी देव तुम, 'ब्रह्मात्मा' शिव रूप।
सर्व गुणों से पूर्ण हो, अविचल ज्ञान स्वरूप॥290॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'ब्रह्म सम्भव' कहे, तीर्थंकर भगवान।
अतः आपके नाम का, करें भक्त गुणगान॥291॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मसंभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''महा ब्रह्मपति'' आपका, करते हैं सब जाप।
अर्चा करके भव्य जन, नाश करें सब पाप॥292॥

ॐ ह्रीं महाब्रह्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जपते हैं 'ब्रह्मोड्' जिन, श्रेष्ठ आपका नाम।
भाव सहित तव चरण में, करते विशद प्रणाम॥293॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मेशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महा ब्रह्म पदेश्वर' कहे, तीर्थंकर जिनराज।
पूजा करते आपकी, शिव पद पाने आज॥294॥

ॐ ह्रीं महाब्रह्मपदेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुप्रसन्न' हे प्रभु! तुम्हीं, देते शांति अपार।
चरण शरण में भव्य जन, पा लेते हैं पार॥295॥

ॐ ह्रीं सुप्रसन्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशन्नात्मा' प्रभु आप हो, श्री जिन हे तीर्थेश!।
शिवपद पाया आपने, धार दिगम्बर भेष॥296॥

ॐ ह्रीं प्रसन्नात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञान धर्म दम प्रभु' कहे, जगती पति जगदीश।
भक्ती करके आपकी, भक्त झुकाते शीश॥297॥

ॐ ह्रीं ज्ञानधर्मदमप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशमात्मा' हे प्रशमगुण!, धारी जिन भगवान॥
कर्मनाश कर आपने, पाया पद निर्वाण॥298॥

ॐ ह्रीं प्रशमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशान्तात्मा' नाम धर, कहे आप भगवान।
सुगुण आपके लोक में, गाये महति महान॥299॥

ॐ ह्रीं प्रशान्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुराण पुरुषोत्तम' जिन कहे, पाये केवलज्ञान।
वे भी ज्ञानी जीव हों, करें आप का ध्यान॥300॥

ॐ ह्रीं पुराणपुरुषोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

प्रथम 'स्थविष्ठ' नाम कहा है, पुराण पुरुषोत्तम अन्तिम नाम।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, पाए शिव पद में विश्राम।
सौ नामों के द्वारा श्री जिन, का यह किया विशद गुणगान।
अंतिम यही भावना भाते, पाएँ हम भी पद निर्वाण॥3॥

ॐ ह्रीं स्थविष्ठादिशतनामेभ्यः नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- स्थविष्टादिक नाम सौ, का करते गुणगान।
यही भावना है विशद पायें शिव सोपान॥

तर्ज-वन्दे जिनवरम्.....

आओ भक्तो अर्चा कर ले, हम सब श्री जिनराज की।
सुख शांती सौभाग्य प्रदायक, तारण तरण जहाज की॥
वन्दे जिनवरम्.....॥
एक सौ सत्तर ढाई द्वीप में, तीर्थंकर भगवान जी।
एक साथ हो सकते पावन, पाय पंच कल्याण जी॥
गर्भ में जब आवें तीर्थंकर, उसके भी छह माह अरे!
तीर्थंकर के पुण्य योग से, रत्न वृष्टि शुभ धनद करे॥

सोलह स्वप्न देखती माता, तीर्थंकर जिनराज की ।
सुख शांती.....॥1॥
इन्द्र मेरु पे जिन बालक का, अतिशय न्हवन कराते हैं।
भक्ति भाव से नमस्कार कर, जय जयकार लगाते हैं॥
तप कल्याणक के अवशर पर, देव पालकी लाते हैं।
उसमें प्रभु जी को बैठाकर, दीक्षावन ले जाते हैं॥
भव्य आरती पूजा करते, नव दीक्षित ऋषिराज की।
सुख शांती.....॥2॥
कर्म घातिया नाश के प्रभु जी, केवलज्ञान जगाते हैं।
दिव्य देशना भवि जीवों को, निस्पृह आप सुनाते हैं॥
कर्म अघाती नाश प्रभू जी, सिद्ध शिला पर जाते हैं।
सुखानन्त में वास करें पद, अजर अमर जो पाते हैं॥
होती जय जयकार लोक में, शिव नगरी के ताज की।
सुख शांती.....॥3॥

दोहा- तीन लोक में पूज्य हैं, जगती पति जगदीश।
'विशद' भाव से पूजते, चरण झुकाकर शीश॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री स्थविष्ठादिशत नाममंत्रेभ्यःजयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानोदय छंद)

सहस्रनाम का यह विधान, जो भव्य जीव करवाते हैं।
भक्ती के फल से वे मानव, अक्षय निधि शुभ पाते हैं॥
अनुक्रम से संयम धारण कर, 'विशद' ज्ञान प्रगटाते हैं।
यह संसार असार छोड़कर, मोक्ष महामहल को जाते हैं॥

॥इत्यादि आशीर्वादः॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्

चतुर्थ शतक पूजन

स्थापन

दोहा- महाशोक ध्वज आदि सौ, श्री जिनवर के नाम।

आह्वानन् जिनका करें, करके विशद प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महाशोकध्वजादि शतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महाशोकध्वजादि शतनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महाशोकध्वजादि शतनाममंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(मोतियादाम छन्द)

चढ़ाते जिनपद में हम नीर, प्राप्त करने को भव का तीर।
पूजते तव पद हे भगवान !, प्राप्त हो जाए पद निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते नाथ! चरण में गंध, कर्म का आश्रव करने बन्द।
पूजते तव पद हे भगवान!, प्राप्त हो जाए पद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः संसार ताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाएँ अक्षत हे जिनराज! , मिले हम को अक्षय स्वराज।
पूजते तव पद हे भगवान, प्राप्त हो जाए पद निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यःअक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प से पूजा करें जिनेश, काम रुज होवे नाश विशेष।
पूजते तव पद हे भगवान! , प्राप्त हो जाए पद निर्वाण।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुचरु ये चढ़ा रहे रसदार, क्षुधा रुज हो जाए अब क्षार।
पूजते तव पद हे भगवान! , प्राप्त हो जाए पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय

नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप से अर्चा करतें खास, मोह तम होवे पूर्ण विनाश।
पूजते तव पद हे भगवान!, प्राप्त हो जाए पद निर्वाण।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः महामोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप यह जला रहे भगवान, कर्म मेरे हों नाश प्रधान।
पूजते तव पद हे भगवान!, प्राप्त हो जाए पद निर्वाण।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाएँ फल ये सरस अनूप, प्राप्त हो मुझको निज स्वरूप।
पूजते तव पद हे भगवान!, प्राप्त हो जाए पद निर्वाण।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य यह अर्पित करता आज, चरण में मिलकर सकल समाज।
पूजते तव पद हे भगवान! , प्राप्त हो जाए पद निर्वाण।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतिधारा के लिए, प्रासुक लाए नीर।
अष्ट कर्म का नाश हो, मिटे विभव की पीर।।

शान्तये शांतिधारा

दोहा- पुष्पांजलि अर्पित करें, कर जिन प्रति स्नेह।
पाएँ अब शुद्धात्म रस, हम भी निःसन्देह।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा- अर्घ्य चढ़ाते आज, हम चतुर्थ शत नाम के।
पूरे होवें काज यही भावना है विशद।।

।। इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

दोहा

पाया है प्रभु आपने, 'महाशोध्वज' नाम।
समवशरण में शोभता, तरु अशोक तल धाम॥301॥

ॐ ह्रीं श्री महाशोकध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अशोक' कहलाए हैं, रहे शोक से हीन।
शोक निवारी जिन कहे, निज में रहते लीन॥302॥

ॐ ह्रीं श्री अशोकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा अपरम्पार है, 'कः' कहलाते आप।
मुक्ती पाने के लिए, करें आपका जाप॥303॥

ॐ ह्रीं श्री काय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सृष्टी के कर्त्ता कहे, 'स्रष्टा' तुम हे नाथ!
अर्घ्य चढ़ाते हैं यहाँ, चरण झुकाएँ माथ॥304॥

ॐ ह्रीं श्री स्रष्ट्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाया है प्रभु आपने, आसन पद्म महान।
'पद्मविष्टर' जी जिन कहे, किए जगत कल्याण॥305॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मविष्टराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाते हो लोक मे, जिनवर हे 'पद्मेश'!।
पाये हैं जग में सभी, मुक्ती का संदेश॥306॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगम में प्रभु का कहा, 'पद्मसंभूति' नाम।
करते हैं हम भाव से, बारम्बार प्रणाम॥307॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मसंभूतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाभी पद्म समान तव, 'पद्मनाभि' जिनराज।
आप त्रिलोकी नाथ! हो, पूर्ण करो सब काज॥308॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मनाभये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सम कोई भी नहीं, आप 'अनुत्तर' देव।
गुण गण सौरभ आप में, अक्षय रहे सदैव॥309॥

ॐ ह्रीं श्री अनुत्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर पाया आपने 'पद्मयोनि' शुभ नाम।
जिससे जन्मे आप हो, योनी पद्म समान॥310॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में श्रेष्ठ हो, 'जगद्योनि' हे नाथ!।
उत्पत्ती जग में किए, चरण झुकाएँ माथ॥311॥

ॐ ह्रीं श्री जगद्योनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य हुए संसार में, 'इत्य' नाम को पाय।
हम भी वन्दन कर रहे, सादर शीश झुकाय॥312॥

ॐ ह्रीं श्री इत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर इन्द्र मुनीन्द्र से, हैं 'स्तुत्य' जिनेश।
वीतराग का जो परम, दिए जगत उपदेश॥313॥

ॐ ह्रीं श्री स्तुत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तुति करने आये हम, 'स्तुतिश्वर' हे नाथ!।
हाथ जोड़ तव चरण में, भक्त झुकाये माथ॥314॥

ॐ ह्रीं श्री स्तुतीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप स्तवन योग्य हो, 'स्तवनार्ह' जिनेन्द्र।
करते हैं तव वन्दना, इन्द्र और राजेन्द्र॥315॥

ॐ ह्रीं श्री स्तवनार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिया लोक में आपने, 'हृषीकेश' उपदेश।
इन्द्रिय मन को जीतकर, नाशे कर्म अशेष॥316॥

ॐ ह्रीं श्री हृषीकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहबली को जीतकर, हुए आप 'जितजेय'।
सर्व जहाँ में श्रेष्ठतम, जग में हुए अजेय॥317॥

ॐ ह्रीं श्री जितजेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्य किए संसार के, 'कृतक्रिय' करने योग्य।

नहीं योग्य थे आपके, छोड़े सर्व अयोग्य॥318॥

ॐ ह्रीं श्री कृतक्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश गण के श्रेष्ठतम, प्रभो! 'गणाधिप' आप।
मुक्ती पाने के लिए, करें नाम का जाप॥319॥

ॐ ह्रीं श्री गणाधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गणज्येष्ठ' है नाम तव, सर्व लोक में श्रेष्ठ।
गुणा गण धारी आपने, पाया नाम यथेष्ठ॥320॥

ॐ ह्रीं श्री गणज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो गणना के योग्य तुम, 'गण्य' आपका नाम।
लाख चौरासी गुण सहित, तव पद करूँ प्रणाम ॥321॥

ॐ ह्रीं श्री गण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्य' आपका नाम शुभ, हो तुम पूर्ण पवित्र।
आप सभी के हो प्रभु, कोई शत्रु न मित्र॥322॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गणाग्रणी' तुमने दिया, शिव पथ का उपदेश।
मुक्ति पथ पर बढ़ चले, धार दिगम्बर भेष॥323॥

ॐ ह्रीं श्री गणाग्रण्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनन्त के कोष तुम, अतः 'गुणाकर' नाम।
सार्थक पाया आपने, तव पद करूँ प्रणाम॥324॥

ॐ ह्रीं श्री गुणाकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'गुणाम्भोधी' कहे, श्रेष्ठ गुणों की शान।
सब दोषों से हीन हो, अतः झुकाएँ शीश॥325॥

ॐ ह्रीं श्री गुणाम्भोध्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'गुणज्ञ' गुणवान तुम, श्रेष्ठ जगत के ईश।
सब दोषों से हीन हो, अतः झुकाएँ शीश॥326॥

ॐ ह्रीं श्री गुणज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुणनायक' गुण के धनी, गुण मणि आप विशाल।

तव गुण पाने के लिए, गाते हम जयमाल॥327॥

ॐ ह्रीं श्री गुणनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्त्वादि गुण आदरी, 'गुणादरी' हे नाथ!।
सत्त्वप्राप्त गुण हों मुझे, चरण झुकाते माथे॥328॥

ॐ ह्रीं श्री गुणादरिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रज तप आदि विभाव गुण, सर्व नशाए आप।
अतः 'गुणोच्छेदी' हुए, मुझे करो निष्पाप, ॥329॥

ॐ ह्रीं श्री गुणाच्छेदिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभाविक गुण हीन तुम, 'निर्गुण' आप महान।
ज्ञानादिक गुण धारते, जग में रहे प्रधान॥330॥

ॐ ह्रीं श्री निर्गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए प्रभु 'पुण्यगी', पावन वाणी धार॥
पावन वाणी हो मेरी, नमन अनन्तों बार॥331॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ गुणों को धारकर, पाए 'गुण' प्रभु नाम।
भव्य जीव अतएव सब, करते तुम्हें प्रणाम॥332॥

ॐ ह्रीं श्री गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शरण्य'! तव चरण की, शरण जिसे मिल जाए।
ऋद्धि-सिद्धि सुख प्राप्त कर, निश्चय मुक्ती पाए॥333॥

ॐ ह्रीं श्री शरण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्यवाक्' प्रभु आपके, जग को करें निहाल।
सुख-शांती आनन्द दे, कर देते खुशहाल॥334॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो पावन इस लोक में, 'पूत' आपका नाम।
पावन हमको भी करो, बारम्बार प्रणाम॥335॥

ॐ ह्रीं श्री पूताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वरेण्य' मुक्ति पति, मुक्ति रमा के कंत।
सर्वश्रेष्ठ परमात्मा, किए कर्म का अंत॥336॥

ॐ ह्रीं श्री वरेण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पुण्यनायक' तुम्हीं, सकल पुण्य के ईश।
श्रेष्ठ पुण्य का दान दो, चरण झुकाएँ शीश॥337॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप नहीं गणनीय हो, हे 'अगण्य'! जिनराज।
हमको भी निज सम करो, आन सम्हारो काज॥338॥

ॐ ह्रीं श्री अगण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पुण्यधी' आप हो, बुद्धि पुण्य स्वरूप।
मम बुद्धि को शुद्ध कर, प्रकट करो निज रूप॥339॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुण्य' आपका नाम है, श्रेष्ठ गुणों के नाथ!।
पूर्ण गुणी हम बन सकें, नाथ! निभाओ साथ॥340॥

ॐ ह्रीं श्री गुण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप शाप को नाशकर, हुए 'पुण्यकृत' आप।
नाम जाप कर आपका, हो जाएँ निष्पाप॥341॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पुण्यशासन' तुम्हीं, आप पुण्य के कोष।
तुम्हें छोड़ते जीव यह, है भारी अफसोस॥342॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्माराम' यह नाम शुभ, पाए श्री जिनेश।
धर्म से हो आराम सुख, कहते हैं तीर्थेश॥343॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मरामाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूलोत्तर गुण के धनी, श्री जिनेन्द्र 'गुणग्राम'।
ऋद्धि-सिद्धि श्री प्राप्त जिन, पाये हैं यह नाम॥344॥

ॐ ह्रीं श्री गुणग्रामाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप से हीन तव, 'पुण्यापुण्यनिरोध'।

रत्नत्रय से ध्यान कर, स्वयं जगाए बोध॥345॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यापुण्यनिरोधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

पाप रहित निष्पाप कहाए, 'पापापेत' नाम प्रभु पाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥346॥

ॐ ह्रीं श्री पापापेताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप कर्म सब दूर भगाए, आप 'विपापात्मा' कहलाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाप जापमें ध्यान लगाएँ॥347॥

ॐ ह्रीं श्री विपापात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है निर्दोष आपकी वाणी, तुम्हें 'विपाप्मा' कहते प्राणी।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥348॥

ॐ ह्रीं श्री विपाप्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्मष धो कर शुद्धी पाए, आप 'वीतकल्मष' कहलाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाप जाप में ध्यान लगाएँ॥349॥

ॐ ह्रीं श्री वीत्कल्मषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह हीन रहे अविनाशी, हैं 'निर्द्वंद्व' द्वन्द्व के नाशी।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥350॥

ॐ ह्रीं श्री निर्द्वंद्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय केवलज्ञान प्रकाशा, 'निर्मद' मद को तुमने नाशा।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥351॥

ॐ ह्रीं श्री निर्मदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनकी महिमा हम भी गाएँ, 'शांत' किए उपशांत कषाएँ।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥352॥

ॐ ह्रीं श्री शांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध सनातन वसु गुणभागी, हे 'निर्मोह'! मोह के त्यागी।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥353॥

ॐ ह्रीं श्री निर्मोहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध श्री जिन शिवपुर वासी, 'निरुपद्रव' उपद्रव के नाशी।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ।।354।।
ॐ ह्रीं श्री निरुपद्रवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं कभी भी पलक झपकते, 'निर्निमेष' इकटक ही लखते।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ।।355।।
ॐ ह्रीं श्री निर्निमेषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा व्याधि औरों की हरते, 'निराहार' आहार न करते।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ।।356।।
ॐ ह्रीं श्री निराहाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रियावान को मुक्ति दिलाए, क्रिया रहित 'निष्क्रिय' कहलाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ।।357।।
ॐ ह्रीं श्री निष्क्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निरुपप्लव' जी विघ्न नशाए, तव अर्चा को हम भी आए।
नाप जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।358।।
ॐ ह्रीं श्री निरुपप्लवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्कलंक' अकलंक कहे हैं, कोई कलंक नहीं रहे हैं।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।359।।
ॐ ह्रीं श्री निष्कलंकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव पद वन्दन करने आए, प्रभो! 'निरस्तैना' कहलाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ।।360।।
ॐ ह्रीं श्री निरस्तैनसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहा नाम न कोई पाप का, 'निर्धूतागस्' नाम आपका।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ।।361।।
ॐ ह्रीं श्री निर्धूतागसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप हुए प्रभु अन्तर्यामी, आस्रव हीन 'निरास्रव' स्वामी।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ।।362।।
ॐ ह्रीं श्री 'निरास्रवाय' नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सम कोइ भगवंत नहीं है, हे 'विशाल'! तव अन्त नहीं है।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ।।363।।
ॐ ह्रीं श्री विशालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीश झुकाएँ पद में तेरे, 'विपुलज्योति' हे जिनवर! मेरे।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ।।364।।
ॐ ह्रीं श्री विपुलज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर न सके लोक में कोई, 'अतुल' आपकी तुलना सोई।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ।।365।।
ॐ ह्रीं श्री अतुलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बृहस्पति भी न गुण गा पाए, तुम 'अचिन्त्यवैभव' कहलाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ।।366।।
ॐ ह्रीं श्री अचिन्त्यवैभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवर किए पूर्णतः नामी, कहलाए 'सुसंवृत्त' स्वामी।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ।।367।।
ॐ ह्रीं श्री सुसंवृत्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मारि छू भी न पाए, 'सुगुप्तात्मा' आप कहाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ।।368।।
ॐ ह्रीं श्री सुगुप्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाना लोकालोक है सारा, 'सुभृत्' नाम आपका प्यारा।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ।।369।।
ॐ ह्रीं सुभृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप रहे त्रिभुवन के त्राता, 'सुनयतत्त्ववित्' नय के ज्ञाता।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ।।370।।
ॐ ह्रीं श्री सुनयतत्त्ववित् नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धड़ी छंद)

हैं क्षद्म ज्ञान से पूर्णमुक्त, प्रभु 'एकविद्य' हैं ज्ञान युक्त।
प्रभु आप जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप।।371।।

ॐ ह्रीं श्री एकविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए विद्याएँ विशद ज्ञान, प्रभु 'महाविद्य' जग में महान।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥372॥
ॐ ह्रीं श्री महाविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों को भव से किया पार, हे 'मुनि'! आपने मौन धार।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥373॥
ॐ ह्रीं श्री मुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाकर दिखलाया मार्ग नेक, हे 'परिवृढ़'! तुममें गुण अनेक।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥374॥
ॐ ह्रीं श्री परिवृढ़ाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी जग में हो ज्ञानवान, हे 'पति'! आप हो जग प्रधान।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥375॥
ॐ ह्रीं श्री पत्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग में पायी प्रधान, हे 'धीश'! आपकी धी महान।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥376॥
ॐ ह्रीं श्री धीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव चरणों सुर-नर झुकें भूप, प्रभु 'विद्यानिधि' हो तुम अनूप।
प्रभू नाम जाप से कटें पाप, सारे दःखहर्त्ता रहे आप॥377॥
ॐ ह्रीं श्री विद्यानिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव पद में मेरा नमस्कार, हे 'साक्षी'! कर साक्षात्कार।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥378॥
ॐ ह्रीं श्री साक्षिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की सब जाने आप रीत, हे प्रभू 'विनेता'! तुम विनीत।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥379॥
ॐ ह्रीं श्री विनेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सिद्ध बने पा गुणानन्त, हे 'विहतान्तक'! कर कर्म अन्त।

प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥380॥
ॐ ह्रीं श्री विहितान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम जनक कहे जग में विशेष, हे 'पिता'! आप रक्षक जिनेश।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥381॥
ॐ ह्रीं श्री पित्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सम न त्राता कोई श्रेष्ठ, प्रभु कहे 'पितामह' जग ज्येष्ठ।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥382॥
ॐ ह्रीं श्री पितामहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम वन्दन करते बार-बार, अब भवदधि 'पाता' करो पार।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥383॥
ॐ ह्रीं श्री पात्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम रहे जगत के श्रेष्ठ मित्र, आतम कीन्ही तुमने 'पवित्र'।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥384॥
ॐ ह्रीं श्री पवित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न पाये जिसका कोई पार, हे 'पावन'! तव महिमा अपार।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥385॥
ॐ ह्रीं श्री पावनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चम गति पाई जग प्रधान, हे 'गति' आपकी गति महान्।
प्रभु नामा जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥386॥
ॐ ह्रीं श्री गतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्रय दाता हो तुम विशेष, हे 'त्राता'! जग रक्षक जिनेश।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥387॥
ॐ ह्रीं श्री त्रात्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब रोग विनाशक हो महान, हे वैद्य भिषग्वर'! तुम प्रधान।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥388॥
ॐ ह्रीं श्री भिषग्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मुक्ति रमा के वर महान, हे 'वर्य'! आप हैं सुमति मान।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥389॥
ॐ ह्रीं श्री वर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर देता है जीवन प्रशस्त, हे प्रभू! आपका 'वरद' हस्त।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥390॥
ॐ ह्रीं श्री वरदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनका है पावन 'परम' नाम, जिनके पद सब करते प्रणाम।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥391॥
ॐ ह्रीं परमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन नाम प्राप्त कीन्हें 'पुमान्', जो प्रगटाए हैं विशद ज्ञान।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥392॥
ॐ ह्रीं पुंसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिन! कहलाए 'कवि' आप, तव दर्श किए सब कटे शाप।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥393॥
ॐ ह्रीं कवये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'पुराण पुरुष' जिनवर महान, जो श्रेष्ठ गुणों की रहे खान।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥394॥
ॐ ह्रीं पुराणपुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वर्षियान्'! तुम हो पवित्र, तुम जग जीवों के परम मित्र।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥395॥
ॐ ह्रीं वर्षीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'ऋषभ' आप हो जग प्रधान, तव अर्चा से हो कर्म हान।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥396॥
ॐ ह्रीं ऋषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरु' आप कर्म का करो अन्त, जीवन में आए शुभ बसन्त।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥397॥

ॐ ह्रीं पुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रतिष्ठा प्रसवादी' हे जिनेश!, तव गुण है इस जग में विशेष।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥398॥
ॐ ह्रीं प्रतिष्ठाप्रसवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'हेतु' तुम हो अपार, तव पद में वन्दन बार बार।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥399॥
ॐ ह्रीं हेतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भुवनेक पितामह' कहे श्रेष्ठ, जिनराज कहे हैं जग ज्येष्ठ।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥400॥
ॐ ह्रीं भुवनैकपितामहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

'महाशोक ध्वज' आदि नाम के, धारी कहलाए भगवान।
सुर नर विद्याधर से पूजित, तीन लोक में रहे महान॥
सौ नामों के द्वारा श्री जिन, का यह विशद किया गुणगान।
अन्तिम यही भावना भाते, पाएँ हम भी पद निर्वाण॥4॥
ॐ ह्रीं महाशोकध्वजादिशतनामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- महाशोकादिक नाम शत, जग में कहे महान।
जयमाला गाते यहाँ, करते हैं जयगान॥

तर्ज-अहो जगत.....

जय जय जय जिनधर्म जग में मंगलकारी।
भवि जीवों को श्रेष्ठ गाया जो उपकारी॥
जय जय वस्तु स्वभाव धर्म दयामय गाया।
जय जय दश विधि धर्म भाव क्षमादि बताया॥1॥
जय जय दर्शन ज्ञान चारित है शुभकारी।
रत्नत्रय शुभ धर्म जग में मंगलकारी॥
जय जय जय जिनदेव, छियालिस गुण के धारी।

जय वीतरागता वान पावन हैं अविकारी॥2॥
जय जय जय ऋषिराज शुद्धोपयोग लगावें।
कर्म नाशकर आप केवल ज्ञान जगावें॥
धन कुवेर तव श्रेष्ठ समवशरण बनवाबें।
दिव्य देशना जीव प्रभु की अतिशय पावें॥3॥
जागे मम सौभाग्य जिनवर दर्शन पाएँ।
दर्श ज्ञान चारित्र प्रभु पद विशद जगाएँ॥
सहस्रनाम का जाप करके जिन गुण गाएँ।
नाथ! आपके भक्त चरणों शीश झुकाएँ॥4॥

दोहा- महिमा जिनकी है आगम, कोई ना पावे पार।
'विशद' भावना है यही, पावें भवदधि पार॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानोदय छंद)

सहस्रनाम का यह विधान जो, भव्य जीव करवाते हैं।
भक्ती के फल से वे मानव, अक्षय निधि शुभ पाते हैं॥
अनुक्रम से संयम धारण कर, 'विशद' ज्ञान प्रगटाते हैं।
यह संसार असार छोड़कर, मोक्ष महामहल को जाते हैं॥

॥इत्यादि आशीर्वादः॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्

पंचम शतक पूजन

स्थापना

दोहा- श्री वृक्ष लक्षणादि सौ, नामों का गुणगान।
करने आए हम यहाँ, जिनका शुभ आह्वान॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री वृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री वृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रसमूह!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री वृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रसमूह!अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(दोहा-छन्द)

जला रही हमको प्रभो!, राग आग की पीर।
पाने जल लाए विशद, भेद ज्ञान का नीर॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री वृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चन्दन से मिटे, इस तन का संताप।
प्रभु भक्ती मैटे विशद, लगा कर्म का ताप॥2॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री वृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः संसार ताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव सिन्धू से शीघ्र ही, पार उतारो नाथ!।
चढ़ा रहे अक्षत विशद, चरण झुकाते माथ॥3॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री वृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

शील स्वभाव जगाइये, मदन दर्प अतिशूर।
भव तट नाव लगाइये, शिव पद से जो दूर॥4॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री वृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शांत करो जिनराज हे!, क्षुधा ज्वाल विकराल।
मिथ्या भ्रान्ती नाश हो, लाए चरु के थाल॥5॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री वृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-पर तत्त्व प्रकाशनी, आतम ज्योति महान।
करो प्रज्ज्वलित हे प्रभो!, अन्तर दीप सुज्ञान॥6॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री वृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव में भटके फिरे, कर्म बन्ध से नाथ!।
लोहे की संगति किए, अग्नि सहे घन घात॥7॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री वृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्य: अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों से संग्राम कर, पाए पद निर्वाण।
मुक्ती फल पाने विशद, करते हम गुणगान॥8॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री वृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्य: महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य चरण अर्पण करें, पद अनर्घ्य के हेतु।
श्रद्धा से पूजन करें, जिन भक्ती शिव सेतु॥9॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री वृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्य:अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तिहुजग शांतीकर कर विशद, गाए जिन तीर्थेश।
शांतीधारा जिन चरण, देते यहाँ विशेष॥

॥ शान्तये शांतिधारा ॥

दोहा- श्री जिन चरण सरोज में, पुष्पांजलि करन्त।
त्रिभुवन में शांती बढ़े, होवे सौख्य अनन्त॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

दोहा- अर्घ्य चढ़ाएँ विशेष, हम पंचम शत नाम के।
जग में पूज्य जिनेश, जिनको ध्याएँ जगत् जन॥

॥ इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

(सखी छन्द)

'श्रीवृक्षलक्षणा' भाई, जिन नाम कहा सुखदायी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥401॥

ॐ ह्रीं श्री वृक्षलक्षणाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनप्रभू 'लक्षण' कहलाए, जो शिव रमणी को पाए।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥402॥

ॐ ह्रीं श्री लक्षणाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लक्षण्य' कहे जिन स्वामी, सब लक्षण पाए नामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥403॥

ॐ ह्रीं श्री लक्षण्याय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुभलक्षण' प्रभु जी पाए, जो सहस्राष्ट कहलाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥404॥

ॐ ह्रीं श्री शुभलक्षणाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'निरक्ष' कहलाए, प्रभु हीन इन्द्रिय गाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥405॥

ॐ ह्रीं श्री निरक्षाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'पुण्डरीकाक्ष' कहाए, नाशाग्र दृष्टि शुभ पाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥406॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्डरीकाक्षाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्कल' कहलाए स्वामी, जग रक्षक अन्तर्यामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥407॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्कलाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'पुष्करेक्षण' हैं भाई, शुभ गमन कमल सुखदायी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥408॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्करेक्षणाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'सिद्धिदा' स्वामी, सिद्धी दायक जग नामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥409॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धिदाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सिद्धसंकल्प' कहाए, कर पूर्ण सभी दिखलाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥410॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धसंकल्पाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को 'सिद्धात्मा' जानो, सब सिद्धी पाए मानो।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।411।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सिद्धसाधन' कहलाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।412।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धसाधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'बुद्धबोध्य'! जगनामी, बोधी तुम पाये स्वामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।413।।

ॐ ह्रीं श्री बुद्धबोध्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महाबोधि' कहलाये, जो श्रेष्ठ सिद्धियाँ पाये।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिवनगरी को जावें।।414।।

ॐ ह्रीं श्री महाबोधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वर्धमान'! जिन स्वामी, गुण पाये अतिशय नामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।415।।

ॐ ह्रीं श्री वर्धमानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महर्द्धिक' कहलाए, जो श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाये।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।416।।

ॐ ह्रीं श्री महर्द्धिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेदांग' नाम अति प्यारा, है सार्थक नाम तुम्हारा।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।417।।

ॐ ह्रीं श्री वेदांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'वेदविद्' स्वामी, ज्ञानी वेदों के नामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।418।।

ॐ ह्रीं श्री वेदविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'वेद' स्वयं संवेदी, आठों कर्मों के भेदी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।419।।

ॐ ह्रीं श्री वेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'जातरूप' कहलाए, शुभ भेष दिगम्बर पाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।420।।

ॐ ह्रीं श्री जातरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'विदाम्वर' ज्ञानी, हैं जग जन के कल्याणी।
जो श्री जिनवर को ध्यायें, वे सारे कर्म नशाएँ।।421।।

ॐ ह्रीं विदांवराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'वेदवेद्य' कहलाए, ज्ञाता इस जग के गाए।
जो श्री जिनवर को ध्यायें, वे सारे कर्म नशाएँ।।422।।

ॐ ह्रीं वेदवेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'स्वसंवेद्य' निराले, जग का हित करने वाले।
जो श्री जिनवर को ध्यायें, वे सारे कर्म नशाएँ।।423।।

ॐ ह्रीं स्वसंवेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'विवेद' कहाए, वेदों के ज्ञाता गाए।
जो श्री जिनवर को ध्यायें, वे सारे कर्म नशाएँ।।424।।

ॐ ह्रीं विवेदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वदताम्बर' हैं जिन स्वामी, जग जन के अन्तर्यामी।
जो श्री जिनवर को ध्यायें, वे सारे कर्म नशाएँ।।425।।

ॐ ह्रीं वदताम्बराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'अनादि निधन' हैं, जिन चरणों शत् वन्दन है।
जो श्री जिनवर को ध्यायें, वे सारे कर्म नशाएँ।।426।।

ॐ ह्रीं अनादिनिध्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'व्यक्त' जगनामी, तीनों लोकों के स्वामी।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।427।।

ॐ ह्रीं व्यक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'व्यक्त वाक्' कहलाए, शिव पद की राह दिखाए।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।428।।

ॐ ह्रीं व्यक्तवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'व्यक्त शासन'! शुभकारी, तव पद में ढोक हमारी।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।429।।

ॐ ह्रीं व्यक्तशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको 'युगादिकृत' कहते, निज गुण में स्थिर रहते।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।430।।

ॐ ह्रीं युगादिकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'युगाधार' कहलाए, महिमा सारा जग गाए।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।431।।

ॐ ह्रीं युगाधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन हैं 'युगादि' जग नामी, इस जग के अन्तर्यामी।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।432।।

ॐ ह्रीं युगादये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगदादिज' आप कहाए, प्रभु जगत पूज्यता पाए।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।433।।

ॐ ह्रीं जगदादिजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'अतीन्द्र' निराले, सबका मन हरने वाले।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।434।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'अतिन्द्रय' स्वामी, जग जन के अन्तर्यामी।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।435।।

ॐ ह्रीं अतीद्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धीन्द्र' कहाए स्वामी, जग जीवों के कल्याणी।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।436।।

ॐ ह्रीं धीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है नाम 'महेन्द्र' निराला, जग का हित करने वाला।

जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।437।।

ॐ ह्रीं महेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'अतीन्द्रियार्थदिक्' स्वामी, प्रभु बने मोक्ष पथ गामी।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।438।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियार्थदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'अनिन्द्रिय' गाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।439।।

ॐ ह्रीं अनिंद्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अहमिन्द्रार्च्य' आप जगनामी, कहलाए नाथ! अकामी।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।440।।

ॐ ह्रीं अहमिन्द्रार्च्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

जैनागम में कहा है, 'महेन्द्रमहित' तव नाम।
इन्द्र नरेन्द्र महेन्द्र सब, करते विशद प्रणाम।।441।।

ॐ ह्रीं श्री महेन्द्रमहिताय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

आप रहे संसार में, त्रिभुवन पूज्य 'महान'।
प्रभु गुण पाने के लिए, करें विशद गुणगान।।442।।

ॐ ह्रीं श्री महते नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

नाम प्राप्त कीन्हें प्रभो!, 'उद्भव' जगत् प्रसिद्ध।
उद्भव कीन्हें धर्म का, सार्थक है जो सिद्ध।।443।।

ॐ ह्रीं श्री उद्भवे नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

धर्म सौख्य सौभाग्य के, 'कारण' आप महान्।
कर्म नाश के हेतु तुम, अतिशय रहे प्रधान।।444।।

ॐ ह्रीं श्री कारणाय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

असि मसि आदिक कर्म के, 'कर्त्ता' तुम तीर्थेश।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ चले, धार दिगम्बर भेष।।445।।

ॐ ह्रीं श्री कर्त्रो नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

पार हुए संसार से, 'पारग' पाए नाम।

पाने भव से पार हम, पद में करें प्रणाम।।446।।

ॐ ह्रीं श्री पारगाय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

'भवतारक' कहलाए हो, तारण तरण जहाज।
पाया है प्रभु आपने, मोक्ष महल का ताज।।447।।

ॐ ह्रीं श्री भवतारकाय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

अवगाहन अति कठिन है, है 'अग्राह्य' तव नाम।
गुण अवगाहन प्राप्त कर, पाए तुम शिवधाम।।448।।

ॐ ह्रीं श्री अग्राह्याय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

'गहन' आप अतिशय रहे, योगी जन के गम्य।
सर्व लोक में श्रेष्ठतम, है स्वरूप तव रम्य।।449।।

ॐ ह्रीं श्री गहनाय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

पार नहीं पावे कोई, 'गुह्य' गुप्त हो आप।
योग धारने के लिए, करें नाम का जाप।।450।।

ॐ ह्रीं श्री गुह्याय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

है 'परार्ध्य' तव नाम शुभ, जग में हुए महान।
महिमा तुमरी अगम है, कैसे करें बखान।।451।।

ॐ ह्रीं श्री परार्ध्याय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

'परमेश्वर' कहलाए हैं, मुक्ति श्री के नाथ!।
तव पद पाने के लिए, चरण झुकाएँ माथ।।452।।

ॐ ह्रीं श्री परमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

'अनन्तर्द्धि' कहलाए हो, ज्ञानी आप अनन्त।
सर्व ऋद्धियों से सहित, नहीं है जिसका अंत।।453।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तर्द्धये नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

मर्यादा जिसकी नहीं, 'अमेयर्द्धि' भगवान।
जो गणना से पार हैं, पाए ऋद्धि महान्।।454।।

ॐ ह्रीं श्री अमेयर्द्धये नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

तुम अचिन्त्य संसार में, 'अचिन्त्यर्द्धि' जिनराज।

सर्व ऋद्धियाँ प्राप्त कर, पाए सौख्य समाज।।455।।

ॐ ह्रीं श्री अचिन्तयर्द्धिये नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

ज्ञाता ज्ञेय प्रमाण के, हे 'समग्रधी' नाथ!।
अपने ज्ञान प्रणाम शुभ, चरण झुकाएँ माथ।।456।।

ॐ ह्रीं श्री समग्रधिये नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

आप लोक में प्रथम हो, 'प्राग्रय' हे जिनदेव!।
मुक्ति पाने कर्म से, करें चरण की सेव।।457।।

ॐ ह्रीं श्री प्राग्रयाय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

पूज्य सुमंगल कार्य में, कहे 'प्राग्रहर' आप।
परम पूज्य परमात्मा, नाशक सारे पाप।।458।।

ॐ ह्रीं श्री प्राग्रहराय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

सम्मुख हो लोकाग्र के, हे 'अभ्यग्र' जिनेन्द्र!।
मन वच तन से आपके, पूजें चरण शतेन्द्र।।459।।

ॐ ह्रीं श्री अभ्यग्राय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

आप विलक्षण जगत से, जिन 'प्रत्यग्र' महान।
भाव सहित तव पाद में, करें विशद गुणगान।।460।।

ॐ ह्रीं श्री प्रत्यग्राय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

(चौपाई)

'अग्रय' तुम कहलाए स्वामी, अग्रणीय हो अन्तर्यामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।461।।

ॐ ह्रीं श्री अग्रयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अग्रिम' तुमको कहते प्राणी, रहो अग्र जग के कल्याणी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।462।।

ॐ ह्रीं श्री अग्रिमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी तुम 'अग्रज' कहलाए, ज्येष्ठ लोक में बनकर आए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।463।।

ॐ ह्रीं श्री अग्रजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महातपा' तुमने तप धारा, तप में जीवन बीता सारा।

नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।464।।

ॐ ह्रीं श्री महातपसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महातेज' प्रभु आप कहाए, आभा शुभ तेजस्वी पाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।465।।

ॐ ह्रीं श्री महातेजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महादर्क' है नाम निराला, भव से मुक्ती देने वाला।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।466।।

ॐ ह्रीं श्री महोदर्काय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐश्वर्यदान 'महोदय' जानो, जगतपति प्रभु को पहिचानो।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।467।।

ॐ ह्रीं श्री महोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महायशा' कहलाए स्वामी, यशोपूत हैं जग में नामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।468।।

ॐ ह्रीं श्री महायशसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधाम' है नाम तुम्हारा उसको पाना लक्ष्य हमारा।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।469।।

ॐ ह्रीं श्री महाधाम्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महासत्त्व' तुमको कहते हैं, शाश्वत आप सदा रहते हैं।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।470।।

ॐ ह्रीं श्री महासत्त्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधृती' जिनवर कहलाए, जग जीवों को धैर्य दिलाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।471।।

ॐ ह्रीं श्री महाधृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधैर्य' धारी जिन स्वामी, आकुलता त्यागे जग नामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।472।।

ॐ ह्रीं श्री महाधैर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महावीर्य' धारी जिन स्वामी, आकुलता त्यागे जग नामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।473।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महासम्पत' कहलाए, समवशरण में शोभा पाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।474।।

ॐ ह्रीं श्री महासंपदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'महाबल' कहते प्राणी, वीर्यवान हो जग कल्याणी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।475।।

ॐ ह्रीं श्री महाबलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'महाशक्ति' के धारी, त्रिभुवन पति हे करुणाकारी!
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।476।।

ॐ ह्रीं श्री महाशक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाज्योति' तुमने शुभ पाई, केवलज्ञान की ज्योति जलाई।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।477।।

ॐ ह्रीं श्री महाज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाभूति' कहलाए स्वामी, विभव रूप हे अन्तर्यामी!।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।478।।

ॐ ह्रीं श्री महाभूतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महाद्युति' हैं द्युति के धारी, कांतिमान प्रभु अतिशयकारी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।479।।

ॐ ह्रीं श्री महाद्युतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महामति' महाबुद्धी पाए, केवलज्ञानी आप कहाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।480।।

ॐ ह्रीं श्री महामतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(केसरी छन्द)

'महानीति' जग सिद्ध कहाए, महानीतियाँ तुम प्रगटाए।
नाम मंत्र जिन का कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।481।।

ॐ ह्रीं महानीतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाक्षांति' वान क्षांतीधारी, कहे गये जग के उपकारी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।482।।

ॐ ह्रीं महाक्षान्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'महादय' हे जगनामी!, तव चरणों जग करे नमामी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।483।।

ॐ ह्रीं महादयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रज्ञ' हे प्रज्ञाधारी!, तीन लोक में मंगलकारी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।484।।

ॐ ह्रीं महाप्राज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाभाग' तुम भाग्य जगाए, जग को मुक्ती मार्ग दिखाए।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।485।।

ॐ ह्रीं महाभागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'महानंद' नाम के धारी, पूर्णरूप तुम हो अविकारी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।486।।

ॐ ह्रीं महानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकवी' कहलाने वाले, जग को ज्ञान कराने वाले।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।487।।

ॐ ह्रीं महाकवये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'महामह' आप कहाते, जग जीवों से पूजे जाते।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।488।।

ॐ ह्रीं महामहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकीर्ति' महा कीर्ती धारी, नाथ! आप अतिशय के धारी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।489।।

ॐ ह्रीं महाकीर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकांति' शुभकांती वाले, तीन लोक में रहे निराले।

नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।490।।

ॐ ह्रीं महाकान्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'महावपु' हो जगनामी, विशद कहाए अन्तर्यामी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।491।।

ॐ ह्रीं महावपुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महादान' कहलाए दानी, ज्ञान प्रदायक केवलज्ञानी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।492।।

ॐ ह्रीं महादानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाज्ञान' हो क्षायिक ज्ञानी, जग जन के हैं प्रभु कल्याणी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।493।।

ॐ ह्रीं महाज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महायोग' योगी कहलाते, जगत पूज्यता प्रभु जी पाते।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।494।।

ॐ ह्रीं महायोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'महागुण' गुण के धारी, जिनके गुण हैं विस्मयकारी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।495।।

ॐ ह्रीं महागुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'महामहपति' जिन स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।496।।

ॐ ह्रीं महामहपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्राप्त महाकल्याण सुपञ्चक', रहे आप कर्मों के वञ्चक।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।497।।

ॐ ह्रीं प्राप्तमहाकल्याणपंचकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रभू' तुम हो जगनामी, तव चरणों हम करें नमामी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।498।।

ॐ ह्रीं महाप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रातिहार्यधीश' कहाए, प्रीतिहार्य की प्रभुता पाए।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।499।।

ॐ ह्रीं महाप्रातिहार्याधीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन्हें 'महेश्वर' कहते भाई, जिनने अतिशय प्रभुता पाई।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।500।

ॐ ह्रीं महेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

श्री वृक्षलक्षणादिक पावन, श्री जिनेन्द्र के गाये नाम।
अन्त महेश्वर नाम आपका, जिन पद करते जीव प्रणाम।।
सौ नामों के द्वारा श्री जिन, का यह किया विशद गुणगान।
अन्तिम यही भावना भाते, पाएँ हम भी पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलणादिशतनामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **ऋद्धि सिद्धि पाए विशद, जीवन होय निहाल।**
श्री वृक्षलक्षणादि शत, की गाएँ जयमाल।।

स्रग्विणी छन्द

शुभ ज्ञान चक्षु से विशद, जिन दर्श जो करे।
वह दर्श ज्ञान चारित, शुभ रत्न को वरे।।
श्री वृक्ष आदि नाम शत्, को भाव से यजें।
निज दिव्य ज्ञान ज्योति, के हेतु हम भजें।।1।।
जो अष्ट द्रव्य पाय, जिन अर्चना करे।
वह अर्चना को पाय, मुक्ति सुन्दरी वरे।।
श्री वृक्ष....।।2।।
शुभ रत्न तीन से प्रभू का, ध्यान जो करे।
निज की विभाव कालिमा, को शीघ्र परिहरे।।
श्री वृक्ष....।।3।।
जिनराज की शुभ भाव से, जो वन्दना करे।

उस भव्य भक्त की सभी अभिवन्दना करें।।
श्री वृक्ष....।।4।।
कीर्तन करे जिनेश का, जो भाव से अरे!
यश कीर्ति छाय लोक में, निज कर्म को हरे।।5।।

घत्ता छन्द

शत नाम को ध्यायें, जिन गुण गाए, पाप नशाएँ भक्ति करें।
जिनवर अविकारी, मंगलकारी, ब्रह्म बिहारी, कर्म हरें।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणांश्री वृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानोदय छंद)

सहस्रनाम का यह विधान, जो भव्य जीव करवाते हैं।
भक्ती के फल से वे मानव, अक्षय निधि शुभ पाते हैं।।
अनुक्रम से संयम धारण कर, विशद ज्ञान प्रगटाते हैं।
यह संसार असार जानकर, मोक्ष महामहल को जाते है।।

।।इत्यादि आशीर्वादः।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्

पष्ठम शतक पूजन

स्थापना

महामुनि आदिक नाम सौ, जिनवर के शुभकार।
आह्वानन जिनका यहाँ, करते मंगलकार।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महामुनिआदिशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महामुनिआदिशतनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महामुनिआदिशतनाममंत्रसमूह!अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(पद्धरि-छन्द)

प्रभु चढ़ा रहे हैं यहाँ नीर, अब जन्मादि की मिटे पीर।

हम अर्चा करते यहाँ नाथ!, दो मोक्षमार्ग में हमें साथ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महामुनिआदिशतनाममंत्रेभ्य: जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चढ़ा रहे शुभ यहाँ गंध, हो कर्मास्रव अब शीघ्र बंद।
हम अर्चा करते यहाँ नाथ!, दो मोक्षमार्ग में हमें साथ।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महामुनिआदिशतनाममंत्रेभ्य: संसार ताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत ये रहे श्वेत, पद पाएँ हम शुभ गुणोंपेत।
हम अर्चा करते यहाँ नाथ!, दो मोक्षमार्ग में हमें साथ।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महामुनिआदिशतनाममंत्रेभ्य:अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चढ़ा रहे हैं यहाँ फूल, अब काम रोग का नशे मूल।
हम अर्चा करते यहाँ नाथ!, दो मोक्षमार्ग में हमें साथ।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महामुनिआदिशतनाममंत्रेभ्य: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाते यहाँ आन, हो क्षुधा रोग की पूर्ण हान।
हम अर्चा करते यहाँ नाथ!, दो मोक्षमार्ग में हमें साथ।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महामुनिआदिशतनाममंत्रेभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ दीप जलाते यहाँ आज, अब नश जाए मम मोह राज।
हम अर्चा करते यहाँ नाथ!, दो मोक्षमार्ग में हमें साथ।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महामुनिआदिशतनाममंत्रेभ्य: महामोहान्ध्कारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जला रहे हैं श्रेष्ठ धूप, हम पद पाएँ अतिशय अनूप।
हम अर्चा करते यहाँ नाथ!, दो मोक्षमार्ग में हमें साथ।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महामुनिआदिशतनाममंत्रेभ्य: अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल यहाँ चढ़ाते हैं विशेष, हम पाएँ शिवपद हे जिनेश!।
हम अर्चा करते यहाँ नाथ!, दो मोक्षमार्ग में हमें साथ।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महामुनिआदिशतनाममंत्रेभ्य: महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह चढ़ा रहे हैं यहाँ अर्घ्य, हो विशद प्राप्त हमको अनर्घ्य
हम अर्चा करते यहाँ नाथ!, दो मोक्षमार्ग में हमें साथ।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महामुनिआदिशतनाममंत्रेभ्य: अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा दे रहे, जिन पद परम पुनीत।
सहस्रनाम की है विशद, महिमा वचनातीत।।

शान्तये शांतिधारा

दोहा- पुष्पांजलिं को यह विशद, सुरभित लाए फूल।
कर्म श्रृखला जो रही, हो जाए निर्मूल।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोह- तव पद पूजें नाथ!, भक्तिभाव से आज हम।
झुका चरण में माथ, अर्घ्य चढ़ाते हम यहाँ।।

।। इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(सार छंद)

मुनियों में जो श्रेष्ठ कहाए, 'महामुनी' प्रभु जी कहलाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।501।।

ॐ ह्रीं महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा लेकर निज को ध्याए, नाम प्रभू 'महामौनी' पाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।502।।

ॐ ह्रीं महामौनिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान किए जिन अन्तर्यामी, कहे 'महाध्यानी' जिन स्वामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।503।।

ॐ ह्रीं महाध्यानिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जित इन्द्रिय हो संयम पाए, प्रभो! 'महादम' आप कहाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।504।।

ॐ ह्रीं महादमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमा धर्म के ईश कहाए, नाम 'महाक्षम' प्रभु जी पाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।505।।

ॐ ह्रीं महाक्षमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाशील' हो अन्तर्यामी, अष्टादश शीलों के स्वामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।506।।

ॐ ह्रीं महाशीलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मेंधन को तुमने जारा, 'महायज्ञ' है नाम तुम्हारा।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।507।।

ॐ ह्रीं महायज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक पूज्यता अतिशय पाए, प्रभू 'महामख' भी कहलाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।508।।

ॐ ह्रीं महामखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाव्रतों को धारे नामी, कहे 'महाव्रतपति' हे स्वामी!।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।509।।

ॐ ह्रीं महाव्रतपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर साधू भी गुण गाए, 'मह्य' आप जगपूज्य कहाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।510।।

ॐ ह्रीं मह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय कांती को प्रभु पाए, 'महाकांतिधर' आप कहाए।

नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।511।।

ॐ ह्रीं महाकांतिधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक की प्रभुता पाई, 'अधिप' आप कहलाए भाई।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।512।।

ॐ ह्रीं अधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों को भव पार उतारें, 'महामैत्रीमय' मैत्री धारें।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।513।।

ॐ ह्रीं महामैत्रीमयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपरिमेय गुण तुमरे गाते, हे 'अमेय'! तुमको हम ध्याते।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।514।।

ॐ ह्रीं अमेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बने मोक्ष पथ के अनुगामी, 'महोपाय' कहलाए स्वामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।515।।

ॐ ह्रीं महोपायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी है प्रभु तव कल्याणी, तुम्हें 'महोमय' कहते प्राणी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।516।।

ॐ ह्रीं महोमयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करुणाकर इस जग में गाए, 'महाकारुणिक' आप कहाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।517।।

ॐ ह्रीं महाकारुणिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता हो प्रभु अन्तर्यामी, 'मंता' आप कहे जिन स्वामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।518।।

ॐ ह्रीं मंत्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लगता अतिशय प्यारा-प्यारा, 'महामंत्र' है नाम तुम्हारा।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।519।।

ॐ ह्रीं महामंत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब यतियों में श्रेष्ठ कहाए, 'महायति' प्रभु जी कहलाए।

नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।520।।

ॐ ह्रीं महायतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तोटक छन्द)

जिनदेव 'महानाद' आप कहे, सागर जैसे गंभीर रहे।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।521।।

ॐ ह्रीं श्री महानादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महाघोष' कहलाए हैं, जो दिव्य ध्वनि सुनाए हैं।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।522।।

ॐ ह्रीं श्री महाघोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'महेज्य' कहाये हैं, महती पूजा को पाए हैं।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।523।।

ॐ ह्रीं श्री महेज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महासांपति' कहलाए हैं, जग में अतिशय दिखलाए हैं।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।524।।

ॐ ह्रीं श्री महासंपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'महाध्वरधर' स्वामी, हैं ज्ञानी मुक्ती पथगामी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।525।।

ॐ ह्रीं श्री महाध्वरधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धुर्य' कहे महिमाधारी, अनगार बने हैं अविकारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।526।।

ॐ ह्रीं श्री धुर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महौदार्य' प्रभू कहलाए हैं, अतिशय उदारता पाए हैं।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।527।।

ॐ ह्रीं श्री महौदार्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'महिष्ठ' भी कहलाए, जो आगम जग को बतलाए।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।528।।

ॐ ह्रीं श्री महिष्ठवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'महात्मा' जिन स्वामी, हर जीव रहा है अनुगामी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।529।।

ॐ ह्रीं श्री महात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महसांधाम' प्रभाकारी, तव कांति रही जग में न्यारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।530।।

ॐ ह्रीं श्री महासांधाम्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'महर्षि' आप कहे, ऋषियों में अतिशय श्रेष्ठ रहे।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।531।।

ॐ ह्रीं श्री महर्षये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'महितोदय' कहलाए हो, तीर्थंकर पदवी पाए हो।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।532।।

ॐ ह्रीं श्री महितोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो 'महाक्लेशअंकुश' धारी, उपसर्ग परीषह जयकारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।533।।

ॐ ह्रीं श्री महाक्लेशांकुशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शूर'! आप क्षय कर्म किए, तब जगे धर्म के दीप हिये।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।534।।

ॐ ह्रीं श्री शूराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महाभूतपति' आप कहे, गणधर भी प्रभु तव भक्त रहे।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।535।।

ॐ ह्रीं श्री महाभूतपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'गुरू' जगत् के कहलाए, न पार कोई महिमा पाए।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।536।।

ॐ ह्रीं श्री गुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महापराक्रम' के धारी, हैं मंगलमय मंगलकारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।537।।

ॐ ह्रीं श्री महापराक्रमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने 'अनन्त' गुण प्रगटाए, न महिमा कोई कह पाए।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।538।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महाक्रोधरिपु' के हन्ता, कहलाए अतिशय भगवन्ता।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।539।।

ॐ ह्रीं श्री महाक्रोधरिपवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वशी' आप अतिशयकारी, वश किए स्वयं को अविकारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।540।।

ॐ ह्रीं श्री वशिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

नाम आपका श्रेष्ठतम, 'महाभवाब्धिसंतारि'।
मोक्ष महल में जो बसे, चारों सुगति निवारि।।541।।

ॐ ह्रीं श्री महाभवाब्धिसंतारिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामोहाद्रिसूदन' बने, मोहारि को नाश।
परम सिद्ध पद पा लिए, कीन्हे कर्म विनाश।।542।।

ॐ ह्रीं श्री महामोहद्रिसूदनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय के कोष हो, 'महागुणाकर' आप।
धर्म निधी हमको मिले, करें नाम का जाप।।543।।

ॐ ह्रीं श्री महागुणकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमा आदि गुण धारते, 'क्षान्त' आपका नाम।
गुण पाने तुम सम विशद, चरणों करें प्रणाम।।544।।

ॐ ह्रीं श्री क्षान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए परमात्मा, 'महायोगीश्वर' आप।
नाम आपका हम जपें, नाश किए सब पाप।।545।।

ॐ ह्रीं श्री महायोगीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे आपके नित्य ही, 'शमी' शांत परिणाम।

शांती पाने के लिए, बारम्बार प्रणाम।।546।।

ॐ ह्रीं श्री शमिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान किए हो श्रेष्ठतम, 'महाध्यानपति' नाथ!।
ध्यान शुभम् हम कर सकें, चरण झुकाएँ माथ।।547।।

ॐ ह्रीं श्री महाध्यानपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म अहिंसा के धनी, प्रभो 'ध्यातमहाधर्म'।
मुक्ती पाने के लिए, करें सदा सत् कर्म।।548।।

ॐ ह्रीं श्री ध्यातमहाधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धारण करके अपने, पञ्च 'महाव्रत' श्रेष्ठ।
पार हुए संसार से, पाया धर्म यथेष्ट।।549।।

ॐ ह्रीं श्री महाव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकर्मअरिहा' किए, कर्म सुअरि का नाश।
मुक्त हुए वसु कर्म से, कीन्हें ज्ञान प्रकाश।।550।।

ॐ ह्रीं श्री महाकर्मारिघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वरूप को जानकर, बने प्रभू 'आत्मज्ञ'।
गुण अनन्त पाए प्रभो!, अतिशय हुए गुणज्ञ।।551।

ॐ ह्रीं श्री आत्मज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महादेव' हो आप जिन, सब देवों के देव।
सब इन्द्रों से पूज्य तुम, करें चरण की सेव।।552।।

ॐ ह्रीं श्री महादेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाये हो ऐश्वर्य सब, है 'महेशिता' नाम।
कृपा पात्र बनकर रहें, शत्-शत् करें प्रणाम।।553।।

ॐ ह्रीं श्री महेशित्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वक्लेशापह' प्रभो!, नाशे सर्व क्लेश।
मम क्लेश उपशांत हों, पूजें तुम्हें जिनेश।।554।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वक्लेशापहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किए साधना श्रेष्ठतम, 'साधू' आप महान।

संयम का पालन करें, मिले मुझे यह ज्ञान॥555॥

ॐ ह्रीं श्री साधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व गुणों की खान हैं, 'सर्वदोषहर' देव।
निज गुण पाने के लिए, वन्दू तुम्हें सदैव॥556॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषहराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर्त्ता पापों के प्रभू, 'हर' पाए प्रभु नाम।
कर्म नाशकर आपने, पाया है निज धाम॥557॥

ॐ ह्रीं श्री हराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण असंख्य धारी प्रभू, कहलाए 'असंख्येय'।
हम भी वह गुण पा सकें, मेरा है यह ध्येय॥558॥

ॐ ह्रीं श्री असंख्येयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रमेयात्मा' हैं प्रभू, गणना के न योग्य।
वह गुण नाशे आपने, जो सब रहे अयोग्य॥559॥

ॐ ह्रीं श्री अप्रमेयात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांत स्वरूपी हैं प्रभू, जिन 'शमात्मा' नाम।
शांत भाव से हर समय, करता रहूँ प्रणाम॥560॥

ॐ ह्रीं श्री शमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-चामर)

'प्रशमाकर' तव नाम रहा, अतिशय कारी श्रेष्ठ अहा
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥561॥

ॐ ह्रीं श्री प्रशमाकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वयोगीश्वर' आप कहे, सब मुनियों में श्रेष्ठ रहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥562॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वयोगीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अचिन्त्य'! महिमाधारी, तुम हो अतिशय गुणकारी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥563॥

ॐ ह्रीं श्री अचिन्त्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'श्रुतात्मा' कहलाए, श्रुत स्वरूपता को पाए।

नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥564॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विष्टरश्रव' जिनदेव कहे, सर्व लोक में श्रेष्ठ रहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥565॥

ॐ ह्रीं श्री विष्टरश्रवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दान्तात्मा' जिन कहलाए, विजय आप निज पर पाए।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥566॥

ॐ ह्रीं श्री दान्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'दमतीर्थेश' रहे, सकल परीषहजयी कहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥567॥

ॐ ह्रीं श्री दमतीर्थेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगात्मा' शुभ नाम अहा, प्रभू आपका श्रेष्ठ रहा।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥568॥

ॐ ह्रीं श्री योगात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानसर्वग' तुम हे स्वामी!, मोक्ष महल के अनुगामी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥569॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानसर्वगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रधान'! अतिशय धारी, महिमा जग से है न्यारी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥570॥

ॐ ह्रीं श्री प्रधानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'आत्मा' कहलाए, निज में निजता को पाए।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥571॥

ॐ ह्रीं श्री आत्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रकृति' आप कहाते हो, निज स्वरूपता पाते हो।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥572॥

ॐ ह्रीं श्री प्रकृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परम' प्रभू हैं लोकजयी, सर्व श्रेष्ठ हैं कर्मक्षयी।

नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥573॥

ॐ ह्रीं श्री परमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमोदय' तुम हो स्वामी, घट-घट के अन्तर्यामी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥574॥

ॐ ह्रीं श्री परमोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर 'प्रक्षीणबंध' कहे, कर्म बन्ध से हीन रहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥575॥

ॐ ह्रीं श्री प्रक्षीणबंधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कामारी' कहलाए, काम शत्रु पर जय पाये।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥576॥

ॐ ह्रीं श्री कामारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'क्षेमकृत्' हो स्वामी, क्षेम किया करते नामी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥577॥

ॐ ह्रीं श्री क्षेमकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेमशासन' जिन आप रहे, मंगलमय भगवन्त कहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥578॥

ॐ ह्रीं श्री क्षेमशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणव' आपका नाम अहा, प्राणी मात्र से प्रेम रहा।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥579॥

ॐ ह्रीं श्री प्रणवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणय' आप कहलाते हो, मंत्र रूपता पाते हो।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥580॥

ॐ ह्रीं श्री प्रणयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

मंगलकारी 'प्राण, नाम रहा प्रभू का शुभम्।
दिए जगत को त्राण, दीन बन्धु कहलाए हैं॥581॥

ॐ ह्रीं श्री प्राणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्षक जग के ईश, प्रभू आप 'प्राणद' कहे।
झुका रहे हैं शीश, प्राणी चरणों में सभी॥582॥

ॐ ह्रीं श्री प्राणदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों के भगवान, 'प्रणतेश्वर' शुभ नाम है।
सारा रहा जहान, चरण शरण का दास यह॥583॥

ॐ ह्रीं श्री प्रणतेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाये सम्यक् ज्ञान, हे 'प्रमाण' ज्ञानी प्रभो!।
है ऊँचा स्थान, सर्व लोक में आपका॥584॥

ॐ ह्रीं श्री प्रमाणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ 'दक्ष' है नाम, स्वर्ग कला में 'दक्ष' हो।
बारम्बार प्रणाम, दक्ष बनूँ दो दक्षिणा॥586॥

ॐ ह्रीं श्री दक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दक्षिण' विशद जिनेश, जीवन दाता आप हो।
पाने को निज देश, चरण वन्दना हम करें॥587॥

ॐ ह्रीं श्री दक्षिणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व गुणों के ईश, तुम 'अध्वर्य' जिनेश हो।
झुका रहे हम शीश, अतः आपके चरण में॥588॥

ॐ ह्रीं श्री अध्वर्यवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अध्वर' पाया नाम, शिवपथ के राही बने।
जिन के ऋजु परिणाम, चरण वन्दना हम करें॥589॥

ॐ ह्रीं श्री अध्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए शुभ 'आनन्द', सुख अनन्त के कोष प्रभु।
नाश किए सब द्वन्द, राग-द्वेष अरु मोह तज॥590॥

ॐ ह्रीं श्री आनन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के नाथ!, 'नन्दन' आप जिनेश हो।
चरण झुकाएँ माथ, दाता तीनों लोक के॥591॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाते हैं 'नन्द', सुख-शांती के कोष प्रभु।
मेटे सारे द्वन्द, निज स्वभाव में खो गये॥592॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वन्द्य' कहाए आप, वन्दनीय प्रभु लोक में।
नाशे सारे पाप, विशद शुद्ध आदर्श पा॥593॥

ॐ ह्रीं श्री वंद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब दोषों से हीन, हे 'अनिन्द्य'! तुम लोक में।
अतिशय ज्ञान प्रवीण, गुण अनन्त के पुञ्ज हो॥594॥

ॐ ह्रीं श्री अनिंद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग वन्दन के योग्य, 'अभिनन्दन' तव नाम है।
सारे रहे अयोग्य, और लोक में देव जो॥595॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण में किया विनाश, 'कामह' तुमने कर्म का।
लगी हमारी आस, बनें आप जैसे प्रभो!॥596॥

ॐ ह्रीं श्री कामघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग में इष्ट, प्रभु 'कामद' है नाम तव।
नशते सर्व अनिष्ट, नाम जाप से आपके॥597॥

ॐ ह्रीं श्री कामदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमयी जिनेन्द्र, 'काम्य' आप कमनीय हो।
करते इन्द्र नरेन्द्र, तव चरणों में वन्दना॥598॥

ॐ ह्रीं श्री काम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वांछित फल दातार, 'कामधेनु' कहलाए तव।
वन्दन बारम्बार, इच्छा मम पूरण करो॥599॥

ॐ ह्रीं श्री कामधेनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरि का किया विनाश, नाम 'अरिञ्जय' आपका।
कीन्हा लोक प्रकाश, विशद ज्ञान को प्राप्त कर॥600॥

ॐ ह्रीं श्री अरिंजयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

महा मुन्यादिक नाम रहे शुभ, अन्तिम रहा अरिञ्जय नाम।
भाव सहित हम ध्याते जिनको, करते बारम्बार प्रणाम॥
सौ नामों के द्वारा श्री जिन, का यह किया विशद गुणगान।
अन्तिम यही भावना भाते, पाएँ हम भी पद निर्वाण॥6॥

ॐ ह्रीं महामुन्यादिशत नामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- महामुन्यादिक नाम शत, पाए श्री जिनराज।
जयमाला गाते यहा, जिन चरणों में आज॥

चौबोला छन्द

शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, अनन्त चतुष्टय के धारी।
अष्ट प्रातिहार्यों से शोभित, श्री जिनेन्द्र हैं अविकारी॥
देव रचित पार्थिव है पहला, 'तरु अशोक' है जिसका नाम।
देहाभा से परम प्रकाशित, 'भामण्डल' शोहे अभिराम॥1॥
रत्न जड़ित 'सिहांसन' पर प्रभु , चउ अंगुल ऊपर सोहें।
'चौंसठ चँवर' ढुरें जिन आगे, भव्यों के मन को मोहें॥
तीन लोक के नाथ! कहाए 'क्षत्रत्रय' यह बतलाते।
देव प्रफुल्लित होकर नभ से 'पुष्प अनेकों बरसते'॥2॥
मोहनींद से जागो प्राणी, 'देव दुन्दुभि' बजवाते।
'दिव्य देशना' सुनकर प्रभु की, भव्य जीव खुशियाँ पाते॥
'चौंतिस शुभ अतिशय' के धारी, जग में पूजे जाते हैं।
सुर नर मुनि सब जिनके चरणों, सादर शीश झुकाते हैं॥3॥
नाथ! लोक में भेद ज्ञान बिन, जड़ वस्तू हमने चाही।
भाव जगा अब मेरे उर में, बनें मोक्ष के हम राही॥
दर्श किया जब से प्रभु हमने, आप स्वप्न में आते हैं।
आँखें बन्द करें या खोलें, दर्श आपका पाते हैं॥4॥

दोहा- प्रभू आपके नाम की, महिमा अगम अपार।

वर्णन की सामर्थ ना, करो भक्ति स्वीकार।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री महामुनिआदिशतनाममंत्रेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानोदय छंद)

सहस्रनाम का यह विधान जो, भव्य जीव करवाते हैं।
भक्ती के फल से वे मानव, अक्षय निधि शुभ पाते हैं।।
अनुक्रम से संयम धारण कर, 'विशद' ज्ञान प्रगटाते हैं।
यह संसार असार जानकर, मोक्ष महामहल को जाते हैं।।

।।इत्यादि आशीर्वाद:।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्

सप्तम शतक पूजन

स्थापना

दोहा- असंस्कृतादि हैं विशद, जिन के नाम विशेष।
आह्वान करते हृदय, तिष्ठो श्री जिनेश।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री असंस्कृतसुसंस्काारदिशतनाममंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(ताटंक छन्द)

आतम अनुभव का निर्मल जल, निज भावों से लाए हैं।
जन्म जरादिक रोग नाश यह, करने तव पद आए हैं।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाना है।
छोड़ के यह संसार वास अब, हम को भी शिव पाना है।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्य: जन्म जरा

मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ आतम अनुभव का चंदन, नाथ! चड़ाने लाए हैं।
भवाताप का नाश होय प्रभु , पद अर्चा को आए हैं।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाना है।
छोड़ के यह संसारश्री वास अब, हम को भी शिव पाना है।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्य: संसार ताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धोकर अक्षत निज अनुभव के, पूजा करने लाए हैं।
नाथ! चरण अक्षय पद पाने, भाव बनाकर आए हैं।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाना है।
छोड़ के यह संसारश्री वास अब, हम को भी शिव पाना है।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्य: अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धातम के विविध पुष्प यह, आज चढ़ाने लाए हैं।
काम रोग विध्वंश शीघ्र, प्रभु चरण शरण में आए हैं।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाना है।
छोड़ के यह संसारश्री वास अब, हम को भी शिव पाना है।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्य: कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य बनाए निज गुण के, प्रभु शरण आपकी आए हैं।
हो क्षुधा रोग उपशांत प्रभो!, सदियों से सतत सताए हैं।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाना है।
छोड़ के यह संसारश्री वास अब, हम को भी शिव पाना
ह । । 5 । ।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्य: क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम आत्म सुगुण प्रगटित करने, यह दीप जलाकर लाए हैं।
मिथ्या तम छाया जीवन में, हम उसे नशाने आए हैं।।

श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाना है।
छोड़ के यह संसारश्री वास अब, हम को भी शिव पाना है॥6॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः महामोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्म आवरण नाश हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं।
है अष्ट कर्म का कष्ट हमें, वह कष्ट मिटाने आए हैं॥
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाना है।
छोड़ के यह संसारश्री वास अब, हम को भी शिव पाना है॥7॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चेतन की निधि भूल रहे, उसको प्रगटाने आए हैं।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, फल सरस चढ़ाने लाए हैं॥
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाना है।
छोड़ के यह संसारश्री वास अब, हम को भी शिव पाना है॥8॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

निज आतम में गुण हैं अनन्त, वह भूल के जग भटकाए हैं।
अब अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा, वह गुण पाने को आए हैं॥
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाना है।
छोड़ के यह संसारश्री वास अब, हम को भी शिव पाना है॥9॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सुमति प्राप्त होती विशद, नाथ! आप के द्वार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार॥
॥ शान्तये शांतिधारा॥

दोहा- श्री जिन चरण सरोज में, पुष्पांजलि करन्त।
त्रिभुवन में शांती बढ़े, होवे सौख्य अनन्त॥
॥ दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

सोरठा- अर्घ्य चढ़ाएँ महान, हम सप्तम शत नाम के।
होय जगत कल्याण, श्री जिन की अर्चा किए॥
(चाल छन्द)

'असंस्कृत संस्कार' कहाए, प्रभु सारे पाप नशाए।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥601॥

ॐ ह्रीं असंस्कृतसुसंस्काराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अप्राकृत' जिन गाए, जो ज्ञान स्वभाविक पाए।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥602॥

ॐ ह्रीं अप्राकृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'वैकृतान्तकृत' स्वामी, इस जग के अन्तर्यामी।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥603॥

ॐ ह्रीं वैकृतांतकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अन्तःकृत' जिन कहलाते, जो घाती कर्म नशाते।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥604॥

ॐ ह्रीं अंतकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कहे 'कान्तगु' भाई, होते जो मोक्ष प्रदायी।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥605॥

ॐ ह्रीं कांतगवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कान्त' कहे जगनामी, होते त्रिभुवन के स्वामी।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥606॥

ॐ ह्रीं कांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'चिन्तामणि' हैं भाई, होते चिन्तित फलदायी।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥607॥

ॐ ह्रीं चिन्तामणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'अभीष्टद' स्वामी, जो हुए मोक्ष पथगामी।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥608॥

ॐ ह्रीं अभीष्टदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अजित'! कर्म के जेता, कहलाए कर्म विजेता।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥609॥

ॐ ह्रीं अजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'जित कामारि' कहाए, जो विजय काम पर पाए।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥610॥

ॐ ह्रीं जितकामारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अमित' आप कहलाए, न माप कोई भी पाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥611॥

ॐ ह्रीं श्री अमिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'अमितशासन' कहलाए, अनुपम पदवी को पाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥612॥

ॐ ह्रीं श्री अमितशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितक्रोध कहाए स्वामी, जीते कषाय जग नामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥613॥

ॐ ह्रीं श्री जितक्रोधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'जितामित्र'! अविकारी, तुम जीते जगती सारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥614॥

ॐ ह्रीं श्री जितामित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितक्लेश' आप हो स्वामी, तुम हो जिन अन्तर्यामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥615॥

ॐ ह्रीं श्री जितक्लेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कहे 'जितान्तक' भाई, मृत्यु जीते दुखदायी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥616॥

ॐ ह्रीं श्री जितांतकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'जिनेन्द्र' अविकारी, इस जग में मंगलकारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥617॥

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'परमानन्द'! सुखारी, हो जन-जन के हितकारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥618॥

ॐ ह्रीं श्री परमानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'मुनीन्द्र' कहलाए, मुनियों के स्वामी गाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥619॥

ॐ ह्रीं श्री मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दुन्दुभिस्वन' हे स्वामी!, त्रिभुवन पति अन्तर्यामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥620॥

ॐ ह्रीं श्री दुंदुभिस्वनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको 'महेन्द्रवंद्य' जानो, जग पूज्य प्रभू पहिचानो।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥621॥

ॐ ह्रीं श्री महेन्द्रवंद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगीन्द्र' हुए अविकारी, इस जग में करुणाकारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥622॥

ॐ ह्रीं श्री योगीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'यतीन्द्र' कहलाए, इस जग में युक्ती पाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥623॥

ॐ ह्रीं श्री यतीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'नाभीनन्दन'! स्वामी, हो गये मोक्ष पथ गामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥624॥

ॐ ह्रीं श्री नाभिनंदनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नाभेय' आप कहलाए, आदिम तीर्थकर गाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥625॥

ॐ ह्रीं श्री नाभेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नाभिजा' कर्म के नाशी, रवि केवलज्ञान प्रकाशी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥626॥

ॐ ह्रीं श्री नाभिजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'अजात' हे स्वामी!, हो जन्म रहित शिवगामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥627॥

ॐ ह्रीं श्री अजाताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुव्रत' सुव्रत के धारी, हे महाव्रती! अनगारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥628॥

ॐ ह्रीं श्री सुव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'मनु'! सुपथ के दाता, हे कर्मभूमि! विज्ञाता।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥629॥

ॐ ह्रीं श्री मनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उत्तम' से उत्तम गाए, त्रेलोक्यपती कहलाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥630॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्री छन्द)

हे जिन! आप 'अभेद्य' कहाए, तुम्हें भेद कोई न पाए।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥631॥

ॐ ह्रीं श्री अभेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अनत्यय' आप कहाए, नष्ट नहीं कोई कर पाए।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥632॥

ॐ ह्रीं श्री अनत्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी श्रेष्ठ 'अनाश्वान' गाए, महिमा पार न कोई पाए।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥633॥

ॐ ह्रीं श्री अनाश्वते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिक' आपको कहते प्राणी, ऐसा मान रही जिनवाणी।

नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥634॥

ॐ ह्रीं श्री अधिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिगुरु' नाम आपने पाया, जन-जन को सद्मार्ग दिखाया।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥635॥

ॐ ह्रीं श्री अधिगुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुगी' आपकी है शुभ वाणी, प्राणी मात्र की है कल्याणी।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥

ॐ ह्रीं श्री सुगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सुमेध'! बुद्धी के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥637॥

ॐ ह्रीं श्री सुमेधसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'विक्रमी' जग में आले, सर्व लोक में आप निराले।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥638॥

ॐ ह्रीं श्री विक्रमिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वामी' आप प्रभो! कहलाए, रक्षक सर्व जहाँ में गाए।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥639॥

ॐ ह्रीं श्री स्वामिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दुराधर्ष' कलाए स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी!।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी!॥640॥

ॐ ह्रीं श्री दुराधर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-मोतियादाम)

'निरुत्सुक' कहलाए जिनराज, सभी जीवों को तुम पर नाज।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥641॥

ॐ ह्रीं श्री निरुत्सुकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप हो सारे जग को इष्ट, अतः कहलाए आप 'विशिष्ट'।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥642॥

ॐ ह्रीं श्री विशिष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिष्टभुक्' कहते हैं कई लोग, शिष्टता का पाये संयोग।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।643।।
ॐ ह्रीं श्री शिष्टभुजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिष्ट' है प्रभु का अतिशय नाम, शिष्ट हो करते चरण प्रणाम।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।644।।
ॐ ह्रीं श्री शिष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य के 'प्रत्यय' हो हे नाथ!, झुकाते तव चरणों हम माथ।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।645।।
ॐ ह्रीं श्री प्रत्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! कहलाए 'कामना' आप, दर्श कर मिटते हैं अभिशाप।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।646।।
ॐ ह्रीं श्री कामनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु! 'अनघा' हो पाप विहीन, पुण्य के फल में रहते लीन।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।647।।
ॐ ह्रीं श्री अनघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेमि' है प्रभो! आपका नाम, करें हम चरणों विशद प्रणाम।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।648।।
ॐ ह्रीं श्री क्षेमिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत के 'क्षेमंकर' जिनराज, चरण में झुकता सकल समाज।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।649।।
ॐ ह्रीं श्री क्षेमंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'अक्षय' हो क्षय से हीन, लोक में रहते हो स्वाधीन।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।650।।
ॐ ह्रीं श्री अक्षयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू हो 'क्षेमधर्मपति' आप, नशाने वाले सारे पाप।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।651।।
ॐ ह्रीं श्री क्षेमधर्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षमी' हो जग में आप विशेष, क्षमा का देते हो संदेश।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।652।।
ॐ ह्रीं श्री क्षमिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम हो जग में 'अग्राह्य', जगत में रहते जग से बाह्य।
करें हम नाममंत्र का जाप, जाश हों मेरे सारे पाप।।653।।
ॐ ह्रीं श्री अग्राह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप का नाम 'ज्ञाननिग्राह्य' नहीं हो अज्ञानी के ग्राह्य।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।654।।
ॐ ह्रीं श्री ज्ञाननिग्रह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए 'ज्ञानसुगम्य' जिनेश, जानते ज्ञानी तुम्हें विशेष।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।655।।
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानगम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निरुत्तर' तुम हो प्रभू विशेष, नहीं तुम सम कोइ और जिनेश।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।656।।
ॐ ह्रीं श्री निरुत्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'सुकृति' हो अतिशयकार, श्रेष्ठ हो सुकृति के आधार।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।657।।
ॐ ह्रीं श्री सुकृतिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धातु' हो तुम हे जिन! भगवन्त, शब्द के ज्ञाता आप अनन्त।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।658।।
ॐ ह्रीं श्री धातवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'इज्यार्ह' कहें कई लोग, पूज्य हो तुम पूजा के योग।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।659।।
ॐ ह्रीं श्री इज्यार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुनय' तुम नय के हो सापेक्ष, कुनय से पूर्ण रहे निरपेक्ष।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।660।।
ॐ ह्रीं श्री सुनयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्री छन्द)

जिनवर 'श्रीनिवास' कहलाए, श्री में प्रभु जी धाम बनाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।661।।

ॐ ह्रीं श्री सुनिवासाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चतुरानन' ब्रह्मा तुम स्वामी, मोक्ष मार्ग के हो अनुगामी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।662।।

ॐ ह्रीं श्री चतुराननाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चतुर्वक्त्र' तुमको सुर देखें, अपना स्वामी प्रभु जी लेखें।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।663।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्वक्त्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'चतुरास्य'! करें पद वन्दन, जन्म-जरादी का हो खण्डन।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।664।।

ॐ ह्रीं श्री चतुरास्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'चतुर्मुख' आप कहाए, चउ दिशि दर्शन सबने पाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।665।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्मुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यात्मा' प्रभु सत्य स्वरूपी, आप कहाए हो चिद्रूपी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।666।।

ॐ ह्रीं श्री सत्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यविज्ञान' आप कहलाए, अतिशय केवलज्ञान जगाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।667।।

ॐ ह्रीं श्री सत्यविज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यवाक्' कहलाते स्वामी, वाक् सुधामृत देते नामी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।668।।

ॐ ह्रीं श्री सत्यवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सत्यशासन' कहलाए, भवि जीवों के भाग्य जगाये।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।669।।

ॐ ह्रीं श्री सत्यशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्याशीष' है नाम तुम्हारा, सर्व जहाँ में अपरम्पारा।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।670।।

ॐ ह्रीं श्री सत्याशिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यसंधान' आप कहलाए, तीन लोक की प्रभुता पाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।671।।

ॐ ह्रीं श्री सत्यसंधानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्य' नाम पाए तुम स्वामी, हुए जहाँ में अन्तर्यामी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।672।।

ॐ ह्रीं श्री सत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यपरायण' आप कहाए, जन-जन को सन्मार्ग दिखाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।673।।

ॐ ह्रीं श्री सत्यपरायणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थेयान्' स्थिर हो स्वामी, अविकारी हे अन्तर्यामी!।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।674।।

ॐ ह्रीं श्री स्थेयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थवीयान्' महिमा के धारी, तीन लोक में करुणाकारी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।675।।

ॐ ह्रीं श्री स्थवीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नेदियान्' प्रभु आप कहाए, अतिशय महिमा को दिखलाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।676।।

ॐ ह्रीं श्री नेदीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दवीयान्' है नाम तुम्हारा, सारे जग का संकटहारा।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।677।।

ॐ ह्रीं श्री दवीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'दूरदर्शन' कहलाते, दूर से दर्शन प्राणी पाते।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।678।।

ॐ ह्रीं श्री दूरदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अणोरणीयान्' कहाते, नहीं दृष्टिगोचर हो पाते।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥679॥

ॐ ह्रीं श्री अणोरणीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनणू' कहते तुमको प्राणी, ऐसी है शुभ आगम वाणी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥680॥

ॐ ह्रीं श्री अनणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

'गुरुराद्यगरीयसा' गाए, इस जग के गुरू कहाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥681॥

ॐ ह्रीं श्री गरीयसमाद्यगुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदायोग' हैं आले, चेतन में रमने वाले।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥682॥

ॐ ह्रीं श्री सदायोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदाभोग' हैं स्वामी, हैं प्रातिहार्य अनुगामी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥683॥

ॐ ह्रीं श्री सदाभोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदातृप्त' कहलाते, तृप्ती भोगों से पाते।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥684॥

ॐ ह्रीं श्री सदातृप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सदागती' के धारी, पञ्चम गति प्यारी-प्यारी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥686॥

ॐ ह्रीं श्री सदागतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदासौख्य' शुभ पाया, यह है संयम की माया।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥687॥

ॐ ह्रीं श्री सदासौख्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'सदाविद्य' जिन स्वामी, मुक्ती पथ के अनुगामी।

प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥688॥

ॐ ह्रीं श्री सदाविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कहे 'सदोदय' भाई, यह है प्रभु की प्रभुताई।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥689॥

ॐ ह्रीं श्री सदोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'सुघोष' कहलाए, शुभ दिव्य ध्वनि सुनाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥690॥

ॐ ह्रीं श्री सुघोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुमुख' के धारी, छवि सुन्दर अतिशयकारी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥691॥

ॐ ह्रीं श्री सुमुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सौम्य' मूर्ति कहलाए, जिन श्रेष्ठ सौम्यता पाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥692॥

ॐ ह्रीं श्री सौम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सुखद'! सुखों के धारी, सुखदायी हो अनगारी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥693॥

ॐ ह्रीं श्री सुखदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुहित' सु हितकर गाए, जो शास्वत सुख उपजाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥694॥

ॐ ह्रीं श्री सुहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'सुहृत' हितू कहलाए, जग हित करने को आए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥695॥

ॐ ह्रीं श्री सुहृदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'सुगुप्त' जिन स्वामी, तव चरणों में प्रणमामी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥696॥

ॐ ह्रीं श्री सुगुप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'गुप्तिभृत'! गाए, निज आतम प्रभुता पाए।

प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥697॥

ॐ ह्रीं श्री गुप्तिभृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम 'गोप्ता' पाए, रक्षक जग के कहलाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥698॥

ॐ ह्रीं श्री गोप्त्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकाध्यक्ष' कहाते, जो व्याधि उपाधि नशाते।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥699॥

ॐ ह्रीं श्री लोकाध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कहे 'दमेश्वर' भाई, निज के ऊपर जय पाई।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥700॥

ॐ ह्रीं श्री दमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

श्री असंस्कृत संस्कार आदि शुभ, रहा दमेश्वर अंतिम नाम।
भाव सहित हम ध्याते इनको, करते बारम्बार प्रणाम॥
सौ नामों के द्वारा श्री जिन, का यह किया विशद गुणगान।
अन्तिम यही भावना भाते, पाएँ हम भी पद निर्वाण॥7॥

ॐ ह्रीं असंस्कृत संस्कारादि शत नामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- नाथ! आपके नाम का, करना हैं अब जाप।
जयमाला गाते विशद, कट जाएँ सब पाप॥

(मोतियादाम छन्द)

प्रभू हैं अतिशय महिमा वन्त, कहाते अतः आप अर्हन्त।
जगाते भव्य जीव श्रद्धान, प्राप्त फिर करते सम्यक ज्ञान॥1॥
विशद होकर के चारितवान, पाएँ रत्नत्रय सुनिधि महान।
रहे रागादिक दोष विहीन, होय निज आत्म ध्वान में लीन॥2॥
महाव्रत धारी हो ऋषिराज, कहाते जैन धर्म के ताज।

कहे ऋषिराज समितियों वान, गुप्तियाँ पाले संत महान॥3॥
पालते षट् आवश्यक आप, नशाते हैं अपने सब पाप।
सप्त गुण पालें अपने अन्य, होय ऋषिवर का जीवन धन्य॥4॥
पालते ऋषिवर पंचाचार, सुपद पाते हैं वे आचार्य।
मूलगुण जिनके हैं पच्चीस, उपाध्याय होते पूज्य ऋशीष॥5॥
प्राप्त करके जो शुद्धोपयोग, नाश करते हैं भव का रोग।
जगाते हैं प्रभु केवलज्ञान, करें जो जग जन का कल्याण॥6॥
देशना देते प्रभू महान, जगाएँ वीतराग विज्ञान।
प्राप्त करते जो पद निर्वाण, सिद्ध पद पावें आप महान॥7॥
करें फिर सिद्ध शिला पर वास, ध्यान कर होवे पूरी आस।
अतः हम करते जिन गुणगान, प्राप्त हो हमको शिव सोपान॥8॥

दोहा- विशद ज्ञान पाए प्रभू, जगती पति जगदीश।
नाथ! आपके चरण में, भक्त झुकाते शीश॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यंनिर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानोदय छंद)

सहस्रनाम का यह विधान, जो भव्य जीव करवाते हैं।
भक्ती के फल से वे मानव, अक्षय निधि शुभ पाते हैं॥
अनुक्रम से संयम धारण कर, विशद ज्ञान प्रगटाते है।
यह संसार असार जानकर, मोक्ष महल को जाते है॥

॥इत्यादि आशीर्वादः॥ पुष्पांजलि क्षिपेत्

अष्टम शतक पूजन

स्थापना

वृहद् वृहस्पति आदिशत्, श्री जिन के जो नाम।
जिनका आह्वानन विशद, है पाने शिव धाम॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री बृहद् वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री बृहद् वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री बृहद् वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(मोतियादाम-छन्द)

नीर यह चढ़ा रहे भगवान, रोग जन्मादिक नशे प्रधान।
पूजते जिनवर के शत्नाम, प्राप्त हो हमको भी शिवधाम॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री बृहद् वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते गंध सुगन्धी वान, मिटे मेरा भव रुज भगवान।
पूजते जिनवर के शत्नाम, प्राप्त हो हमको भी शिवधाम॥2॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री बृहद् वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते अक्षत अक्षय वान, प्राप्त हो अक्षय सुपद महान।
पूजते जिनवर के शत्नाम, प्राप्त हो हमको भी शिवधाम॥3॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री बृहद् वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प से आए परम सुवास, कामरुज का हो जाए नाश।
पूजते जिनवर के शत्नाम, प्राप्त हो हमको भी शिवधाम॥4॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री बृहद् वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुचरु यह लाए हम रसदार, क्षुधा रुज का होवे संहार।
पूजते जिनवर के शत्नाम, प्राप्त हो हमको भी शिवधाम॥5॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री बृहद् वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप यह धृत का लिया प्रजाल, मोह का नशे पूर्णतः जाल।
पूजते जिनवर के शत्नाम, प्राप्त हो हमको भी शिवधाम॥6॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री बृहद् वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः महामोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में खेने लाए धूप, कर्म नश पाएँ सुपद अनूप।
पूजते जिनवर के शत्नाम, प्राप्त हो हमको भी शिवधाम॥7॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री बृहद् वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल चढ़ा रहे भगवान, मोक्ष फल पाएँ महति महान।
पूजते जिनवर के शत्नाम, प्राप्त हो हमको भी शिवधाम॥8॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री बृहद् वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाकर पाएँ सुपद अनर्घ्य।
पूजते जिनवर के शत्नाम, प्राप्त हो हमको भी शिवधाम॥9॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री बृहद् वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती पाने के लिए, देते शांतीधार।
ऋषभ देव जिन के चरण, अतिशय बारम्बार॥

॥शांतयेशांतिधारा॥

दोहा- पुष्पांजलि अर्पित करें, कर जिन प्रति स्नेह।
पाएँ अब शुद्धात्म रस, हम भी निःसन्देह॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

दोहा- जग में रहे प्रधान, जिनकी महिमा है आगम।
करें विशद गुणगान, हम अष्टम शत नाम का।।

।। इति मण्डलस्यो परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(सुखमा छन्द)

'वृहद् बृहस्पति' आप कहाए, सुरपति मिलकर शरण में आए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।701।।

ॐ ह्रीं श्री वृहदबृहस्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'वाग्मी'! आप कहाए, श्रेष्ठ वचन सुनने तव आए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।702।।

ॐ ह्रीं श्री वाग्मिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वाचस्पति' हे अतिशयकारी!, सर्व जहाँ में मंगलकारी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।703।।

ॐ ह्रीं श्री वाचस्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'उदारधी'! जग के स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी!।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।704।।

ॐ ह्रीं श्री उदारधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ 'मनीषी' प्रभु कहलाए, अतिशय केवल ज्ञान जगाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।705।।

ॐ ह्रीं श्री मनीषिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धिषण' आपको कहते भाई, प्रभु सर्वज्ञता तुमने पाई।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।706।।

ॐ ह्रीं श्री धिषणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू आप 'धीमान्' कहाए, कौन आपकी महिमा गाए?।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।707।।

ॐ ह्रीं श्री धीमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शेमुषीश' हो जग के त्राता, अतिशयकारी भाग्य विधाता।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।708।।

ॐ ह्रीं श्री शेमुषीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गिरांपति' प्रभु जी कहलाए, सब भाषामय ध्वनी सुनाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।709।।

ॐ ह्रीं श्री गिरांपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकरूप' प्रभु आप कहाए, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर गाये।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।710।।

ॐ ह्रीं श्री नैकरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नयोत्तुंग' तुमको सब जानें, नय के ज्ञाता तुमको मानें।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।711।।

ॐ ह्रीं श्री नयोत्तुंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकात्मा' त्रिभुवन के स्वामी, गुण पाये तुमने प्रभु नामी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।712।।

ॐ ह्रीं श्री नैकात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकधर्मकृत' आप कहाए, धर्म अनेक वस्तु में गाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।713।।

ॐ ह्रीं श्री नैकधर्मकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अविज्ञेय' जिन प्रभु कहलाए, महिमा कोई जान न पाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।714।।

ॐ ह्रीं श्री अविज्ञेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रतर्क्यात्मा' तुम स्वामी, तर्क रहित हो अन्तर्यामी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।715।।

ॐ ह्रीं श्री अप्रतर्क्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'कृतज्ञ'! तव महिमा न्यारी, जन-जन के हो करुणाकारी।

पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।716।।

ॐ ह्रीं श्री कृतज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृतलक्षण' है नाम तुम्हारा, लगता सबको प्यारा-प्यारा।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।717।।

ॐ ह्रीं श्री कृतलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानगर्भ' स्वामी कहलाए, निज का अतिशय ज्ञान जगाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।718।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दयागर्भ' त्रिभुवन में गाए, प्राणी मात्रा पर दिया दिखाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।719।।

ॐ ह्रीं श्री दयागर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रत्नगर्भ' महिमा के धारी, वर्षे रत्न गर्भ में भारी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।720।।

ॐ ह्रीं श्री रत्नगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धड़ि छन्द)

हे नाथ! 'प्रभास्वर' कहे आप, त्रेलोक्य प्रकाशी रहित पाप।
तव नाम मंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज।।721।।

ॐ ह्रीं श्री प्रभास्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पद्मगर्भ'! तुम हो अनन्त, निज किया गर्भ का पूर्ण अन्त।
तव नाम मंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज।।722।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'जगद्गर्भ'! जग में महान्, तुमने पाए थे तीन ज्ञान।
तव नाम मंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज।।724।।

ॐ ह्रीं श्री जगद्गर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे देव 'सुदर्शन'! कहे आप, तव दर्शन से कट जाँय पाप।
तव नाम मंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु! हम मुक्तिराज।।725।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'लक्ष्मीवान्!' त्रेलोक्य नाथ!, सब वन्दन करते जोड़ हाथ।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज।।726।।

ॐ ह्रीं श्री लक्ष्मीवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'त्रिदशाध्यक्ष' जग में महान, अतिशयकारी गुण के निधान।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज।।727।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिदशाध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'दृढ़ीयान'! दृढ़ हो अनूप, सुर-नर झुकते तव चरण भूप।
तव नाम मंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज।।728।।

ॐ ह्रीं श्री दृढ़ीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'इन' त्रिभुवन के रहे ईश, जग जीव झुकाते चरण शीश।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज।।729।।

ॐ ह्रीं श्री इनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ईशित' तुम हो जग में जिनेश, सब दोष निवारक हो विशेष।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु! हम मुक्तिराज।।730।।

ॐ ह्रीं श्री ईशित्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है श्रेष्ठ 'मनोहर' विशद रूप, अतिशयकारी जग में अनूप।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज।।731।।

ॐ ह्रीं श्री मनोहराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'मनोज्ञांग' हो सुभग रूप, सुख-शांति प्रदायक शांत रूप।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज।।732।।

ॐ ह्रीं श्री मनोज्ञांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'धीर' वीर! गुण के निधान, त्रिभुवन के ज्ञाता हो महान।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज।।733।।

ॐ ह्रीं श्री धीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गम्भीर शासन' तव है विशेष, न तुम सम कोई है जिनेश।
तव नाम मंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज।।734।।

ॐ ह्रीं श्री गम्भीरशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'धरमयूप'! जग में प्रधान, तुम गुण रत्नों के हो निधान।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥735॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मयूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'दयायाग'! सुखप्रद जिनेश, तुम नाश किए सब राग-द्वेष।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥736॥

ॐ ह्रीं श्री दयायागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'धरमनेमि'! जिनवर महान्, तुम धर्म धुरी जग में प्रधान।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥737॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनेमये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'मुनीश्वर' रहे आप, अविकारी नाशे सर्व पाप।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥738॥

ॐ ह्रीं श्री मुनीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'धर्मचक्रायुध'! धर्म रूप, इस से हो तुम प्रथकरूप।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥739॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मचक्रायुधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'देव'! परम गुण के निधान, तुम जगत पूज्य जग में महान।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥740॥

ॐ ह्रीं श्री देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पाइता छन्द)

जिन कहे 'कर्महा' ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥741॥

ॐ ह्रीं कर्मघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'धर्म घोषण' कहलाए, प्रभु धर्म के ईश कहाए॥
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥742॥

ॐ ह्रीं धर्मघोषणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको 'अमोघ वच' कहते, जो लीन स्वयं में रहते।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥743॥

ॐ ह्रीं अमोघवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अमोघाज्ञ' कहलाए, निज आतम ज्ञान जगाए।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥744॥

ॐ ह्रीं अमोघाज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'निर्मल' हैं अविकारी, प्रभु विशद ज्ञान के धारी।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥745॥

ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'अमोघ शासन' कहलाए, निज के शासक जिन गाए।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥746॥

ॐ ह्रीं अमोघशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'सुरूप' कहाए, अतिशय स्वरूपता पाए।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥747॥

ॐ ह्रीं सुरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुभग' कहे जगनामी, कहलाए अन्तर्यामी।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥748॥

ॐ ह्रीं सुभगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'त्यागी' कहलाए, जो त्याग पूर्णतः पाए।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥749॥

ॐ ह्रीं त्यागिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'समयज्ञ' रहे अविकारी, जो हैं अतिशय के धारी।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥750॥

ॐ ह्रीं समयज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'समाहित' गाये, तुममें यह विश्व समाए।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥751॥

ॐ ह्रीं समाहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुस्थित' आप कहाए, निज में स्थिरता पाए।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।752।।

ॐ ह्रीं सुस्थिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'स्वस्थ भाक्' कहलाए, निज के गुण निज में पाए।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।753।।

ॐ ह्रीं स्वस्थयभाजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'स्वस्थ' आप जगनामी, तुम बने मोक्ष पथगामी।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।754।।

ॐ ह्रीं स्वस्थ्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'नीरजस्क'! अविकारी, तुम बने श्रेष्ठ गुणकारी।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।755।।

ॐ ह्रीं नीरजस्काय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'निरुद्भव' माने, हम आए अतः गुण गाने।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।756।।

ॐ ह्रीं निरुद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'अलेप' हे स्वामी!, हे नाथ! मोक्ष पथगामी।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।757।।

ॐ ह्रीं अलेपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निष्कलंक' कहलाए, ना दोष कोई छू पाए।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।758।।

ॐ ह्रीं निष्कलंकात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'वीतराग' अविकारी, इस जग में मंगलकारी।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।759।।

ॐ ह्रीं वीतरागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कहे 'गतस्पृह' भाई, जन-जन के मोक्ष प्रदायी।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।760।।

ॐ ह्रीं गतस्पृहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

'वश्येन्द्रिय' भगवान, इन्द्री वश में कर लिए।
बनने आप समान, आए दर पे इसलिए।।761।।

ॐ ह्रीं श्री वश्येन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुए कर्म से मुक्त, 'विमुक्तात्मन्' हे प्रभो!।
गुणानन्त से युक्त, अनन्त चतुष्टय पा लिए।।762।।

ॐ ह्रीं श्री विमुक्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-द्वेष से हीन, 'निःसपत्न' कहलाए तुम।
किया मोह को क्षीण, निजानन्द में लीन हो।।763।।

ॐ ह्रीं श्री निःसपत्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविकारी भगवान, आप 'जितेन्द्रिय' हो गये।
जग में हुए महान, जीते इन्द्रिय के विषय।।764।।

ॐ ह्रीं श्री जितेन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म सभी निर्मूल, हे 'प्रशान्त'! तुमने किए।
हे जिनेन्द्र! अनुकूल, मोक्ष मार्ग मेरा करो।।765।।

ॐ ह्रीं श्री प्रशान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषियों के सरताज, प्रभु 'अनन्तधामर्षि' तुम।
करती सकल समाज, चरण कमल में वन्दना।।766।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तधामर्षये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के ईश, मंगलमय 'मंगल' परम।
चरणों में धर शीश, वन्दन करते भाव से।।767।।

ॐ ह्रीं श्री मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुए आप भगवान, 'मलहा' नाशी पाप के।
जग में हुए महान, कर्म मैल को धो प्रभु।।768।।

ॐ ह्रीं श्री मलघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कीन्हा पूर्ण विनाश, 'अनघ' आपने पाप का।

कीन्हा शिवपुर वास, चेतन शक्ती प्रकट कर।।769।।

ॐ ह्रीं श्री अनघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में उपमातीत, नाथ! 'अनीदृक्' आप हो।
रखता है जग प्रीत, श्रेष्ठ गुणों से आपके।।770।।

ॐ ह्रीं श्री अनीदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय 'उपमाभूत', नाथ! आपका नाम शुभ।
करते हैं आहूत, अतः हृदय में आपको।।771।।

ॐ ह्रीं श्री उपमाभूताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय हुए महान, 'दिष्ट' आप इस लोक में।
गुण अनन्त की खान, नित्य निरंजन श्रेष्ठतम।।772।।

ॐ ह्रीं श्री दिष्टये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा अपरम्पार, 'दैव' आपकी जगत में।
कर देते भव पार, शरणागत को शीघ्र ही।।773।।

ॐ ह्रीं श्री दैवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नभ में किया विहार, नाथ! 'अगोचर' आप हो।
महिमा का नहिं पार, कमल चरण तल सुर रचें।।774।।

ॐ ह्रीं श्री अगोचराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अमूर्त'! जिनराज, रूपादिक से शून्य तुम।
आन सम्हारो काज, राह दिखाओ नाथ! अब।।775।।

ॐ ह्रीं श्री अमूर्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में अपरम्पार, 'मूर्तिमान' तुम मूर्त हो।
पाया शुभ आधार, परमौदारिक देह का।।776।।

ॐ ह्रीं श्री मूर्तिमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे जगत में एक, 'एक' अनादी आप हो।
धारे रूप अनेक, जग में रहकर के स्वयं।।777।।

ॐ ह्रीं श्री एकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हैं गणनातीत, 'नैक' आपके गुण कई।
रखते चरणों प्रीत, गुण पाने प्रभु आपके।।778।।

ॐ ह्रीं श्री नैकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र तीर्थेश, 'नानेक तत्त्व दृष्टा' कहे।
धार दिगम्बर भेश, किए कर्म का नाश जिन।।779।।

ॐ ह्रीं श्री नानेक तत्त्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म तत्त्व के कोष, 'अध्यात्मगम्या' हो तुम्हीं।
जो होते निर्दोष, तव स्वरूप पावें वही।।780।।

ॐ ह्रीं श्री अध्यात्मगम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुखमा छन्द)

'अगम्यात्मा' प्रभु जी कहलाए, मिथ्या ज्ञानी जान न पाए।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।781।।

ॐ ह्रीं श्री अगम्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'योगविद्' अन्तर्यामी, मोक्ष मार्ग के प्रभु अनुगामी।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।782।।

ॐ ह्रीं श्री योगविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'योगिवंदित' कहलाए, मुक्ति वधु के स्वामी गाए।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।783।।

ॐ ह्रीं श्री योगिवंदिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वत्रग' हे जग के स्वामी!, वन्दनीय हो जग में नामी।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।784।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वत्रागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सदाभावी' कहलाए, नित्य रूपता प्रभु जी पाए।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।785।।

ॐ ह्रीं श्री सदाभाविने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'त्रिकालविषयार्थदृक्' गाए, त्रैकालिक वस्तू प्रगटाए।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।786।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालविषयार्थदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंकर' आप रहे सुखदाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।787।।
ॐ ह्रीं श्री शंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंवद' हो अतिशय सुखकारी, वन्दनीय हो मंगलकारी।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।788।।
ॐ ह्रीं श्री शंवदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दान्त' आप इन्द्रिय के जेता, मन मर्कट के रहे विजेता।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।789।।
ॐ ह्रीं श्री दांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दमी' इन्द्रियों को तुम दमते, अतः लोग चरणों में नमते।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।790।।
ॐ ह्रीं श्री दमिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षान्तिपरायण' क्षमा के धारी, क्षमा धारते हे अनगारी।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।791।।
ॐ ह्रीं श्री क्षान्तिपरायणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिप' आपको कहते प्राणी, जन-जन के हो तुम कल्याणी।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।792।।
ॐ ह्रीं श्री अधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमानंद' आपने पाया, निजानंद को तुमने ध्याया।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।793।।
ॐ ह्रीं श्री परमानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमात्मज्ञ' आप कहलाए, पर को निज सम आप बनाए।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।794।।
ॐ ह्रीं श्री परमात्मज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'परात्पर' हो अविकारी, श्रेष्ठ जगत में मंगलकारी।

नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।795।।
ॐ ह्रीं श्री परात्पराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजगद्वल्लभ' हो तुम स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।796।।
ॐ ह्रीं श्री त्रिजगद्वल्लभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'अभ्यर्च्य' पूज्यता पाए, सुर नर मुनि से पूज्य कहाए।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।797।।
ॐ ह्रीं श्री अभ्यर्च्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजगन्मंगलोदय' अविकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।798।।
ॐ ह्रीं श्री त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्री' स्वामी, पूज्य शतेन्द्रों से जग नामी।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।799।।
ॐ ह्रीं श्री त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिलोकाग्रशिखामणि' आप कहाए, शिवपुर नगरी धाम बनाए।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।800।।
ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकाग्रशिखामणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

वृहद् वृहस्पति आदि नाम सौ, श्री जिनेन्द्र के हैं पावन।
जग का मंगल करने वाले, कहे गये हैं मन भावन।।
सौ नामों के द्वारा श्री जिन, का यह किया विशद गुणगान।
अन्तिम यही भावना गाते, पाएँ हम भी पद निर्वाण।।8।।
ॐ ह्रीं वृहद वृहस्पत्यादिशत् नामेभ्य पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- श्री जिनवर के नाम का, करते हैं जो ध्यान।
सुख शांती सौभाग्य पा, पावें वे कल्याण।।

(पद्धडि छन्द)

जय जय हे करुण निधान!, जय विशद गुणों की रहे खान।
जय छियालिस गुण के आप ईश, शत इन्द्र झुकावें चरण शीश॥1॥
जय पर उपकारी हे जिनेश!, गुण जलधि आप जग में विशेष।
जय सम्यक् ज्ञानी परम इष्ट, जय सम्यक् चारित धर विशिष्ट॥2॥
जय विशद ज्ञान मण्डित विशाल, त्रय लोक विलोकी एक काल।
जय सत्य स्वरूपी ध्यान रूप, जय जय जिनवर चैतन्य रूप॥3॥
जय धर्म शिरोमणि जग ज्येष्ठ, जय जगतबन्धु हे जगत श्रेष्ठ!।
जय जय कुवादि तमहर अनूप, जय लक्ष्य-अलक्षी ज्ञान रूप॥4॥
जय तर्कागम प्रत्याभिज्ञान, हे गुणी शास्त्र पण्डित महान।
हे करुणा निधि! तुम जग प्रधान, तुम दिया जगत को धर्म ज्ञान॥5॥
जय जन्म जरामृति रहित ईश, शत इन्द्र नमत नित चरण शीश।
संसार तिमिर हर हो विशेष!, सुर नर से पूजित हे जिनेश!॥6॥
हे जगत पूज्य!हे जग महन्त!, हे जगती पति! सादी अनन्त।
हे दोष रहित! हे गणाधीश!, तव चरण नमें नित शताधीश॥7॥
तुम जग जीवों के कहे नाथ!, शुभ दिव्य देशना दिए साथ।
तुम चरणाम्बुज में 'विशद' शीश, हो बोधि मुझे भी हे मुनीश!॥8॥

(घत्ता छन्द)

हे शिव तियकंता, विमल महन्ता, ध्यावें संता भक्ति करें।
हम तव पद ध्याएँ , शीश झुकाएँ, पूज रचाएँ हर्ष करें॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री बृहद् वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानोदय छंद)

सहस्रनाम का यह विधान, जो भव्य जीव करवाते हैं।
भक्ती के फल से वे मानव, अक्षय निधि शुभ पाते हैं॥
अनुक्रम से संयम धारण कर, विशद ज्ञान प्रगटाते हैं।
यह संसार असार जानकर, मोक्ष महल को जाते हैं॥

॥इत्यादि आशीर्वादः॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्

नवम शतक पूजन

स्थापना

दोहा- त्रिकालदर्शि आदिक शतक, नामों का कर जाप।
पूजन आह्वानन किए, कट जाते हैं पाप॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

शम्भू छन्द

जलते हम जीवन उपवन को, वाणी जल से सजल करें।
मोह क्षोभ मय निज भावों को, श्रद्धा जल से धवल करें॥
भक्ति भाव का जल सिंचन कर, सादर शीश झुकाएँगे।
मुक्ती नहीं मिलेगी जब तक, गीत आपके गाएँगे॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

समता जल की शुभ्र घटाएँ, तृष्णा आंधी से उड़तीं।
नर जीवन की पावन घड़ियाँ, क्षण-क्षण कर सारी घटतीं॥
समता गुण का चंदन अर्पित, कर शीतलता पाएँगे।
मुक्ती नहीं मिलेगी जब तक, गीत आपके गाएँगे॥2॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः संसार ताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

लीन हुए पर पद में अब तक, निज पद का ना भान किया।
तन परिजन धन पर हैं सारे, तव दर्शन कर ज्ञान किया॥
अक्षत पुंज चढ़ाकर तव पद, निज निधि को प्रगटाएँगे।
मुक्ती नहीं मिलेगी जब तक, गीत आपके गाएँगे॥3॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन शासन के उपवन में जो, खिले सुमन का साज किया।
मधु पराग पाने को तुमने, जिन मुद्रा का ताज लिया॥
जिनवाणी के पुष्पों का रस, मधुकर बन कर पाएँगे।
मुक्ती नहीं मिलेगी जब तक, गीत आपके गाएँगे॥4॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा व्याधि से पीड़ित होकर, समन हेतु कई यत्न किए।
काल अनादी विषम रोग ने, भव में कई-कई कष्ट दिए॥
सद्गुण के नैवेद्य चढ़ाकर, व्याधी शीघ्र नशाएँगे॥
मुक्ती नहीं मिलेगी जब तक, गीत आपके गाएँगे॥5॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आलोकित कर जग जीवन यह, जगमग दीपक जले महान।
ज्ञान दीप प्रगटाने हेतू, प्रेरित करता आभावान॥
अनन्त चतुष्टय को पाकर के, ज्ञान की ज्योति जलाएँगे।
मुक्ती नहीं मिलेगी जब तक, गीत आपके गाएँगे॥6॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः महामोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् तप की अग्नि जलाकर, करना सारे कर्म दहन।
काल अनादी से जो पाई, निज चेतन में लगी तपन॥
दश धर्मों की धूप दशांगी, खेकर गंध उड़ाएँगे।
मुक्ती नहीं मिलेगी जब तक, गीत आपके गाएँगे॥7॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

वीतराग अविकारी मुद्रा, में खिलतीं कलियाँ पावन।
रत्नत्रय गुण के फल फलते, सरस मधुर अति मन भावन॥

सद्गुण के फल पाने को फल, पावन यहाँ चढ़ाएँगे।
मुक्ती नहीं मिलेगी जब तक, गीत आपके गाएँगे॥8॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

थाल सजाया अरमानों का, नयन कटोरी जल लाए।
निर्मल भावों की केसर ले, तन्दुल सद् गुण के पाए॥
चेतन गुण के पुष्प रंगाए, तन नैवेद्य बनाया है।
धूप बनाई अष्ट कर्म की, श्री फल शीश सजाया है॥
आठ अंग का अर्घ्य विशद शुभ, करके यहाँ चढ़ाएँगे।
मुक्ती नहीं मिलेगी जब तक, गीत आपके गाएँगे॥9॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
आशा ले पूजा करी, पाएँ भव से पार॥
॥शांतये शांतिधारा॥

दोहा- पुष्प बनाए जो यहाँ, उससे ही हे नाथ!।
पुष्पांजलि करते विशद, झुका चरण में माथ॥
॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

(अनुष्टुप)

हे 'त्रिकालदर्शि' तुम सब पदार्थ जानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते॥801॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालदर्शिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु 'लोकेश' आप, सर्व लोक जानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते॥802॥

ॐ ह्रीं श्री लोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोकधाता' आप हो, श्रेष्ठ व्रत धारते।

नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते॥803॥

ॐ ह्रीं श्री लोकधात्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दृढ़व्रत' हो लोक में, सर्व कर्म हानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते॥804॥

ॐ ह्रीं श्री दृढ़व्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वलोकातिग', लोग तुम्हें जानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते॥805॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वलोकातिगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूज्य' आप लोक में, सर्व कर्म हानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते॥806॥

ॐ ह्रीं श्री पूज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वलोकैकसारथी', कर रहे हम आरती।
दिव्य ध्वनि आपकी, पूज्यनीय भारती॥807॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वलोकैकसारथये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पुराण'! आपको ये सृष्टी पुकारती।
दिव्य ध्वनि आपकी, पूज्यनीय भारती॥808॥

ॐ ह्रीं श्री पुराणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरुष' नाम आत्मा, अनादि से धारती।
दिव्य ध्वनि आपकी, पूज्यनीय भारती॥809॥

ॐ ह्रीं श्री पुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूर्व' नाम आपका, ये जगती पुकारती।
दिव्य ध्वनि आपकी, पूज्यनीय भारती॥810॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृतपूर्वांगविस्तर' हो अंग पूर्ण धारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥811॥

ॐ ह्रीं श्री कृतपूर्वांगविस्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आदिदेव' आप हो, हे जिन धर्म धारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥812॥

ॐ ह्रीं श्री आदिदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुराणाद्य' आप हो, समता के धारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥813॥

ॐ ह्रीं श्री पुराणाद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरूदेव' आप रहे, हो कल्याणकारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥814॥

ॐ ह्रीं श्री पुरुदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिदेवता' की है, महिमा कुछ न्यारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥815॥

ॐ ह्रीं श्री अधिदेवतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगमुख्य' आप हो, युग के अवतारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥816॥

ॐ ह्रीं श्री युगमुख्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगज्येष्ठ' युग के, हो श्रेष्ठ धर्म धारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥817॥

ॐ ह्रीं श्री युगज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगादिस्थितिदेशक', हे देशना के धारी!।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥818॥

ॐ ह्रीं श्री युगादिस्थितिदेशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कल्याणवर्ण', जग में हैं कल्याणकारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥819॥

ॐ ह्रीं श्री कल्याणवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'कल्याण' करो, आये हैं पुजारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥820॥

ॐ ह्रीं श्री कल्याणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुष्टुप

नाम 'कल्य' आपको, जीव सभी जानते।
लोक पूज्य आपको, भव्य जीव मानते॥821॥

ॐ ह्रीं कल्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कल्याण लक्षण' आप गाए हैं।
करो कल्याण आप, शरण हम आए हैं॥822॥

ॐ ह्रीं कल्याणलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कल्याण प्रकृति' कहलाए हैं।
दर्शकर आपका जीव सौख्य पाए हैं॥823॥

ॐ ह्रीं कल्याणप्रकृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप 'कल्याण आतमा', आप सिद्ध हो।
तीन लोक में नाथ! आप ही प्रसिद्ध हो॥824॥

ॐ ह्रीं दीपप्रकल्याणात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'विकल्मश' श्रेष्ठ आपका नाम है।
भव्य जीव चरणों करते प्रणाम हैं॥825॥

ॐ ह्रीं विकल्मषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'विकलंक' आप, सर्व कर्म हानते।
भव्य जीव आपको, देव श्रेष्ठ मानते॥826॥

ॐ ह्रीं विकलंकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कलातीत' आपकी, महिमा अपार है।
नाथ! आपके सर्व गुण, का ना पार है॥827॥

ॐ ह्रीं कलातीताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कलिलघ्न' नाथ! आप कल्याणकारी।
तव पाद पद्म में, है वन्दना हमारी॥828॥

ॐ ह्रीं कलिलघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कलाधार' आप सब ही, कलाएँ जानते।
भव्य जीव आपको, जग ज्येष्ठ मानते॥829॥

ॐ ह्रीं कलाध्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देव देव' आपकी, कर रहे सब आरती।
दिव्य ध्वनी आपकी है पूजनीय भारती॥830॥

ॐ ह्रीं देवदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगन्नाथ!' आपकी है, महिमा कुछ न्यारी।
आपके द्वय चरणों है, वन्दना हमारी॥831॥

ॐ ह्रीं जगन्नाथ!ाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगद्बन्धु' सब, बन्धुओं के नाथ! हैं।
आपके सुपाद सब, झुका रहें माथ हैं॥832॥

ॐ ह्रीं जगद्बंध्वे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगद् विभु' आपकी, महिमा अपार है।
अर्चना कर आपकी, होता उपकार है॥833॥

ॐ ह्रीं जगद्विभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जग हितैशी' नाथ!, आपका शुभ नाम है।
आपके चरण द्वय, मेरा प्रणाम है॥834॥

ॐ ह्रीं जगद्धितैषिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

हे 'लोकज्ञ'! जगत के ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥835॥

ॐ ह्रीं श्री लोकज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सर्वग'! तुम जग हितकारी, व्याप्त लोक में हो अविकारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥836॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगदग्रज' हे अन्तर्यामी!, ज्येष्ठ लोक में हो तुम स्वामी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥837॥

ॐ ह्रीं श्री जगदग्रजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'चराचरगुरू' कहाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥838॥

ॐ ह्रीं श्री चराचरगुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गोप्य' आप गुप्ती के धारी, रक्षक हो तुम विस्मयकारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥839॥
ॐ ह्रीं श्री गोप्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गूढ़ात्मा' हे नाथ! कहाए, इन्द्रिय गोचर न हो पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥840॥
ॐ ह्रीं श्री गूढ़ात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गूढ़सुगोचर' तुम हो स्वामी, ज्ञानी जन हैं तव अनुगामी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥841॥
ॐ ह्रीं श्री गूढ़गोचराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सद्योजात' आप कहलाए, भेष दिगम्बर प्रभु जी पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥842॥
ॐ ह्रीं श्री सद्योजाताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रकाशात्मा'! जिनदेवा, सुर नर करें आपकी सेवा।
नाम मंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥843॥
ॐ ह्रीं श्री प्रकाशात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्वलज्ज्वलनसप्रभ' हे स्वामी!, कांतिमान हे अन्तर्यामी!।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥844॥
ॐ ह्रीं श्री ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'आदित्यवर्ण' कहलाए, सहस रश्मि सम कांती पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥845॥
ॐ ह्रीं श्री आदित्यवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'भर्माभ'! श्रेष्ठ छवि धारी, महिमा है इस जग से न्यारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥846॥
ॐ ह्रीं श्री भर्माभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुप्रभ' अतिशय शोभा पाते, सूर्य चन्द्रमा कई लजाते।

नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥847॥
ॐ ह्रीं श्री सुप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कनकप्रभ' तव दीप्ति निराली, तप्त स्वर्ण समकांती वाली।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥848॥
ॐ ह्रीं श्री कनकप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुवर्णवर्ण' तव महिमा न्यारी, दीप्तिमान हो जिन अविकारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥849॥
ॐ ह्रीं श्री सुवर्णवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'रुक्माभ'! स्वर्ण छविधारी, तीन लोक में मंगलकारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥850॥
ॐ ह्रीं श्री रुक्माभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूर्यकोटिसमप्रभ' तुम स्वामी, दयानिधी हे अन्तर्यामी!।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥851॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तपनीयनिभ' प्रभु जी कहलाए, तप्त स्वर्ण सम आभा पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥852॥
ॐ ह्रीं श्री तपनीयनिभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्च देह धर 'तुंग' कहाए, पद सर्वोच्च प्रभू जी पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥853॥
ॐ ह्रीं श्री तुंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बालार्काभा' यह जग जाने, उदित सूर्य सम कांति माने।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥854॥
ॐ ह्रीं श्री बालार्काभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनलप्रभ' हो अन्तर्यामी, निर्मल कांती है तव नामी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥855॥
ॐ ह्रीं श्री अनलप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'संध्याभ्रबभ्रू'! छवि धारी, है छवि सांझ के रवि सम
प य ा र ी ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥856॥
ॐ ह्रीं श्री संध्यायभ्रबभ्रवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'हेमाभ' आप कहलाए, स्वर्ण समान देह प्रभु पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥857॥
ॐ ह्रीं श्री हेमाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तप्ताचामीकरप्रभ' हे स्वामी!, हेम वर्ण धारी तुम नामी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥858॥
ॐ ह्रीं श्री तप्तचामीकरप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्टप्तकनकच्छाय' कहाए, महाँ दीप्ति धारी कहलाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥859॥
ॐ ह्रीं श्री निष्टप्तकनकच्छायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कनत्कांचनसन्निभ' देही, पाकर भी हो तुम वैदेही।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥860॥
ॐ ह्रीं श्री कनत्कांचनसन्निभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हिरण्य वर्ण' जिननाथ! निराले, स्वर्णिम श्री जिन कांती वाले।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥861॥
ॐ ह्रीं हिरण्यवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव आप 'स्वर्णाभ' कहाए, पावन स्वर्ण छवि को पाए।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥862॥
ॐ ह्रीं स्वर्णाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांतकुंभनिभप्रभ' हे स्वामी!, इस जग के हो अन्तर्यामी।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥863॥
ॐ ह्रीं शांतकुंभनिभप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम श्रेष्ठ 'द्युम्नाभ' कहाया, तुमने अतुल कांति को पाया।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥864॥

ॐ ह्रीं द्युम्नाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जातरूपाभ' आप जगनामी, बने आप मुक्ती पथ गामी।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥865॥
ॐ ह्रीं जातरूपाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तप्तजाम्बूनद द्युति' के धारी, जग जीवों के करुणाकारी।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥866॥
ॐ ह्रीं तप्तजांबूनदद्युतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुधोत कलधोत श्री' के स्वामी, इस जग में प्रभु आप अकामी।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥867॥
ॐ ह्रीं सुधौतकलधौतश्रिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रदीप्त'! सद् ज्ञान जगाए, तीन लोक में प्रभुता पाए।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥868॥
ॐ ह्रीं प्रदीप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हाटकधुति' हे नाथ! कहाए, महिमा सारा जग यह गाए।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥869॥
ॐ ह्रीं हाटकद्युतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शिष्टेष्ट'! आप हो ज्ञानी, तव वाणी जग की कल्याणी।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥870॥
ॐ ह्रीं शिष्टेष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्टिद' नाम आपका प्यारा, भवि जीवों का तारण हारा।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥871॥
ॐ ह्रीं पुष्टिदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्ट' आप हो मंगलकारी, जन-जन के प्रभु हो उपकारी।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥872॥
ॐ ह्रीं पुष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू आप 'स्पष्ट' कहाते, जग जीवों से पूजे जाते।

नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी।।873।।
ॐ ह्रीं स्पष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्पष्टाक्षर' तुम कहलाए, अक्षर ज्ञान आप से पाए।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी।।874।।
ॐ ह्रीं स्पष्टाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम आपका 'क्षम' शुभकारी, क्षमा आदि गुणधर अविकारी।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी।।875।।
ॐ ह्रीं क्षमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू आप 'शत्रुघ्न' कहाए, नहीं शत्रुता जग में पाए।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी।।876।।
ॐ ह्रीं शत्रुघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी 'अप्रतिघ' आप कहाए, जग से न्यारे प्रभुता पाए।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी।।877।।
ॐ ह्रीं अप्रतिघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अमोघ'! तुम जग के जेता, आप कहाए कर्म विजेता।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी।।878।।
ॐ ह्रीं अमोघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'प्रशस्ता' आप निराले, जन-जन का मन हरने वाले।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी।।879।।
ॐ ह्रीं प्रशस्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'शासिता' जग में गाए, शासन तव जयवंत कहाए।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी।।880।।
ॐ ह्रीं शासित्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

जानें जग के जीव सब, 'स्वभू' आपको देव!।
नाम मंत्र को आपके, वन्दू चरण सदैव।।881।।
ॐ ह्रीं श्री स्वभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांती के दाता कहे, 'शांतिनिष्ठ' जिनदेव।
नाम मंत्र को आपके, वन्दू चरण सदैव।।882।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब मुनियों में बड़े हो, 'मुनिज्येष्ठ' हे नाथ!।
नाम मंत्र को पूजते, चरण झुकाकर माथ।।883।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिव के कर्त्ता आप हो, 'शिवताति' हे नाथ!।
नाम मंत्र को पूजते चरण झुकाकर माथ।।884।।
ॐ ह्रीं श्री शिवतातये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवकारी इस लोक में, 'शिवप्रद' कहे जिनेश।।
उत्तम तप को धारकर, नाशे कर्म अशेष।।885।।
ॐ ह्रीं श्री शिव प्रदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'शांतिद' इस लोक में, कहलाए जिनदेव।
नाम मंत्र को आपके, वन्दू चरण सदैव।।886।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांती इस जग में करो, 'शांतिकृत' हे नाथ!।
नाम मंत्र को पूजते, चरण झुकाकर माथ।।887।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में शांती करो, 'शांती' दाता नाथ!।
नाम मंत्र को पूजते, चरण झुकाकर माथ।।888।।
ॐ ह्रीं श्री शांतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कांती के धारी अहा, 'कांतिमान' जिनदेव।
तव चरणों में विनत हो, वन्दू चरण सदैव।।889।।
ॐ ह्रीं श्री कांतिमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण मनोरथ कीजिए, 'कामितप्रद' भगवान।
नाम मंत्र को आपके, करें विशद गुणगान।।890।।
ॐ ह्रीं श्री कामितप्रदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेय हमें प्रभु दीजिए, 'श्रेयोनिधि' गुणखान।
तव चरणों में विनत हो, करें विशद गुणगान॥891॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयोनिधे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन धर्म के मूल हो, 'अधिष्ठान' जिनदेव।
नाम मंत्र को आपके, वन्दू चरण सदैव॥892॥

ॐ ह्रीं श्री अधिष्ठानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजित फिर भी लोक में, 'अप्रतिष्ठ' हे देव!।
नाम मंत्र को आपके, वन्दू चरण सदैव॥893॥

ॐ ह्रीं श्री अप्रतिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में हर समय, रहें 'प्रतिष्ठित' आप।
शिव सुख पाने के लिए, करें नाम का जाप॥894॥

ॐ ह्रीं श्री प्रतिष्ठिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहते निज स्वभाव में, 'सुस्थिर' आप सदैव।
नाम मंत्र को आपके, वन्दू चरण सदैव॥895॥

ॐ ह्रीं श्री सुस्थिराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थित रहते हर समय, 'स्थावर' जिनराज।
श्री जिनके शुभ नाम पर, यह जग करता नाज॥896॥

ॐ ह्रीं श्री स्थावराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल अटल अविकार हो, 'स्थाणु' हे देव!।
नाम मंत्र को आपके, वन्दू चरण सदैव॥897॥

ॐ ह्रीं श्री स्थाणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वलोक में पूज्य हो, 'प्रथीयान्' तव नाम।
'विशद' गुणों के कोष तुम, बारम्बार प्रणाम॥898॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव सागर में गमन से, 'प्रथित' मिले विश्राम।
नाम मंत्र तव पूजते, बारम्बार प्रणाम॥899॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में श्रेष्ठ है, 'पृथु' आपका धाम।
पूजा करते भाव से, बारम्बार प्रणाम॥900॥

ॐ ह्रीं श्री पृथवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

प्रभु त्रिकाल दर्शी आदिक शुभ, सौ नामों के धारी आप।
भाव सहित तव अर्चा करने, से कट जाते सारे पाप॥
सौ नामों के द्वारा श्री जिन, का यह किया विशद गुणगान।
अन्तिम यही भावना भाते, पाएँ हम भी पद निर्वाण॥9॥

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादि शत नामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

नेता मुक्ती मार्ग के, जग जन के प्रतिपाल।
त्रिकाल दर्श्यादिक शतक, की गाते जयमाल॥

तर्ज–हे दीनबन्धु.....

जयवन्त तीन लोक ईश दुःख विनाशी।
जयवन्त तीन काल माह ज्ञान विकाशी॥
जयवन्त हे जिनेन्द्र मुनीवृन्द सुभाषी।
जयवन्त भुवन सूर्य, सर्व लोक प्रकाशी॥1॥
जय कर्म भूमियाँ हैं भाई ढाई द्वीप में।
हैं एक सतक सत्तर मेरु समीप में॥
तीर्थेश जहाँ जन्म ले कर्मों को नाशते।
कैवल्य ज्ञान पाकर जग को प्रकाशते॥2॥
तीर्थेश धर्म तीर्थ की प्रभावना करें।
जय वीतराग धर्म की आराधना करें॥
जय इन्द्र सहस्रनाम से शुभ भक्तियाँ गाते।
जय जय की ध्वनि करके पद शीश झुकाते॥3॥
जय सहस्र आठ नयन धार दर्श जो करें।

ना तृप्ति पाय मुखावलोक आपका करें।।
हे नाथ! आत्म ज्योति जगे बोध वृत्त की।
सम्यक्त्व ज्ञान पूर्ण हो- हो जाय चरित भी।।4।।
हे नाथ!मेरी प्रार्थना पे ध्यान दीजिए।
अब अष्ट कर्म नाश का वरदान दीजिए।।
मम रोम-रोम में वसो जिनदेव! हमारे।
जब लो ना कार्य सिद्ध हो जाएँ प्रभु सारे।।5।।

(घत्ता छन्द)

जय जय जिन चन्दा, आनन्द कन्दा, पाप निकन्दा सुखकारी।
हे दुख के नाशी !, पाप विनाशी, सौख्य विकाशी गुणधारी।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्य: अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानोदय छंद)

सहस्रनाम का यह विधान, जो भव्य जीव करवाते हैं।
भक्ती के फल से वे मानव, अक्षय निधि शुभ पाते हैं।।
अनुक्रम से संयम धारण कर, विशद ज्ञान प्रगटाते हैं।
यह संसार असार जानकर, मोक्ष महल को जाते हैं।।

।।इत्यादि आशीर्वाद:।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्

दशम पूजन

स्थापना

दिग्वासादिक सहस आठ हैं, धर्मसाम्राज्यनायक तक अंत।
आह्वानन करते हम जिनका, हम भी पाएँ ज्ञान अनन्त।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तर शतनाममंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

गिरकर भाव शिला पर मृदुजल, अहं भाव खण्डित क र त ा ।
शील स्वभावी नीर सुनिर्मल, श्री जिन चरणों में धरता।।
जल मल पर का हरण करे है, जल की यह पावन पहिचान।
सहस्रनाम की महिमा अनुपम, करते हम जिनका गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्य: जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

है दुर्गन्ध कषायों की वह, नाश सुगन्धी फैलाए।
निज अस्तित्व मिटाकर चन्दन, सारे जग को महकाए।।
अग्नि जलाती है चन्दन वह, फिर भी सुरभित करे महान।
सहस्रनाम की महिमा अनुपम, करते हम जिनका गुणगान।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्य: संसार ताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

माया है दुर्गति की दात्री, खण्डित जीवन करे सदैव।
अक्षय प्रभु पाए वह जीवन, मुक्ती में जो रमता एव।।
बाह्य आवरण हरते निज की, शक्ती नाश करे ज्यो धान।
सहस्रनाम की महिमा अनुपम, करते हम जिनका गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्य: अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम वासना से वासित हो, जीव शक्ति निज करता क्षीण।
भक्ति समर्पण पुण्य प्रदायक, शक्ति जगाए पुष्प नवीन।।
काम वाण क्षय होवे क्षण में, करने से जिनका गुणगान।
सहस्रनाम की महिमा अनुपम, करते हम जिनका गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्य: कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह पगे षट्रस व्यंजन से, मन मोहित हो जाता है।
क्षुधा पूर्ति को खाए निश दिन, पूर्ण नहीं कर पाता है।।
चरु से अर्चन करके नशती, क्षुधा वेदना रही प्रधान।

सहस्रनाम की महिमा अनुपम, करते हम जिनका गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की छवि से प्रेरित हो, सम्यक् ज्ञान प्रकाश करे।
खाके तिमिर उगलता कालिख, निज का जो आभास करे॥
बाह्य तिमिर नश करे प्रकाशित, है दीपक का यह अवदान।
सहस्रनाम की महिमा अनुपम, करते हम जिनका गुणगान॥6॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः महामोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुख के कारण राग द्वेष हैं, मन को धूमिल करें विशेष।
धूप दशांगी धर्म जगाए, कर्म नाश हो जाएँ अशेष॥
कर भक्ती अष्टांग नमित हो, करें श्री जिन का गुणगान।
सहस्रनाम की महिमा अनुपम, करते हम जिनका गुणगान॥7॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव भ्रमण कराने वाले, भाव जीव के हैं दुखकार।
फल का नाम बड़ा इस जग में, महिमा जिसकी अपरम्पार॥
बीज वपन से तरुणाई तक, फल का करता जग सम्मान।
सहस्रनाम की महिमा अनुपम, करते हम जिनका गुणगान॥8॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल निर्मल चन्दन शीतलता, पुष्प सुगंधी करे प्रदान।
अक्षत अक्षय पददायक है, चरु से क्षुधा का होय निदान॥
दीपक ज्ञान प्रकाशी गाया, कर्म शमन कारी है धूप।
फल है मोक्ष महा फलदायी, अर्घ्य से पाएँ सुपद अनूप॥
जिन पूजा का फल है अनुपम्, जिससे मिलता पद निर्वाण।
सहस्रनाम की महिमा अनुपम, करते हम जिनका गुणगान॥9॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः अनर्घपद प्राप्तये

अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **विशद शांति धारा किए, पाएँ शांति अपार।**
शांती का दरिया बहे, श्री जिनेन्द्र के द्वार॥

॥ शांतये शांतिधारा॥

दोहा- **पुष्पांजलि करते यहाँ किए, पाएँ शांति अपार।**
अतः भाव से हम यहाँ, करते जिन गुणगान॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

दोहा- **दशम शतक के हम यहाँ चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।**
विशद भावना भा रहे, पाएँ सुपद अनर्घ्य॥

दशम कोष्ठोपरि....

'दिग्वासा' दिश ही अम्बर है, धारे ऐसी मुद्रा स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥901॥

ॐ ह्रीं श्री दिग्वाससे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वातरशन' तव नाम जिनेश, कहाते हो प्रभु अन्तर्यामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥902॥

ॐ ह्रीं श्री वातरशनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्ग्रंथेश' जिनेश अशेष, परिग्रह तुमने छोड़ा स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥903॥

ॐ ह्रीं श्री निर्ग्रंथेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'दिगम्बर' हो जिनराज, दिशाएँ अम्बर हैं तव नामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥904॥

ॐ ह्रीं श्री दिगम्बराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्किंचन' किन्चित परिग्रह से, हीन कहे हैं अन्तर्यामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥905॥

ॐ ह्रीं श्री निष्किंचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निराशंस' इच्छा के त्यागी, कहलाए हैं मेरे स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी।।906।।

ॐ ह्रीं श्री निराशंसाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानचक्षु' हैं केवल ज्ञानी, आप हुए हो शिवपुर गामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी।।907।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानचक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अमोमुह' आप कहाए, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी।।908।।

ॐ ह्रीं श्री अमोमुहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनन्तौज' तुम तेज पुंज के, धारी हो हे जिनवर स्वामी!।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी।।910।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतौजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानाब्धि' हे ज्ञान सरोवर!, आप कहाए अन्तर्यामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी।।911।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानाब्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'शीलसागर' हे स्वामी! आप हुए हो शील के स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी।।912।।

ॐ ह्रीं श्री शीलसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तेजोमय' शुभ तेज पुंज हे!, अतिशय तेज रूप धर नामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी।।913।।

ॐ ह्रीं श्री तेजोमयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमितज्योत' हे ज्योति स्वरूपी!, पावन केवल ज्ञान के स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी।।914।।

ॐ ह्रीं श्री अमितज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्योतिर्मूर्ति' ज्योर्तिमय अनुपम, मंगलमय पावन हे स्वामी!
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी।।915।।

ॐ ह्रीं श्री ज्योतिर्मूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'तमोपह' आप कहाए, मोहारि के नाशक ज्ञानी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी।।916।।

ॐ ह्रीं श्री तमोपहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'जगच्चूड़ामणि' अनुपम, तीन लोक में अतिशय नामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी।।917।।

ॐ ह्रीं श्री जगच्चूड़ामणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दीप्ति' आप दैदीप्यात्म हो, अतिशय प्रभु हे अन्तर्यामी!।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी।।918।।

ॐ ह्रीं श्री दीप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शंवान्'! सौख्य शांतीमय, पावन हो समता मय स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी।।919।।

ॐ ह्रीं श्री शंवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विघ्नविनायक' आप प्रभू हो, इस जग में विघ्नों के नाशी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी।।920।।

ॐ ह्रीं श्री विघ्नविनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

प्रभु 'कलिघ्न' आप कहलाए, सब विघ्नों को दूर भगाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।921।।

ॐ ह्रीं श्री कलिघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कर्मशत्रुघ्न' नाम के धारी, चउ कर्मों के नाशनकारी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।922।।

ॐ ह्रीं श्री कर्मशत्रुघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोकालोकप्रकाशक' ज्ञानी, वाणी तव जग की कल्याणी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।923।।

ॐ ह्रीं श्री लोकालोकप्रकाशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'अनिद्रालू' जिन स्वामी, मोहक्षयी मुक्ती पथगामी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।924।।

ॐ ह्रीं श्री अनिद्रालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'अतन्द्रालू' कहलाए, आलस तंद्रा पर जय पाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥925॥

ॐ ह्रीं श्री अतंद्रालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जागरूक' तुम जाग्रत रहते, हर उपसर्ग परीषह सहते।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥926॥

ॐ ह्रीं श्री जागरूकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'प्रमामय' ज्ञान के धारी, गुण अनन्त के हो अधिकारी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥927॥

ॐ ह्रीं श्री प्रमामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लक्ष्मीपति' हे जिनवर स्वामी, अनन्त चतुष्टय पाये नामी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥928॥

ॐ ह्रीं श्री लक्ष्मीपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगज्ज्योति' हो मंगलकारी, अतिशय ज्ञान ज्योति के धारी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥929॥

ॐ ह्रीं श्री जगज्ज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मराज' है नाम तुम्हारा, भवि जीवों को तारण हारा।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥930॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मराजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रजाहित' करने वाले, जग जीवों के हो रखवाले।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥931॥

ॐ ह्रीं श्री प्रजाहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'मुमुक्षु' भी कहलाए, मोक्ष की इच्छा भी न पाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥932॥

ॐ ह्रीं श्री मुमुक्षवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बन्धमोक्षज्ञ' प्रभू कहलाए, बन्ध मोक्ष की विधि बतलाए।

नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥933॥

ॐ ह्रीं श्री बंधमोक्षज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'जिताक्ष'! इन्द्रिय मन जेता, मोहादिक वसु कर्म विजेता।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥934॥

ॐ ह्रीं श्री जिताक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितमन्मथ' हे नाथ! कहाए, काम शत्रु को मार भगाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥935॥

ॐ ह्रीं श्री जितमन्मथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रशान्तरसशैलूष' स्वामी!, शांति मार्ग के हे अनुगामी!।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥936॥

ॐ ह्रीं श्री प्रशांतरसशैलूषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भव्यपेटकनायक' तुम स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी!।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥937॥

ॐ ह्रीं श्री भव्यपेटकनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'मूलकर्त्ता' कहलाए, धर्म प्रवर्तक आप कहाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥938॥

ॐ ह्रीं श्री मूलकर्त्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अखिलज्योति' तुमने प्रगटाई, सुनिधि ज्ञान की तुमने पाई।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥939॥

ॐ ह्रीं श्री अखिलज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'मलघ्न'! मल के हो नाशी, धवल अमल आतम के वासी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥940॥

ॐ ह्रीं श्री मलघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

प्रभू 'मूल सुकारण' गाए, इस जग में पूज्य कहाए।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी॥941॥

ॐ ह्रीं मूलकारणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में प्रभु 'आप्त' कहाते, जग जन से पूजे जाते।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी।।942।।

ॐ ह्रीं आप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वागीश्वर'! तव वाणी, है जन-जन की कल्याणी।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी।।943।।

ॐ ह्रीं वागीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'श्रेय'! ज्ञान के धारी, तुम हो श्रेयस शिवकारी।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी।।944।।

ॐ ह्रीं श्रेयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'श्रेयसोक्त' कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी।।945।।

ॐ ह्रीं श्रायसोक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'निरुक्त वाक्'! जगनामी, तुम जन-जन के कल्याणी।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी।।946।।

ॐ ह्रीं निरुक्तवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'प्रवक्ता' गाए, जो दिव्य ध्वनि सुनाए।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी।।947।।

ॐ ह्रीं प्रवक्त्रो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वचसामिश' हैं ज्ञानी, जो वीतराग विज्ञानी।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी।।948।।

ॐ ह्रीं वचसामीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'मारजित' गाए, जो मोक्ष मार्ग दर्शाए।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी।।949।।

ॐ ह्रीं मारजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विश्वभाववित्'! ज्ञानी, तुम जग जन के कल्याणी।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी।।950।।

ॐ ह्रीं विश्वभाववित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सुतनु'! श्रेष्ठ तनधारी, व्याधी के नाशन हारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।951।।

ॐ ह्रीं श्री सुतनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'तनुनिर्मुक्त' कहाए, इस भव से मुक्ती पाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।952।।

ॐ ह्रीं श्री तनुनिर्मुक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुगत' आप हो स्वामी, हो मुक्ती के अनुगामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।953।।

ॐ ह्रीं श्री सुगताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हतदुर्नय' आप कहाए, नय मिथ्या सभी नशाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।954।।

ॐ ह्रीं श्री हतदुर्नयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'श्रीश' आप जिन स्वामी, श्री पति हो अन्तर्यामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।955।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीश्रितपादाब्ज' कहाते, सुर चरण आपके ध्याते।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।956।।

ॐ ह्रीं श्री श्रितपादाब्जाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वीतभी'! आप निराले, प्रभु अभय दिलाने वाले।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।957।।

ॐ ह्रीं श्री वीतभिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अभयंकर'! हितकारी, प्रभु जन-जन के उपकारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।958।।

ॐ ह्रीं श्री अभयंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उत्सन्नदोष' तुम स्वामी, बन गये मोक्ष पथ गामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।959।।

ॐ ह्रीं श्री उत्सन्नदोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्विघ्न' कहे अविकारी, प्रभु आतम ब्रह्म विहारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥960॥

ॐ ह्रीं श्री निर्विघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'निश्चल'! जिन अविकारी, प्रभु आतम ब्रह्म विहारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें॥961॥

ॐ ह्रीं श्री निश्चलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'लोकसुवत्सल' ज्ञानी, हे वीतराग विज्ञानी!।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें॥962॥

ॐ ह्रीं श्री लोकवत्सलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकोत्तर' अविनाशी, हे लोक शिखर के वासी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें॥963॥

ॐ ह्रीं श्री लोकोत्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकपति' जिन स्वामी, हे शिवपुर के पथगामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें॥964॥

ॐ ह्रीं श्री लोकपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकचक्षु' कहलाए, मुक्ती का मार्ग दिखाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें॥965॥

ॐ ह्रीं श्री लोकचक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'अपारधी' स्वामी, धी है तव अतिशय नामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें॥966॥

ॐ ह्रीं श्री अपारधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु रहे 'धीरधी' ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥967॥

ॐ ह्रीं श्री धीरधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'बुद्धसन्मार्ग'! प्रदाता, हे त्रिभुवन के सुखदाता!।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें॥968॥

ॐ ह्रीं श्री बुद्धसन्मार्गाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शुद्ध' बुद्ध अविनाशी, हो निज स्वभाव के वासी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें॥969॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

सत्य वचन धारी प्रभो!, 'सत्य सुनृत पूत वाक्'।
नाम मंत्र ध्याएँ विशद, पाने कर्म विपाक॥970॥

ॐ ह्रीं श्री सत्यसूनृतवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होके 'प्रज्ञापारमित' चरम बुद्धि को प्राप्त।
नाम मंत्र ध्याएं विशद, बनें श्रेष्ठ हो आप्त॥971॥

ॐ ह्रीं श्री प्रज्ञापारमिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर गण करते वन्दना, 'प्राज्ञ' कहाए नाथ!।
प्रज्ञा पाने के लिए, चरण झुकाएँ माथ॥972॥

ॐ ह्रीं श्री प्राज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वात्म निरत रहते सदा, 'यति' हे! विषय विहीन।
ध्यायें तव हम नाम को, रहते निज में लीन॥973॥

ॐ ह्रीं श्री यतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीते इन्द्रियों के विषय, 'नियमितेन्द्रिय' हे देव!।
मन वच तन तिय योग से, ध्याएँ तुम्हें सदैव॥974॥

ॐ ह्रीं श्री नियमितेन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर यति से पूज्य हो, हे 'भदंत' यतिराज!।
नाम मंत्र ध्याते अहा, तुम पर जग को नाज॥975॥

ॐ ह्रीं श्री भदंताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ भद्रता धारते, रहे 'भद्रकृत' आप।
तव पद पाने के लिए, करें नाम तव जाप॥976॥

ॐ ह्रीं श्री भद्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है प्रसिद्ध इस लोक में, 'भद्र' आपका नाम।
नाम मंत्र ध्याते सदा, शत्-शत् करें प्रणाम॥977॥

ॐ ह्रीं श्री भद्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाञ्छित फलदेते सदा, 'कल्पवृक्ष' भगवान।
ध्याते हम तव नाम को, करें विशद गुणगान॥978॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पवृक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देते हैं वरदान शुभ, 'वरप्रद' कहे जिनेश।
तव पद पाने के लिए, ध्याते तुम्हें विशेष॥979॥

ॐ ह्रीं श्री वरप्रदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के नाशी प्रभो!, 'समुन्मूलिकर्मारि'।
ध्याते हैं हम आपको, करके श्रेष्ठ विचार॥980॥

ॐ ह्रीं श्री समुन्मूलिकर्मारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कर्मकाष्ठाशुशुक्षणी', किए कर्म का नाश।
शिव पद के धारी बने, करके ज्ञान प्रकाश॥981॥

ॐ ह्रीं श्री कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्मों में निपुण तुम, हे 'कर्मण्य'! महान्।
सहस्र नाम का भाव से, करते हम गुणगान॥982॥

ॐ ह्रीं श्री कर्मण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कार्यों में दक्ष हो, 'कर्मठ' आप जिनेन्द्र!।
सहस्र नाम के रूप में, पूजें तुम्हें शतेन्द्र॥983॥

ॐ ह्रीं श्री कर्मठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व सौख्य दाता कहे, 'प्रांशु' पाया नाम।
नाम मंत्र का ध्यान कर, करते सभी प्रणाम॥984॥

ॐ ह्रीं श्री प्रांशवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हेयादेयवीचक्षणः' प्रभो!, पाए हिताहित ज्ञान।
विशद ध्यान करते सभी, जग में रहे प्रधान॥985॥

ॐ ह्रीं श्री हेयादेयविचक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अनन्तशक्ति'! तुम्हीं, पाए शक्ति विशेष।
ध्याते हैं हम भाव से, तुमको हे तीर्थेश!॥986॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तशक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप स्वयंभू श्रेष्ठतम्, हे 'अच्छेद्य'! प्रधान।
तुमको ध्याते हम अहा, वीतराग विज्ञान॥987॥

ॐ ह्रीं श्री अच्छेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता तीनों लोक में, 'त्रिपुरारि' हे नाथ!।
करते तीनों योग से, नाम मंत्र का जाप॥988॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिपुरारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन नेत्रधारी रहे, प्रभू 'त्रिलोचन' आप।
विशद ज्ञान को प्राप्त कर, नाश किए सब पाप॥989॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन ज्ञान धरी हुए, हे 'त्रिनेत्र' भगवान!।
तुमको ध्याते हम अहा, पाएँ केवल ज्ञान॥990।

ॐ ह्रीं श्री त्रिनेत्रय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।,

(तर्ज-भक्तामर गीता)

'त्रयंबक' आप कहाते हो, जग में पूजे जाते हो।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं॥991॥

ॐ ह्रीं त्रयंबकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रयक्ष' आप कहलाते हैं, जो सन्मार्ग दिखाते हैं।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं॥992॥

ॐ ह्रीं त्रयक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'केवलज्ञानवीक्षण' गाये, जगत पूज्यता जो पाए।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं॥993॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानवीक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'समंतभद्र' शुभ नाम रहा, जग में तुम सा कौन अहा।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं॥994॥

ॐ ह्रीं समंतभद्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांतारि' जग पूज्य कहे, तीन लोक में श्रेष्ठ रहे।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।995।।

ॐ ह्रीं शांतारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्माचार्य' हो आप अहा, नाम आपका पूज्य रहा।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।996।।

ॐ ह्रीं धर्माचार्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'दयानिधि' हो स्वामी, इस जग के अन्तर्यामी।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।997।।

ॐ ह्रीं दयानिध्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूक्ष्मदर्शी' आप कहे, सूक्ष्म ज्ञान के नाथ! रहे।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।998।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मदर्शिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'कृपालू' आप रहे, अपने सारे कर्म दहे।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।999।।

ॐ ह्रीं कृपालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितानंग' तुम हो स्वामी, भविजन के अन्तर्यामी।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।1000।।

ॐ ह्रीं जितानंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्म देशक' तुम हो ज्ञानी, जन-जन के हो कल्याणी।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।1001।।

ॐ ह्रीं धर्मदेशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुभंयु' आप कहे जाते, जीव आपके गुण गाते।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।1002।।

ॐ ह्रीं शुभंयवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सुखसादभूत' ज्ञानी, आप कहे क्षायिक दानी।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।1003।।

ॐ ह्रीं सुखसाद्भूताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्यराशि' तव नाम रहा, विशद पुण्य के कोष अहा।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।1004।।

ॐ ह्रीं पुण्यराशये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'अनामय' आप प्रभो!, विषय व्याधि से रहित विभो!।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।1005।।

ॐ ह्रीं अनामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मपाल' हो तुम आले, सर्व जहाँ के रखवाले।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।1006।।

ॐ ह्रीं धर्मपालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगत पाल' कहलाते हैं, जगत पूज्यता पाते हैं।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।1007।।

ॐ ह्रीं जगत्पालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्म साम्राज्य नायक' गाये, महिमा कोई ना कह पाए।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।1008।।

ॐ ह्रीं धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

'दिग्वासादिक' एक सौ, आठ नाम के नाथ!।
अर्चा करते आपकी, जिन नामों के साथ।।
पूजा करके भाव से, गाते हैं गुण गान।
'विशद' भावना भा रहे, मिले शीघ्र निर्वाण।।

ॐ ह्रीं दिग्वासादिअष्टोत्तरशतनामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा/दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य-ॐ ह्रीं अष्टोत्तर सहस्रनामांकित श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

(पद्धरि छन्द)

जय जय तीर्थंकर जग प्रधान, जय जय जिन गुण महिमा निधान।
अतिशय पाए केवल्य ज्ञान, है समवशरण रचना महान।।1।।
भू से द्वादश योजन प्रधान, शुभ नीलमणी सम शोभमान।
शुभ समवशरण है निराधार, जो धनुष उच्च्य है पंच हजार।।2।।
शुभ बीस सहस सोपान जान, जो मण्डप भू तक रहे मान।
हैं समवशरण में कोट चार, शुभ पाँच वेदियाँ हैं अपार।।3।।
इन नव के मधि शुभ आठ-आठ, मन मोहक जिनके रहे ठाठ।
फिर शिला अन्त में कोट जान, जो रत्न सुनिर्मित हैं महान।।4।।
शुभ चहुँ दिश तोरण द्वार होय, अरु चहुँ दिश मानस्तंभ सोय।
हो मान गलित जिन दर्श पाय, जिनवर की महिमा जो दिखाय।।5।।
घंटा चामर ध्वज शोभमान, जिन बिम्ब स्वर्णसम हैं महान।
सिर क्षत्र शोभते त्रय अनूप, जिनवर दर्शाते निज स्वरूप।।6।।
हैं चार सरोवर दिशा चार, जल से पूरित जो हैं अपार।
है पुष्प वाटिका फिर विशेष, ऐसा कहते हैं श्री जिनेश।।7।।
फिर प्रथम कोट दीखे महान, शुभ दिव्य शालाएँ दिव्य मान।
आगे फिर द्वितिय कोट आय, जिसके आगे वन भूमि पाय।।8।।
फिर वेदी सुन्दर है प्रधान, आगे ध्वज पंक्ती शोभमान।
आगे तृतिय फिर कोट जान, वेदी सुकल्पतरु भू महान्।।9।।
फिर भवन पंक्ति स्तूप वान, फिर तुरिय कोट है शोभमान।
मण्डप भू द्वादश सभावान, जिसमें मुनि इन्द्रादिक प्रधान।।10।।
तदनन्तर वेदी पीठ जान, वैडूर्यमणी की प्रथम मान।
सोलह सोलह सोपान दार, सिर धर्म चक्र सुर लिए धार।।11।।
फिर ऊपर द्वितिय पीठ जान, तहँ अष्ट ध्वजाएँ दिव्यमान।
नव निधियाँ पूजन द्रव्य होय, धूपायन मंगल द्रव्य सोय।।12।।
फिर तृतिय पीठ है रत्नवान, शुभ धूप गंध युत हैं महान।
है गंध कुटी शुभ कमल दार, जिसपे जिन होते निराधार।।13।।
शुभ समवशरण रचना अपार, प्रभु की महिमा का नहीं पार।
जिन की ध्वनि खिरती तीन वार, आनन्द हो चारों दिश अपार।।14।।
है समवशरण जग में महान, मुश्किल जिसका करना बखान।

इन्द्रादिक मिलकर शीश नाएँ, प्रभु दर्शन से सब दुःख जाएँ।।15।।
प्रभु की गणधर पूजा रचायें, महिमा भक्ती से श्रेष्ठ गायें।
ता थेइ थेइ थेइ थेइ करें ध्यान, टम टम टम टम टंकार तान।।16।।
घननं घननं घन घंट बाज, द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम मिरदंग साज।
छम-छम छम-छम घुंघरू बजाय, अति भगति भाव वन्दन रचाय।।17।।
ऋषियों से पूजित ऋषभनाथ, जय रागद्वेष जित अजितनाथ।
भव भय दुख हर संभव सु नाथ, जय अभिनंदन त्रैलोक्यनाथ।।18।।
जय सुमति-सुमति कारक जिनंद, जय पद्म सुरासुर वंद्य-वंद्य।
जय सुन्दर तन धारी सु-पास, जय चन्द्रनाथ तम करत नाश।।19।।
जय श्री सुखदायक पुष्पदंत, जय शीतल कर सब व्याधि अंत।
जय श्रेयनाथ भव उदधितार, जय वासुपूज्य तन दिव्य धार।।20।।
जय विमलनाथ प्रभु पद्मवास, जय जय अनंत जिन कर्म नाश।
जय धर्म सुजिन के जीव दास, जय शांति शांति चहुँ दिश विकास।।21।।
जय कुन्थु-कुन्थु करुणा निधान, जय अर जिन पद सब धरें ध्यान।
जय मल्लिनाथ जिन सृष्टि पाल, जय मुनिसुव्रत गुण रत्नमाल।।22।।
जय नमि इन्द्रों से वंद्य-वंद्य, जय नेमिनाथ आनंद कन्द।
जय पारस संयम शीलवान, जय वर्द्धमान श्री वर्द्धमान।।23।।
कल्याणक पाते प्रभु महान, जिन प्राप्त करें केवल्य ज्ञान।
तीर्थेश रहे गुण के निधान, जो तीन लोक में हैं प्रधान।।24।।
जिनवर के गाए सहस नाम, शत इन्द्र करें जिन पद प्रणाम।
है 'विशद' कल्प द्रुम ये विधान, जो है अनेक गुण का निधान।।25।।

घत्तानन्द

जय-जय तीर्थंकर, त्रिभुवन हितकर, धर्मसुधाकर, जैन धरम्।
भव वारिधि तारं, शिवसुखकारं, मनवांछितफल, पूरकरं।।26।।

ॐ ह्रीं श्री समवशरण-महिमामण्डितेभ्यः गणधर-साधुगण सेवितेभ्यः अनन्तचतुष्टयस्वामिन्यः श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कवित्त छन्द

तीर्थंकर चौबीस लोक में, करते हैं जग सौख्य प्रदान।
जिनके समवशरण की पूजा, सारे जग में रही महान॥
अष्ट द्रव्य से जिन की पूजा, करते हैं जो मंगल कार।
विशद ज्ञान के धारी हों वे, हो जाते इस भव से पार॥

शांतये शांतिधारा दिव्यपुष्पाञ्जलिः।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं

सहस्रनाम चूलिका

चौपाई

विद्वानों से संचित देव, सहस आठ हैं नाम सुएव।
जो इनका करता है ध्यान, उनकी बुद्धी बढ़े महान॥1॥
विद्वत वर्णन किए विशेष, बचनागोचर आप जिनेश।
स्तुति करें जो भी सस्नेह, शुभ फल पाएँ निःसन्देह॥2॥
अतः आप हो बन्धु महान, जगत वैद्य हो आप प्रधान।
इस जग के रक्षक हे नाथ! जगत हितैषी भी हो साथ॥3॥
जगत प्रकाशक हे जिन एक, दर्श ज्ञान उपयोग अनेक।
दर्शज्ञान चारितत्रय रूप, अनन्त चतुष्टय चार स्वरूप॥4॥
प्रभो! पञ्च परमेष्ठि स्वरूप, पञ्च कल्याण नायक पनरूप।
जीवादिक छह द्रव्यों वान, सप्त नयों युत सप्त महान॥5॥
सम्यक्त्वादि आठ गुण रूप, नव लब्धी युत नौ स्वरूप।
महावलादि दश पर्यायवान, रक्षा करो, आप भगवान॥6॥
सहस्र आठ शुभ नाम की माल, से गाते प्रभु की जयमाल।
हम पर कृपा करो हे नाथ!, शिवपथ में प्रभु देना साथ॥7॥
जिनवर का जो भक्त महान, स्तुति करता है गुणगान।
पावन स्तोत्र का करके ध्यान, सब प्रकार से हो कल्याण॥8॥
इन्द्रों के वैभव का लोग, पाने का चाहें संयोग।
पुण्य बढ़ाना चाहो आप, करो स्तोत्र पाठ या जाप॥9॥
जग ये रहा चराचरवान, इन्द्र ने प्रभु का कर गुणगान।
करने प्रभु के तीर्थ विहार, निम्न प्रार्थना की शुभकार॥10॥
करने शुभ गुण का गुणगान, स्तुति करें भव्य गुणगान।
हो स्तुत्व पुरुषारथवान, स्तुति का फल मोक्ष निधान॥11॥